16 अक्टूबर 2024
बुधवार

केशव टाइम्स
डिजिटल संस्करण

आपकी आवाज

शौचालय टैंक का स्लैब टूटने से दो भाइयों समेत तीन लोगों की मौत

2

चुनाव आयोग ने की दो राज्यों में विधानसभा चुनाव की घोषणा, राजनीतिक हलचल हुई तेज

महाराष्ट्र में एक तो झारखंड में दो चरणों में होगा मतदान, 23 नवंबर को आएंगे नतीजे

- 2024 में होने वाले चुनाव 2019 में हुए चुनाव की तुलना में एक माह पहले हो रहे हैं
- बिहार की रामगढ़, तराई, इमामगंज और बेलागंज सीट पर होगा विधानसभा उपचुनाव

दो राज्यों में बजा चुनावी बिगुल

झारखंड (सीट 88, बहुमत 41)	पहला चरण	दूसरा चरण
अधिसूचना	18 अक्तूबर	22 अक्तूबर
नामांकन	25 अक्तूबर	29 अक्तूबर
नामांकन की जांच	28 अक्तूबर	30 अक्तूबर
नाम वापसी	30 अक्तूबर	01 नवंबर
मतदान	13 नवंबर	20 नवंबर

महाराष्ट्र (सीट 288, बहुमत 145)	तारीख
अधिसूचना	22 अक्तूबर
नामांकन	29 अक्तूबर
नामांकन की जांच	30 अक्तूबर
नाम वापसी	04 नवंबर
मतदान	20 नवंबर

नतीजे: 23 नवंबर

एजेंसी/नई दिल्ली

चुनाव आयोग ने महाराष्ट्र व झारखंड में चुनाव की घोषणा कर दी है। महाराष्ट्र में 20 नवंबर को एक चरण में मतदान होगा। वहीं झारखंड में 13 नवंबर और 20 नवंबर को दो चरणों में मतदान होगा। दोनों ही राज्यों के चुनाव परिणाम का ऐलान 23 नवंबर को होगा। महाराष्ट्र में एक चरण में विधानसभा चुनाव होने के एलान पर कांग्रेस नेता इमरान प्रतापगढ़ी ने कहा कि राज्य सरकार को पर्याप्त समय दिया गया है कि वह अपने सारे मुद्दों को सुलझा लें। महाविकास अघाड़ी भी पूरी तरह से चुनाव के लिए तैयार है और भाजपा को भी पता है कि उन्हें महाराष्ट्र में कुछ नहीं मिलने वाला और महा विकास अघाड़ी की पूर्ण बहुमत से सरकार बनेगी। वहीं एनसीपी एसपी नेता अनिल देशमुख ने कहा कि महाविकास अघाड़ी चुनाव के लिए तैयार है। सीटों के बंटवारे का जल्द एलान कर दिया जाएगा। हम विधानसभा चुनाव में जीत दर्ज करेंगे। चुनाव आयोग के मतदान की तारीखों का एलान करने पर झारखंड कांग्रेस के नेता राजेश ठाकुर ने कहा कि 2024 में होने वाले चुनाव 2019 में हुए चुनाव की तुलना में एक माह पहले हो रहे हैं लेकिन हम पूरी तरह से तैयार हैं। हमें विश्वास है कि अधिक से अधिक संख्या में लोग अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे। लोगों में चुनाव को लेकर उत्साह है और मतदान प्रतिशत में भी इजाफा होगा। झारखंड कांग्रेस के नेता केशव महतो ने कहा कि 'हम चुनाव आयोग द्वारा घोषित तारीखों का स्वागत करते हैं। हम तैयार हैं और झारखंड के लोग मन बना चुके हैं कि वे फिर से गठबंधन सरकार को चुनेंगे।

केरल की वायनाड व महाराष्ट्र की नांदेड़ सीट पर होगा लोकसभा चुनाव

चुनाव आयोग ने दो लोकसभा क्षेत्र में उपचुनाव कराने की भी घोषणा की है। उनमें केरल की वायनाड लोकसभा सीट और महाराष्ट्र की नांदेड़ सीट शामिल हैं। इसके साथ ही चुनाव आयोग ने विधानसभा सीटों पर उपचुनाव कराने का ऐलान किया है। उनमें असम की धोलाई, सिडली, बोनगाईगांव, बेहाली और सामागुरी शामिल हैं। वहीं बिहार की रामगढ़, तराई, इमामगंज और बेलागंज सीट पर उपचुनाव होने हैं। छत्तीसगढ़ की रायपुर सिटी साउथ सीट पर, गुजरात की वाव सीट पर, कर्नाटक की शिगांव, संदूर और चन्नापाटना सीट शामिल हैं। केरल की पलक्कड़ और चेलाक्कारा सीट पर उपचुनाव होने हैं। मध्य प्रदेश की बुधनी और विजयपुर, मेघालय की गामबेगरे, पंजाब की गिद्दरबाहा, डेरा बाबा नानक, बरनाला और छब्बेवाल सीट पर उपचुनाव होने हैं। राजस्थान की चौरासी, खिंवसर, दौसा, झुनझुनु, देवली उनियारा, सालंबर और रामगढ़ सीटों, सिक्किम की सोरेंग चकुंग, नामची सिंगिथांग, उत्तर प्रदेश की मीरापुर, कुंदरकी, गाजियाबाद, खैर, करहल, फूलपुर, काटेहरी, मझवां, सीसामऊ सीटों पर उपचुनाव होंगे। उत्तराखंड की केदारनाथ और पश्चिम बंगाल की तालडंगरा, सिताई, नैहाटी, हरोआ, मेदिनीपुर और मदरीहाट सीट पर भी उपचुनाव के लिए मतदान होगा। मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि पिछले 15-20 चुनाव देखें तो हर चुनाव में अलग-अलग नतीजे आए हैं और ऐसा नहीं हो सकता कि जब मनमाकिफ नतीजे न आएं तो सवाल उठाए जाएं। सीईसी ने कहा कि ईवीएम में सिंगल यूज बैट्री है और जब ये डाली जाएगी तो ये लंबे समय तक चलती है।

बोले पीएम मोदी... लोथल राष्ट्रीय परियोजना बनने से इतिहास व पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा

एजेंसी/लोथल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि गुजरात के लोथल में राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर बनाने के उनकी सरकार के फैसले का मकसद सभ्यता के इतिहास के बारे में लोगों की समझ विकसित करना है। उन्होंने कहा कि नई परियोजना निश्चित तौर पर इतिहास प्रेमियों और पर्यटकों के बीच समान रूप से उत्साह बढ़ाएगी। पीएम मोदी ने कहा कि इस तरह के प्रयास से पर्यटन अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा, जिसे भारत में विकास के एक प्रमुख ताकत के रूप में देखा जाता है। पीएम ने कहा कि जब पर्यटन बढ़ता है तो सभी की आय बढ़ती है। मैं आप सभी अग्रणी और सम्मानित पेशेवरों से आग्रह करता हूं कि आप पर्यटन क्षेत्र में नए अवसरों का पता लगाएं और इस पर अपने विचार मेरे साथ साझा करें। उन्होंने कहा कि इस तरह से हम एक मजबूत अर्थव्यवस्था में योगदान देंगे और साथ ही आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने समृद्ध अतीत को संरक्षित करेंगे। यह परिसर प्राचीन लोथल को डॉक शहर की मिनी प्रतिकृति के रूप में फिर से जीवंत करेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि लोथल एक समय सभ्यताओं, विचारों और वस्तुओं का जीवंत समागम स्थल था और खुदाई से इसकी भूमिका एक महत्वपूर्ण समुद्री केंद्र के रूप में दिखती है। उन्होंने कहा कि हजारों साल पहले बनाए गए डॉक, हमारे पूर्वजों की सरलता की भावना दर्शाते हैं। आजादी के बाद नहीं दिया गया ऐतिहासिक स्थलों पर ध्यान देने की जरूरत है। ताकि इतिहास के पन्नों से उन महत्वपूर्ण चीजों को बाहर लाया जाए। जिसके आधार पर हमारे पूर्वजों ने अपने आप को आर्थिक रूप से संपन्न बनाया था। प्रधानमंत्री ने कहा कि इसकी उन्नत इंजीनियरिंग और शहरी नियोजन आधुनिक पर्यवेक्षकों को चौंका देती है। यह हमारे अतीत की प्रतिभा का एक नमूना मात्र है। उन्होंने कहा कि अफसोस है कि आजादी के बाद के दशकों में हमने अपने इतिहास के कई पहलुओं और कई ऐतिहासिक स्थलों को नजरअंदाज कर दिया। जिससे हमारा समृद्ध अतीत खोता जा रहा है। कांग्रेस ने कभी भी अपने इतिहास को जनता के सामने लाने का प्रयास नहीं किया। उनकी बारिकियों के बारे में जनता को अवगत नहीं कराया। जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। मोदी ने कहा कि हालांकि, पिछले 10 वर्षों में इस प्रवृत्ति में बदलाव देखा गया है। उन्होंने कहा कि इसी भावना के साथ उनकी सरकार ने एक जीवंत राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर बनाने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि इससे सभ्यता के इतिहास की हमारी समझ विकसित होगी। उन्होंने कहा कि इस परिसर के केंद्र में एक प्रतिष्ठित लाइट हाउस संग्रहालय खड़ा होगा। जो 77 मीटर ऊंचा है और यह दुनिया में अपनी तरह का सबसे ऊंचा होगा। बता दें कि लोथल अहमदाबाद जिले के धोलका तालुका में आता है और यह नेशनल हाईवे-47 और स्टेट हाईवे-8 के करीब स्थित है। यह स्थल तीन गांवों से घिरा हुआ है। सरगवाला, उतेलिया और गुंडी। यहां मुख्य तौर पर कृषि ही आय का स्त्रोत और व्यवसाय है।

गिरिराज की हिंदू स्वाभिमान यात्रा को लेकर जेडीयू व बीजेपी के बीच मतभेद

एजेंसी/नई दिल्ली

बिहार के सीएम नीतीश कुमार की जेडीयू और भाजपा के तनाव का एक और कारण तब सामने आया जब केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने बिहार में मुस्लिम आबादी वाले पांच जिलों में चार दिवसीय हिंदू स्वाभिमान यात्रा का प्रस्ताव रखा। हाल ही में, भाजपा के साथ गठबंधन में शामिल जद (यू) ने केंद्र सरकार के विवादास्पद वक्फ (संशोधन) विधेयक 2024 और आरक्षण को दरकिनार कर पार्श्व प्रवेश नौकरियों में भर्ती के लिए विज्ञापन को लेकर असहमति जताई है। अब, जेडी(यू) के नेता गिरिराज सिंह की यात्रा के प्रस्ताव की आलोचना कर रहे हैं, उनका कहना है कि इससे राज्य में सांप्रदायिक सद्भाव बिगड़ेगा और ऐसा लगता है कि यह 2025 के विधानसभा चुनावों से पहले राजनीतिक लाभ के लिए दंगे भड़काने की कोशिश है। हालांकि, अपने आक्रामक बयानों के लिए मशहूर गिरिराज सिंह ने अपने प्रस्ताव का बचाव करते हुए कहा कि यात्रा हिंदुओं में एकता लाएगी। और जो लोग अब आपत्ति जता रहे हैं, उन्होंने तब नहीं किया था जब तेजस्वी यादव ने मुस्लिम मतदाताओं को एकजुट करने के लिए यात्रा का आयोजन किया था। तेजस्वी यादव 2025 के विधानसभा चुनावों से पहले अपने पार्टी समर्थकों से जुड़ने के लिए बिहार के विभिन्न जिलों का दौरा कर रहे हैं।

सात विमानों में बम की धमकी, सुरक्षा कारणों से बदला गया रूट

- हवाई जहाज को कनाडा एयरपोर्ट पर किया गया डायवर्ट
- बोइंग 737-मैक्स 8 विमान में 132 यात्री

एजेंसी/नई दिल्ली

दिल्ली से शिकागो जा रहे एअर इंडिया के एक विमान को मंगलवार को बम की धमकी के बाद कनाडा के एक हवाई अड्डे की ओर मोड़ दिया गया। इसके साथ ही अन्य विमानों में बम होने की धमकी दी गई। एअरलाइन ने एक बयान में कहा कि 15 अक्टूबर, 2024 को दिल्ली से शिकागो के लिए उड़ान संख्या एआई 127 ऑनलाइन पोस्ट की गई सुरक्षा धमकी के बाद एहतियात के तौर पर कनाडा के इकालुइट हवाई अड्डे पर उतर गई है। बयान में कहा गया कि निर्धारित सुरक्षा प्रोटोकॉल के अनुसार विमान और यात्रियों की फिर से जांच की जा रही है। एअर इंडिया ने यात्रियों की यात्रा फिर से शुरू होने तक उनकी सहायता के लिए हवाई अड्डे पर एजेंसियों को सक्रिय कर दिया है। अधिकारी ने बताया कि इस उड़ान में बम रखे होने की धमकी मिली। इससे पहले एअर इंडिया एक्सप्रेस के एक विमान को बम से उड़ाने की धमकी मिली जिसके बाद उत्तर प्रदेश के अयोध्या हवाई अड्डे पर उसकी आपातकालीन लैंडिंग कराई गई। विमान जयपुर से आ रहा था।एअर इंडिया एक्सप्रेस के प्रवक्ता ने एक बयान में बताया कि कुछ अन्य संचालकों के साथ एअर इंडिया एक्सप्रेस को एक असत्यापित सोशल मीडिया खाते से धमकी मिली। जवाब में, सरकार द्वारा नियुक्त बम के खतरे का आकलन वाली समिति के निदेर्शानुसार सुरक्षा प्रोटोकॉल तुरंत सक्रिय कर दिए गए। उड़ान सुरक्षित रूप से उतर गई और सभी अनिवार्य सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन करने के बाद ही विमान को उड़ाने के लिए मंजूरी दी जाएगी। बोइंग 737-मैक्स 8 विमान में 132 यात्री सवार थे। बता दें कि मुंबई से 239 यात्रियों को लेकर न्यूयॉर्क जा रही एअर इंडिया की एक उड़ान में 14 अक्टूबर को बम होने की धमकी मिलने के बाद डायवर्ट कर उसे दिल्ली हवाई अड्डा भेजा गया। एअर इंडिया ने एक बयान में कहा कि 14 अक्टूबर को मुंबई से न्यूयार्क का जॉन एफ कैनेडी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा जाने वाली उड़ान संख्या एआई-119 को विशेष सुरक्षा चेतावनी मिली और सरकार की सुरक्षा नियामक समिति के निर्देश पर विमान का मार्ग परिवर्तित कर उसे दिल्ली भेजा गया।

तमिलनाडु में भारी बारिश, चेन्नई की सड़कें पानी-पानी, स्कूल-कॉलेज बंद

एजेंसी/चेन्नई

तमिलनाडु के चेन्नई और अन्य क्षेत्रों में रुक-रुक कर व्यापक बारिश हुई। मौसम विभाग ने मंगलवार को यह जानकारी दी। मौसम विभाग ने कहा कि बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना कम दबाव का क्षेत्र एक स्पष्ट, निम्न दबाव क्षेत्र में बदल गया है तथा इसके अवदाब में बदलने की आशंका है। नगर निगम के अधिकारियों ने बताया कि निवारक रखरखाव के कारण चेन्नई में सबवे में पानी जमा नहीं हुआ और गिरे हुए पेड़ों को तुरंत हटा दिया गया। चेन्नई नगर निगम ने कहा कि वह नालों में भर गया पानी निकाल रहा है। लगातार बारिश और आंधी के कारण शहर और उपनगरों में सड़क पर चलने वालों की संख्या में तेजी से कमी आई है। चेन्नई, तिरुवल्लूर और राज्य के अन्य हिस्सों में मध्यम से भारी बारिश हुई। चेन्नई नगर निगम ने हेल्पलाइन नंबर जारी किया है। स्कूलों और कॉलेजों में छुट्टी घोषित कर दी गई है। मदिपक्कम के बाढ़ प्रभावित राम नगर में कुछ लोगों ने अपने वाहनों को निकटवर्ती वेलाचेरी पुल पर खड़ा कर दिया है। उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन ने वेलाचेरी के पास नारायणपुरम झील सहित कई इलाकों का निरीक्षण किया। उन्होंने बारिश से उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए जारी कार्यों की समीक्षा करने के लिए चेन्नई नगर निगम के मुख्यालय रिपन बिल्डिंग से संचालित एकीकृत कमान एवं नियंत्रण केंद्र का निरीक्षण किया।

खालिस्तानी आंतकी की हत्या के बाद कनाडा व भारत आमने-सामने, लगातार बढ़ रहा तनाव

एजेंसी/नई दिल्ली

खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या को लेकर कनाडा और भारत आमने-सामने हैं। दोनों देशों के बीच तनाव लगातार बढ़ता जा रहा। कनाडाई पीएम जस्टिन ट्रूडो के बाद कनाडा पुलिस ने भी बेशर्मी से आरोप लगाया। अब तक कनाडा में हुई किसी भी हत्या में किसी भारतीय सरकारी अधिकारी के शामिल होने के बारे में सबूत देने में नाकाम रही ट्रूडो सरकार फिर बिना सबूतों के मीडिया के सामने आई। हालांकि, अब भारत ने भारतीय एजेंटों को कनाडा में आपराधिक गिरोहों से जोड़ने के कनाडा के प्रयासों को मंगलवार को खारिज कर दिया। आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि यह बिल्कुल भी सच नहीं है कि कनाडा ने निज्जर मामले में भारत के साथ सबूत साझा किए थे। उसका सिर्फ भारत पर अस्पष्ट आरोप लगाने का मकसद है। सूत्रों ने कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के उन आरोपों को भी खारिज कर दिया कि भारत उनके देश में कनाडाई नागरिकों को निशाना बनाने सहित कई गतिविधियों में लिप्त है।भारत पर इनकार का बोझ डालने का मकसद निज्जर मामले में भारत के खिलाफ कनाडा के आरोपों पर सूत्रों ने कहा कि कनाडा का दृष्टिकोण अस्पष्ट आरोप लगाने और भारत पर इनकार का बोझ डालने का है। इतना ही नहीं, कनाडाई अधिकारियों का यह दावा बिलकुल भी सच नहीं है कि कनाडा ने निज्जर मामले में भारत को विश्वसनीय सबूत पेश किए हैं। सूत्रों ने कहा कि कनाडा के पीएम ट्रूडो ने कल प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी। उन्होंने कुछ भी नया नहीं कहा। वह वहीं पुरानी बातें दोहरा रहे थे। उनके सभी अधिकारियों का मुख्य दावा यह है कि भारत के सामने विश्वसनीय सबूत पेश किए गए हैं।

पूर्व सीजेआई रंजन गोगोई के खिलाफ जनहित याचिका खारिज, लगाया जुर्माना

एजेंसी/नई दिल्ली

देश के पूर्व प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई पर लगाए गए आरोपों से अप्रसन्न सुप्रीम कोर्ट ने एक याचिकाकर्ता की याचिका मंगलवार को खारिज कर दी और सुरक्षा कर्मियों को उसे अदालत कक्ष से बाहर ले जाने का आदेश दिया। अरुण रामचंद्र हुबलीकर ने शीर्ष अदालत में सेवा से अपनी अवैध बर्खास्तगी के खिलाफ याचिका दायर की और सेवा विवाद में अतीत में दाखिल अर्जी को खारिज करने के लिए पूर्व प्रधान न्यायाधीश गोगोई के खिलाफ आंतरिक जांच कराने का अनुरोध किया। आरोपों से नाराज न्यायमूर्ति बेला एम त्रिवेदी और न्यायमूर्ति सतीष चंद्र शर्मा की पीठ ने सुरक्षा कर्मियों से हुबलीकर को अदालत कक्ष से बाहर ले जाने का आदेश दिया। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली एक पीठ ने 30 सितंबर को पूर्व सीजेआई के खिलाफ जांच के अनुरोध वाली याचिका पर कड़ी आपत्ति जताई थी और याचिकाकर्ता से पक्षकारों की सूची से न्यायाधीश का नाम हटाने को कहा था। सुनवाई के दौरान जब याचिकाकर्ता ने पूर्व सीजेआई का नाम लिया, तो पीठ नाराज हो गई।

महाकुंभ में सुगम यातायात एक लिये स्मार्ट ट्रैफिक व्यवस्था लागू कर रही है सरकार

महाकुंभ : 50 करोड़ की लागत से हो रहा है ट्रैफिक जंक्शन का निर्माण

केटी न्यूज/प्रयागराज

प्रयागराज में दिव्य ,भव्य और सुव्यवस्थित महाकुंभ के आयोजन के लिए योगी सरकार द्वारा की जा रही तैयारियां तेजी से आगे बढ़ रही हैं। सरकार महाकुंभ पहुंचने वाले पर्यटकों और श्रद्धालुओं के अनुभव स्मरणीय बनाने के लिए कई अभिनव प्रयास कर रही है। सड़क यातायात सुगम बनाना इसी का एक हिस्सा है जिसे लेकर एक बड़ा प्रोजेक्ट कुंभ नगरी में धरातल में उतारा जा रहा है।

39 ट्रैफिक जंक्शन का हो रहा है निर्माण: सड़क मार्ग से प्रयागराज की पहुंच को सरल बनाने के साथ-साथ शहर में यातायात व्यवस्था को नया स्वरूप देने के लिए पहली बार शहर में 39 ट्रैफिक जंक्शन का निर्माण किया जा रहा है। अपर कुंभ मेला अधिकारी विवेक चतुर्वेदी बताते हैं कि महाकुंभ के पूर्व शहर में यातायात व्यवस्था को सुव्यवस्थित स्वरूप देने के लिए 39 ट्रैफिक जंक्शन बनाए जा रहे हैं। तकरीबन 50 करोड़ के बजट से इनका निर्माण हो रहा है। इसके टेंडर जारी हो चुके हैं । महाकुंभ के आगंतुकों के लिए ये सुगम यातायात और सौंदर्यीकरण का माध्यम बनेंगे । ट्रैफिक जंक्शन के निर्माण के पूर्व एक एजेंसी के माध्यम से उन चौराहों का सर्वे भी कराया गया है जहां आवागमन में ट्रैफिक की समस्या ज्यादा रहती है। इसके बाद इन जंक्शन का डिजाइन बनाया गया है। विदित हो कि योगी सरकार बनने के बाद लगातार महाकुंभ के अवसर पर सुरक्षा सहित अन्य व्यापक इंतजाम किए जाते है।

सुगम यातायात व खूबसूरत लुक का फ्यूजन होंगे जंक्शन

शहर में यातायात व्यवस्था को स्मार्ट बनाने के लिए पहली बार बनाए जा रहे ये ट्रैफिक जंक्शन बहु उपयोगी होंगे। इन्हें उस आकार में डिजाइन किया गया है कि ये ट्रैफिक को अच्छी तरह से व्यवस्थित कर सकें। अपर कुंभ मेला अधिकारी के मुताबिक इसके लिए ट्रैफिक जंक्शन में आइलैंड तैयार किए जा रहे हैं। उसी के मुताबिक इनका आकार छोटा या बड़ा किया जायेगा। जंक्शन में स्मार्ट सिग्नल ट्रैफिक व्यवस्था होगी जो पूरी तरह स्वचालित होगी। जंक्शन को खूबसूरत लुक देने के लिए शेष बचे स्थान में स्कल्पचर और आकर्षक लाइट्स भी लगाई जाएंगी। जंक्शन के अंदर ही हरित पट्टिका भी बनेगी जिसमें छोटे आकार के सजावटी पौधे रोपित किए जाएंगे। ये ट्रैफिक जंक्शन कुंभ के स्नान पर्वों में आने वाली भीड़ के प्रबंधन में उपयोगी होंगे। कुंभ के समापन के बाद भी शहर की यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने में इनकी उपयोगिता बनी रहेगी। पूर्व में यह होता था कि यातायात बनाने के बाद जब महाकुंभ समाप्त होता था। तभी सिस्टम को हटा दिया जाता था। इससे सरकार को नुकसान होता था। परंतु इस बार इस तरह की व्यवस्था की जा रहा है कि वह आगे भी जारी रहे। सरकार को आर्थिक नुकसान भी नहीं हो।

नवादा में भोजपुरी गायिका से अभद्रता और मारपीट, एफआईआर दर्ज

- समुखिया समेत कई नामजद, अनुपमा पर भी एससी/एसटी केस दर्ज

नवादा जिले के वारिसलीगंज थाना क्षेत्र के नारोमुरार गांव में आयोजित दुर्गा पूजा के सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान भोजपुरी गायिका अनुपमा यादव के साथ अभद्र व्यवहार और मारपीट का मामला सामने आया है। इस घटना को लेकर अनुपमा यादव ने वारिसली गंज थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है। शिकायत में कुटरी पंचायत के मुखिया अभिनव आनंद समेत पूजा समिति के अन्य सदस्यों को आरोपी बनाया गया है।

कपड़े फाड़ने और चेन छीनने का भी आरोप: जानकारी के अनुसार, अनुपमा यादव उत्तर प्रदेश के गोरखपुर की निवासी हैं। उन्होंने अपनी शिकायत में बताया कि कार्यक्रम के बाद लौटने के समय उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि उनके कपड़े फाड़े गए और उनके सहयोगियों के साथ भी मारपीट की गई। इस मारपीट में उनके गले की चेन छीन ली गई और उनके वाहन का शीशा भी तोड़ दिया गया। अनुपमा ने बताया कि यह कार्यक्रम 31 अगस्त 2024 को बुक किया गया था और 15 अक्तूबर को यह समाप्त हुआ। जब वह कार्यक्रम समाप्त कर लौट रही थीं, तब यह घटना घटी। वहीं, मुखिया अभिनव आनंद ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि यह आरोप निराधार हैं। उन्होंने बताया कि कलाकार अनुपमा यादव निर्धारित समय से बहुत देर से आईं और केवल साढ़े तीन घंटे में दो-तीन गीत गाने के बाद थकान का हवाला देते हुए कार्यक्रम बंद कर दिया। इस कारण दर्शक उग्र हो गए और उन्होंने दर्शकों को शांत करने का प्रयास किया। परंतु उन्हें गलत तरीके से फंसाने का प्रयास किया गया है।

गायिका अनुपमा यादव पर भी मामला दर्ज

गायिका अनुपमा यादव और उनके सहयोगियों के खिलाफ भी एक मामला दर्ज हुआ है। स्थानीय निवासी वरुण पासवान ने आरोप लगाया कि कार्यक्रम के दौरान अनुपमा यादव और उनके सहयोगियों ने जातिसूचक शब्दों का प्रयोग किया और उनके साथ मारपीट की। वरुण पासवान ने इस घटना की शिकायत एससी-एसटी थाना नवादा में दर्ज कराई है। वरुण पासवान का इलाज नवादा सदर अस्पताल में चल रहा है। वहीं दूसरी ओर मुखिया का अपने बचाव में कहना है कि उन्होंने कलाकारों को सुरक्षित उनके वाहन तक पहुंचाने की कोशिश की, बावजूद इसके उन्हें आरोपी बनाया गया, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। मदद करने वाले को ही आरोपी बना दिया गया है। पुलिस ने इस मामले की जांच शुरू कर दी है। वहीं, दोनों पक्षों द्वारा दर्ज कराई गई शिकायतों के आधार पर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि मौके पर से सभी वीडियो रिकार्डिंग चेक किया जा रहा है। साथ ही सीसीटीवी कैमरा भी चेक किया जा रहा है। जल्द ही सारी सच्चाई सामने आ जाएगी। पुलिस यह सुनिश्चित कर रही है कि दोनों पक्षों के बयान और सबूतों की जांच की जाए ताकि सच्चाई सामने आ सके। इसके बाद कार्रवाई की जाएगी।

दरभंगा में कपड़ा व्यवसायी के पुत्र की हत्या कर शव को गड्ढे में फेंका

केटी न्यूज/दरभंगा

दरभंगा में अपराधियों ने एक कपड़ा व्यवसायी के पुत्र की हत्या कर शव को गड्ढे में फेंक दिया। घटना सिंहवाड़ा थाना क्षेत्र के सिंहवाड़ा नगर पंचायत की है। मृतक की पहचान दुर्गा प्रसाद गुप्ता के 25 वर्षीय पुत्र मनीष कुमार के रुप में की गई है।घटना के संबंध में मृतक के भाई विकास कुमार ने पुलिस को दिये बयान में बताया कि 13 अक्टूबर की रात करीब आठ बजे मेरा भाई दुकान का मार्केटिंग करके घर आया था। उसके बाद कुछ देर तक दुकानदारी भी किया। इसके बाद वह घर पर जाकर खाना खाया। खाना खाने के बाद रात करीब साढे बारह बजे के आसपास मनीष के मोबाइल पर किसी का फोन आया। वह किसी को कुछ बताए बिना ही बाइक लेकर घर से निकल गया। जब सुबह तक वह वापस घर नही लौटा तो घर के लोग उसे फोन करने लगे, लेकिन उसका मोबाइल स्वीच ऑफ था। इसके बाद आसपास के सभी रिश्तेदार के यहां भी खोजबीन की गई, लेकिन उसका कहीं कोई अता-पता नहीं चल पाया। इसके बाद किसी ने यह जानकारी दी कि चमनपुर चौर स्थित एक तालाब मे एक युवक का शव मिला है।

सीएम नीतीश ने की मोकामा में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बनाने की घोषणा

कैबिनेट बैठक में 22 प्रस्ताव पास बिहार पुलिस अब बनेगी हाईटेक

- युवक-युवतियों को तकनीकी प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी बनाया जाएगा
- बिहार की पुलिस को लैपटॉप और स्मार्ट फोन से लैस कर दिया जायेगा
- 190 करोड़ 63 लाख रुपए मिली स्वीकृत

केटी न्यूज/पटना

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक हुई। जिसमें विभिन्न विभागों से जुड़े कुल 22 एजेंडों पर कैबिनेट ने मुहर लगाई है। बैठक में मोकामा को विशेष सौगात दी गई है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मोकामा में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बनाने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि युवक-युवतियों को तकनीकी प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी बनाया जाएगा। इसके लिए उन्होंने 43 पदों को सृजन किए जाने की भी मंजूरी दी है। 2024-25 में सवा करोड़ तथा वित्तीय वर्ष 2025-26 में 2 करोड़ 39 लाख रुपये की खर्च सरकार वहां करेगी। कैबिनेट बैठक में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार पुलिस को हाईटेक बनाने के प्रस्ताव पर मुहर लगाया है। उन्होंने कहा कि अब बिहार की पुलिस को लैपटॉप और स्मार्ट फोन से लैस कर दिया जायेगा। ताकि केस की जांच में तेजी लाने के लिए आईओ को हाईटेक बनाया जा सके और केस का अनुसंधान तुरंत किया जा सके। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि बिहार पुलिस को हाईटेक बनाने के पीछे मंशा यह है कि केस का अनुसंधान में जुटे पुलिस अधिकारी तुरंत जटिल से जटिल केस को भी तुरंत संपादित का सकें। कैबिनेट ने इसके लिए 190 करोड़ 63 लाख रुपए स्वीकृत की है।

ई-नीलामी और खनन पट्टा में सुधार

खनन पट्टा प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी बनाने के लिए ई-नीलामी के बाद 15 दिनों के भीतर खनन पट्टे का संचालन शुरू करने का प्रावधान किया गया है। साथ ही, दूसरे राज्यों से आने वाले लघु खनिजों पर निगरानी बढ़ाने के लिए सभी वाहनों के लिए ट्रांजिट पास लेना अनिवार्य कर दिया गया है। बिहार खनिज संशोधन नियमावली 2024 के तहत अवैध खनन और परिवहन पर सख्त कार्रवाई का खाका तैयार कर लिया गया है। अब खनिज संपदा की चोरी पर भारी जुमार्ना लगाया जाएगा। राज्य सरकार का यह कदम न केवल खनिज संपदा की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा।

कैमूर व रोहतास जिलों में ग्रिड से बिजली सप्लाई

कैबिनेट की बैठक में बिहार के कैमूर और रोहतास जिले के 132 गांवों की 177 बस्तियों में बिजली पहुंचाने को लेकर बड़ा फैसला लिया गया। अब करीब 21,644 घरों को ग्रिड से बिजली मिलेगी, जिससे इन इलाकों में विकास की नई किरण आएगी। कोसी-मेची नदी जोड़ योजना को मंजूरी मिली है। बैठक में एक अन्य महत्वपूर्ण प्रस्ताव को मंजूरी दी गई, जिसमें कोसी-मेची नदी जोड़ो योजना के डीपीआर के लिए 14.16 करोड़ रुपये मंजूर किए गए। यह परियोजना बिहार के जल संसाधनों के बेहतर उपयोग के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है, जिसका कृषि क्षेत्र पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। कैबिनेट की बैठक में यह स्पष्ट किया गया कि किसानों की आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए हर संभव उपाये किए जाएगें। उनकी आर्थिक समृद्धि से ही राज्य का विकास जुड़ा हुआ है। इसके लिए सभी पहलूओं पर गैर किया जा रहा है। आने वाले समय में इस पर और रणनीति अपनाएगी जाएगी। ताकि छोटे से लेकर बड़े किसानों को इसका फायद मिल सके। वह अधिक से अधिक मुनाफा कमा सके।

शौचालय टैंक का स्लैब टूटने से दो भाइयों समेत तीन लोगों की मौत

केटी न्यूज/दरभंगा

दरभंगा के वार्ड नंबर 3 में शौचालय टैंक का स्लैब टूटने से तीन लोगों की मौत हो गई। संजय राम ने पाइप लगाने के दौरान टैंक में गिरने पर अपने भाई और भतीजे को बचाने का प्रयास किया, जिससे वे भी डूब गए। सभी को सदर अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। हादसे के कारण परिवार में शोक की लहर है, और पुलिस मामले की जांच कर रही है। दरभंगा के वार्ड नंबर 3 में हुए इस भयावह हादसे में शौचालय के टैंक का स्लैब टूटने से संजय राम, उनके भाई सुधीर राम और भतीजे नवल राम की टैंक में गिरने से मौत हो गई। तीनों को बचाने का प्रयास विफल रहा और पुलिस इस दर्दनाक घटना की पूरी जांच कर रही है। परिवार का एकमात्र कमाने वाला सदस्य सुशील राम थे, जिनकी मृत्यु के बाद परिवार पर आर्थिक संकट गहरा गया है।बताया जा रहा है कि हादसा उस वक्त हुआ जब संजय राम अपने शौचालय के सेप्टिक टैंक में पाइप लगाने की कोशिश कर रहे थे, तभी टैंक का स्लैब टूट गया और सुनील राम टैंक के अंदर जा गिरा। उसे बचाने के लिए सुधीर राम और उसका भतीजा नवल राम भी टैंक के अंदर गए लेकिन तीनों की जहरीली गैस से दम घुटने से मौत हो गई।इस हादसे में एक शख्स गंभीर रूप से घायल है, जिसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस घटना के बाद परिजनों में कोहराम मच गया है। घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने तीनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले के छानबीन में जुट गई है। बताया जाता है कि संजय राम अपने शौचालय के टैंक में पाइप लगाने का प्रयास कर रहा था। इस दौरान टैंक का ढक्कन टूट जाने संजय राम पहले डूब गया। उसको बचाने गए भाई सुशील राम, सुधीर राम व भतीजा नवल राम भी डूबने लगा। जब तक दोनों संभल पाते तब तक तीनों की डूबकर मौत हो गई। घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। आसपास के लोगों की भीड़ लग गई। इधर, सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई।मरने वालों की पहचान सुशील कुमार राम (38), नवल (30) और तीसरा सुधीर राम (35) की मौत हुई है।

एक नजर

गोपालगंज में जब्त शराब बेचने के आरोप में चार थानेदार हुए निलंबित

गोपालगंज। बिहार के गोपालगंज पुलिस अधीक्षक अवधेश दीक्षित ने शराब माफियाओं और गांजा तस्करों के साथ साठगांठ रखने के आरोप में चार थानाध्यक्षों को निलंबित कर दिया है। इनमें जादोपुर के थानाध्यक्ष पिंटू कुमार, विशंभरपुर थाने के मनोज कुमार, विजयीपुर के मनीष कुमार और कुचायकोट के थानाध्यक्ष सुनील कुमार शामिल हैं। निलंबन अवधि में चारों थानाध्यक्ष का मुख्यालय पुलिस केंद्र होगा। इसके साथ ही विभागीय कार्रवाई के लिए एक सप्ताह के अंदर स्पष्टीकरण समर्पित करने का आदेश दिया गया है। एक साथ चार थानाध्यक्षों पर निलंबन की कार्रवाई होने से जिलेभर के पुलिस अफसरों में हड़कंप मच गया है। बताया जाता है कि जादोपुर थानाध्यक्ष पर 250 किलोग्राम गांजे की बरामदगी करने के बाद 70 किलोग्राम ही जब्ती सूची में दिखाया गया था, जबकि शेष गांजे को तस्कर के हाथों बेच दिया गया था। पुलिस अधीक्षक ने जांच करायी, तो मामला सही पाया गया। वहीं, विशंभरपुर और कुचायकोट के थानाध्यक्ष पर बेतिया के रहने वाले शराब माफिया मुकेश यादव के साथ साठगांठ रखने और संरक्षण देने का आरोप है। इन थानों में नये थानाध्यक्ष की पोस्टिंग भी जल्द करने की बात कही गयी है। एसपी अवधेश दीक्षित ने बताया कि चारों थानाध्यक्षों पर अलग-अलग आरोप है। जांच कराने के बाद मामले में कार्रवाई की गयी है। उन्होंने कहा कि हम जीरो टॉलरेंस की नीति पर काम कर रहे हैं। किसी भी पुलिसकर्मी या पदाधिकारी का संदिग्ध आचरण, भ्रष्टाचार या लापरवाही को बर्दाश्त नहीं की जायेगी।

दिनदहाड़े शिक्षक से 1.60 लाख रुपये की लूट

सहरसा। सहरसा जिले के बलवा हाट थानाक्षेत्र में दिनदहाड़े तीन बाइक सवार अपराधियों ने एक शिक्षक से हथियार के बल पर 1.60 लाख रुपये और मोबाइल लूट लिया। पीड़ित शिक्षक ब्रजेश कुमार सहरसा के हटिया गाछी में रहते हैं। वह अपने गांव धनपुरा जा रहे थे, जब यह घटना घटी। पीड़ित शिक्षक ब्रजेश कुमार ने बताया कि वह सहरसा से अपने गांव धनपुरा जा रहे थे। तेघड़ा और बलवा हाट पेट्रोल पंप के बीच तीन बाइक सवार अपराधियों ने उन्हें रोक लिया। हथियार दिखाकर अपराधियों ने उनके पास से 1.60 लाख रुपये और मोबाइल लूट लिया। शिक्षक का कहना है कि वह गांव में किसी को पैसे देने के लिए जा रहे थे, क्योंकि विद्यालय क्षेत्र में बाढ़ का पानी जमा होने के कारण स्कूल बंद था।घटना के बाद पीड़ित शिक्षक शिकायत लेकर सदर थाना पहुंचे, जहां पुलिस अधिकारियों ने बनगांव थानाक्षेत्र समझकर उन्हें वहां संपर्क करने की सलाह दी।

गया में कुख्यात नक्सली बैधनाथ गिरफ्तार, साल 1997 से पुलिस को दे रहा था चकमा

- पुलिस ने गिरफ्तार नक्सली के पास से एक 303 बोर की राइफल, 21 जिंदा कारतूस और एक मैगजीन बरामद की

केटी न्यूज/गया

गया जिले में 1997 में चंदौती थाना पर हुए नक्सली हमले के मामले में एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। गया पुलिस और एसटीएफ की विशेष टीम ने कुख्यात नक्सली बैधनाथ यादव को गिरफ्तार कर लिया है, जिसके पास से पुलिस का लूटा हुआ रायफल और कारतूस बरामद किया गया है। गिरफ्तार नक्सली बैधनाथ यादव गुरुआ थाना क्षेत्र के कठवारा गांव का निवासी है। जानकारी के मुताबिक, साल 1997 में हथियारबंद नक्सलियों ने गया के चंदौती थाना पर हमला कर पुलिस की राइफल और कारतूस लूट लिए थे। इस घटना के बाद चंदौती थाना में अज्ञात नक्सलियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी। तब से पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां लगातार इस घटना में शामिल नक्सलियों की तलाश कर रही थीं। लेकिन कुख्यात नक्सली बैधनाथ यादव हर बार पुलिस को चकमा देकर फरार हो जाता था। गुप्त सूचना मिली कि गुरुआ थानाक्षेत्र में हार्डकोर नक्सली बैधनाथ यादव देखा गया है। सूचना के आधार पर एसटीएफ की विशेष टीम और गया पुलिस ने कठवारा गांव में छापामारी कर बैधनाथ यादव को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने गिरफ्तार नक्सली के पास से एक 303 बोर की राइफल, 21 जिंदा कारतूस और एक मैगजीन बरामद की।

पटना में अपराधियों ने अपार्टमेंट में घुसकर की बुजुर्ग दंपति की हत्या

पटना। पटना में अपराधियों ने अपार्टमेंट में घुसकर बुजुर्ग दंपति की हत्या कर दी है। इस घटना के बाद इलाके में सनसनी फैल गई है। घटना की सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने जांच के लिए एफएसएल की टीम को बुलाया है। इसके साथ ही पुलिस के बड़े अधिकारी मौके पहुंच गए है। पटना के पाटलिपुत्रा नेहरू नगर की यह घटना है। पटना के पाटलिपुत्रा नेहरू नगर स्थित जानकी अपार्टमेंट में एक फ्लैट में बुजुर्ग दंपती अकेले रह रहे थे, इस दौरान बेखौफ अपराधी उनके फ्लैट में घुस गए और दोनों की बेरहमी से हत्या कर दी गई। फिलहाल, पुलिस इस मामले में कुछ भी कहने से बच रही है।

बिजली कंपनी की पुनर्विचार याचिका पर सुनवाई के बाद आयोग ने दिये आदेश

बिजली दरों में नहीं होगी बढ़ोत्तरी : आयोग

- एक अप्रैल 2024 से बिहार में लागू बिजली दरों पर नहीं पड़ेगा असर
- बिजली दर में वृद्धि के बदले 15 पैसे प्रति यूनिट की कमी कर दी थी

केटी न्यूज/ पटना

बिहार विद्युत विनियामक आयोग ने बिहार में बिजली दरों में बढ़ोतरी को लेकर बिजली कंपनियों के दावों को खारिज कर दिया है। बिजली कंपनी की पुनर्विचार याचिका पर सुनवाई के बाद आयोग के अध्यक्ष आमिर सुबहानी, सदस्य अरुण कुमार सिन्हा और पीएस यादव की पीठ ने कंपनी की ओर से उठाए गए बिंदुओं का समाधान करते हुए साफ तौर पर कहा है कि उनके किसी भी दावे का असर एक अप्रैल 2024 से बिहार में लागू बिजली दरों पर नहीं पड़ेगा। इसके साथ ही आयोग ने कंपनी के खर्च और आय को भी दुरुस्त किया है। कंपनी ने 17 बिंदुओं पर सवाल उठाए थे। मालूम हो कि बिजली कंपनी ने आयोग द्वारा 2024-25 के बिजली दर को लेकर सुनाये गये फैसले पर आपत्ति जताते हुए पुनर्विचार याचिका दाखिल की थी। इसमें कंपनी ने 17 बिंदुओं पर सवाल उठाते हुए कहा था कि आयोग ने पैसों का हिसाब सही तरीके से नहीं किया है। खासकर कंपनी की आमदनी, खर्च और बिजली की खरीद मूल्य का जोड़ सही तरीके से नहीं किया गया। अगर सही तरीके से मूल्यांकन हो तो बिहार में बिजली दर में वृद्धि की आवश्यकता है। आयोग ने कंपनी की सभी दलीलों को सुना की। कंपनी ने वितरण व तकनीकी नुकसान का सही तरीके से मूल्यांकन नहीं होने और बाजार से अधिक दाम पर बिजली की खरीद का भी सही तरीके से मूल्यांकन नहीं होने का मामला उठाया था। आयोग ने कंपनी की सभी दलीलों को सुना। साथ ही कंपनी की आमदनी के पैसों के जोड़ को सही किया। साथ ही कुछ टंकण भूल भी दुरुस्त किया गया। इसके साथ ही आयोग ने कंपनी की ओर से बिजली दर में वृद्धि के प्रस्ताव को सिरे से खारिज कर दिया। मालूम हो कि मार्च 2024 में विनियामक आयोग ने फैसला सुनाते हुए बिजली दर में वृद्धि के बदले 15 पैसे प्रति यूनिट की कमी कर दी थी।

इटाढ़ी में नाली विवाद में चचेरे भाई को कुदाल से काटा, इलाज के दौरान मौत

♦ इटाढ़ी थाना क्षेत्र के लोधास गांव की है घटना, आरोपित गिरफ्तार, पांच पर दर्ज हुआ एफआईआर

केटी न्यूज/बक्सर

दो चचेरे भाइयों के बीच नाली विवाद को लेकर मारपीट हो गई। बात इतनी बढ़ गई कि एक ने कुदाल से दूसरे पर हमला कर दिया। जिसमें दूसरा भाई बुरी तरह जख्मी हो गया। जिसे आनन-फानन में इलाज के लिए सदर अस्पताल पहुंचाया गया, जहा चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वही अस्पताल प्रबंधन की सूचना पर पहुंची पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर लिया। मामला इटाढ़ी थाने के लोधास गांव की है।

जानकारी के अनुसार इटाढ़ी थाने के लोधास गांव के बनारसी सिंह व विश्वनाथ सिंह सगे भाई है, दोनों का परिवार एक ही छत के नीचे रहता है। मंगलवार की सुबह दस बजे नाली का पानी बहाने को लेकर बनारसी सिंह के पुत्र पिंटू सिंह व विश्वनाथ सिंह के पुत्र संदीप सिंह के बीच बहस हुई। बात बढ़ते-बढ़ते मारपीट हो गई। इसी बीच संदीप पास में रखे कुदाल उठा पिंटू पर हमला कर दिया। इस घटना में पिंटू गम्भीर रूप से जख्मी हो गया। आनन-फानन में पिंटू को इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया। जहा चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

वहीं, इस घटना की सूचना पुलिस को मिली। जहां थाना प्रभारी सोनू कुमार सदल-बल घटनास्थल पर पहुंचे और आरोपित युवक संदीप को गिरफ्तार कर लिया। वही दूसरी ओर अस्पताल से मृत युवक का शव कब्जे में ले पोस्टमार्टम को भेज दिया। थानाप्रभारी सोनू कुमार ने बताया कि नाली विवाद को लेकर दो चचेरे भाई आपस मे भीड़ गए। जहा एक ने कुदाल से हमला कर पिंटू को घायल कर दिया था। जिसकी इलाज के दौरान सदर अस्पताल में मौत हो गई। वही शव को कब्जे में ले पोस्टमार्टम को भेज दिया गया। इधर, मृतक के पिता ने संदीप व महिला समेत कुल पांच लोगों पर नामजद प्राथमिकी कराई गई है। जिसमें आरोपित संदीप को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। अन्य आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही हैं। इस घटना की लोधास तथा आस पास के गांवों में पूरे दिन चर्चा हो रही थी।

कोपवां निवासी फौजी की मां की संदेहास्पद परिस्थिति में मौत, पत्नी पर लग रहा आरोप

डुमरांव। कोरानसराय थाना क्षेत्र के कोपवां गांव निवासी व भारतीय सेना के जवान सूरज सिंह की मां का निधन संदेहास्पद परिस्थिति में हो गया है। उसका निधन सोमवार को ही हो गया था। मंगलवार को इस मामले में नया मोड़ तब आया जब मां की मौत की सूचना पर सूरज घर आया, उसने पुलिस के सामने अपनी पत्नी अंजली देवी पर ही मां की हत्या किए जाने का गंभीर आरोप लगाया है। हालांकि समाचार लिखे जाने तक इस मामले में प्राथमिकी दर्ज नहीं हो सकी है।

सूरज की मानें तो उसकी मां ने सोमवार को फोन कर बताई थी कि बहु उसके साथ मारपीट कर रही है, जिस कारण वह पड़ोसी के दरवाजे पर शरण ली है। सूरज की मानें तो इसके बाद उसकी पत्नी मेरी मां को पड़ोसी के दरवाजे से घसीटते हुए घर लाई थी तथा उसके थोड़ी देर बाद ही उसकी मौत हो गई। फौजी के इस आरोप के बाद स्थानीय पुलिस ने तत्काल फारेंसिंक टीम को भी घटना स्थल पर बुलाया। वहीं, पुलिस शव को कब्जे में ले पोस्टमार्टम कराने सदर अस्पताल बक्सर भेज चुकी है।

एक नजर

निर्माण एजेंसी की लापरवाही से डुमरांव बिक्रमगंज पथ पर लगा जाम, परेशान होते रहे लोग

डुमरांव। डुमरांव बिक्रमगंज पथ के निर्माण कार्य में जुटी एजेंसी की लापरवाही से एनएच 120 पर कोरानसराय से नावानगर तक वाहनों की लंबी कतार लग गई थी। वाहन पूरी रात जाम में फंसे रहे। इस दौरान यात्रियों को भारी फजीहत का सामना करना पड़ा। छोटे वाहनों के यात्री तो नहर मार्ग के रास्ते अपने गंतव्य पर पहुंच जा रहे थे, लेकिन बड़े यात्री वाहनों से यात्रा कर रहे यात्रियों को सबसे अधिक परेशानी हुई। उन्हें लंबी दूरी पैदल ही तय करनी पड़ रही थी। रात के अंधेरे में जाम लगने से मुश्किलें और बढ़ गई थी। मिली जानकारी के अनुसार आथर गांव के समीप सड़क पर पुल बनाने के लिए निर्माण एजेंसी ने पूरी सड़क पर गड्ढा काटा है। इस दौरान वाहनों के आने जाने के लिए कोई वैकल्पिक मार्ग की व्यवस्था नहीं की है। सोमवार की रात इस गड्ढें में एक ट्रक फंस गया। ट्रक फंसने के बाद परिचालन ठप हो गया तथा सड़क के दोनों किनारे वाहनों की लंबी लाईन लग गई। वाहन चालकों की माने तो मंगलवार की सुबह आठ बजे तक उक्त जाम लगा रहा। जिस कारण भारी वाहनों के चालक भी पूरी रात जाम में फंसे रहे। निर्माण एजेंसी की इस लापरवाही से वाहन चालकों तथा आम यात्रियों में गहरी नाराजगी है।

चौसा पैक्स के मतदाता सूची में गड़बड़ी का आरोप लगा डीएम का सौंपा ज्ञापन

चौसा। पैक्स चुनाव की प्रशासनिक तैयारियां शुरू हो गई है। सहकारिता विभाग द्वारा मतदाता सूची के प्रारूप का प्रकाशन भी कर दिया गया है। 22 अक्टूबर तक दावा आपत्ति लिया जाएगा, लेकिन मतदाता सूची के प्रारूप के प्रकाशन के साथ ही विवाद शुरू हो गया है। इसी कड़ी में प्रखंड के विभिन्न पैक्सों में गहमा- गहमी शुरू हो गई है। चौसा प्रखंड के विभिन्न पैक्सों से मतदाता सूची में सुधार के आपत्ति दिए जा रहे है। जिसमें जहा कई पैक्सों में सूची में नाम में गड़बड़ी है, लेकिन नवगठित चौसा पैक्स में भारी गड़बड़ी का आरोप लग रहा है। इस संबंध में प्रखंड निर्वाचन से जिला निर्वाचन तक आवेदन दे न्याय की गुहार लगाई गई है। डीएम अंशुल अग्रवाल को दिए आवेदन में आवेदनकर्ता सुनील कुमार सिंह ने आरोप लगाया गया है कि जिस नवगठित चौसा नगर पंचायत का मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया है, उसमें पवनी पंचायत के मतदाताओं का नाम दर्ज किया गया है। जबकि, प्राथमिक कृषि साख सहयोग समिति (पैक्स) बिहार के नियमानुसार यह निर्देशित किया गया है कि एक परिवार से एक ही व्यक्ति मतदाता हो सकते है। इसके बावजूद एक ही परिवार के पति-पत्नी एवं अविवाहित पुत्र व अविवाहित पुत्रियों के अलावा नवविवाहित बहुओं का नाम मतदाता सूची में जोड़ा गया है साथ ही मृत सदस्यों का नाम भी नवगठित नगर पंचायत चौसा के पैक्स चुनाव के औपबंधिक मतदाता सूची में प्रकाशित किया गया है। यही- नहीं, मतदाता सूची में कई ऐसे भी मतदाता है जिनका नाम एक ही मतदाता सूची में कई जगह अंकित है, जो घोर अनियमितता व मनमानी को दर्शाता है। ऐसे में चुनाव में धांधली होने कि प्रबल संभावना बढ़ जाती है।

डीटीओ ने बस मालिकों को चेताया, 31 तक करा लें परमिट नहीं तो होगी कार्रवाई

चौसा। 31 अक्टूबर के बाद बिना परमिट सड़क पर फर्राटे भरने वाली बसो के मालिकों पर परिवहन नियमों के अनुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। ये बाते जिला परिवहन पदाधिकारी संजय कुमार ने मंगलवार को इटाढ़ी में बस मालिक एसोसिएशन के साथ बैठक के दौरान कही। उन्होंने कहा कि सभी बस मालिक 31 अक्टूबर के पहले अपना परमिट बनवा ले। उन्होंने कहा कि सड़को पर वाहन परिचालन अधिनियम को पालन कराने चेकिंग अभियान चला रही है। वही, बड़े यात्री वाहन के परमिट के लिए सख्ती बरती जा रही है। इसी के तहत मंगलवार को जिला परिवहन पदाधिकारी संजय कुमार द्वारा बस आनर्स एसोसियेशन, बस मालिको व प्राईवेट स्कूल के प्रबंधकों के साथ बैठक को गई। इस बैठक में साफ तौर पर निर्देशित किया गया कि आगामी 31 अक्टूबर तक सभी वाहन मालिक अपने वाहन का परमिट व विएलटीडी एक्टिवेट करा लें। अन्यथा 31 के बाद विधिसम्मत कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि इसके लिए वे निर्धारित समय तक आवेदन करें। विएलटीडी एक्टिवेट करें। ऐसे में पकड़े जाने पर वैसे बसों पर जुमार्ना किया जाएगा। बार-बार गलती करने वाले बसों को जब्त कर विधिसम्मत कानूनी कार्रवाई की जाएगी। अगर समय रहते आवेदन किया जाता है तो वाहनों के परमिट के लिए परमिट के लिए संयुक्त आयुक्त सह क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकार, पटना को अग्रसारित किया जाएगा।

सुहेलदेव पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने परसगंडा पहुंच मृतक के परिजनों से मिले

नावानगर। स्थानीय प्रखंड के परसगंडा में मंगलवार को सुहेलदेव पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह यूपी सरकार के कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर पहुंचे। जहां मृतक स्व. आजाद पासवान के परिजनों से मिले। मंत्री ने शोकाकुल परिवार से मिलकर उन्हें सांत्वना दी। साथ ही कहा कि अभी तक जो करवाई होनी चाहिए वह संतोषजनक नहीं है। आखिर किन कारणों से कार्रवाई में विलंब हो रही है। उन्होंने कहा स्व. आजाद पासवान के परिजन ने नामजद प्राथमिकी दर्ज कराने के बावजूद अपराधी को तत्काल सजा नहीं मिली। अपराधी जब अपराध करता है, तो उसकी जगह काल कोठरी होनी चाहिए, नहीं तो जमीन के अंदर या जमीन के ऊपर होना चाहिए। यह हमारे यूपी का सिस्टम है। अपराधी अगर प्रदेश छोड़ दिया है, तो उसके घर तक बुलडोजर पहुंचा कर उसे दंड देना चाहिए।

दर्जनों लोगों ने ली जदयू की सदस्यता

बक्सर। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के कार्य एवं विचारधारा से प्रभावित होकर बिहार के सभी जिलों सहित प्रदेश में भी लोग लागातार जदयू की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं। मंगलवार को जदयू के जिला कार्यालय बक्सर में भी जिलाध्यक्ष अशोक कुमार सिंह के समक्ष दर्जनों लोगों ने जदयू की सदस्यता ग्रहण की। सदस्यता ग्रहण करने वालों में हरेन्द्र सिंह, रजनीश चौधरी, वीरेंद्र सिंह, अखिलेश सिंह, विश्वनाथ चौधरी, केदार शाह, चंदन सिंह, नरेंद्र कुमार चौधरी, ओखा चौधरी, अरविंद चौधरी, गोलू तिवारी, हरेंद्र चौधरी, भगवान दयाल चौधरी, धनजी कुमार सिंह, रवि तिवारी, रमन सिंह, शक्ति शर्मा, रोहित पांडे व रोहित दुबे आदि शामिल रहे।

खबरें फटाफट

रोक के बावजूद कई समितियों ने छठिया पोखरा में भी किया विसर्जन

डुमरांव। डुमरांव में सोमवार की शाम मां दुर्गा की प्रतिमाओं के विसर्जन के दौरान राज्य सरकार के गाईड लाइन व स्थानीय प्रशासन के निर्देश को दरकिनार कर कई पूजा समितियों ने नगर परिषद द्वारा टीचर ट्रेनिंग कॉलेज के पीछे खुदवाए गए कृत्रिम तालाब की जगह छठिया पोखरा में मूर्तियों का विसर्जन कर दिया। वहीं छठिया पोखरा में मूर्ति विसर्जन करने वाली पूजा समितियों की माने तो कृत्रिम तालाब तक पहुंचना टेढ़ी खीर साबित हो रही थी। उनके पास कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं थी। लिहाजा मजबूर हो उन्हें छठिया पोखरा में मूर्ति विसर्जन करना पड़ा। इस संबंध में डुमरांव थानाध्यक्ष शंभू कुमार भगत ने कहा कि यह मामला प्रशासन के निर्देश की अवहेलना का है।

युवक का टुड़ीगंज के समीप मिला शव

कृष्णाब्रह्म। टुड़ीगंज रेलवे स्टेशन के समीप स्थित एक बागीचे 20 वर्षीय एक युवक का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी मच गई। इसकी जानकारी मिलते ही कृष्णाब्रह्म पुलिस मौके पर पहुंच मामले की जांच पड़ताल में जुट गई है। मृतक की पहचान डुमरांव के लालगंज कड़वी मोहल्ले के प्रेमचंद राय के 20 वर्षीय पुत्र अरविंद कुमार के रूप में हुई है। बताया जाता है कि वह बागीचे में औंधे मुंह गिरा था। आशंका जताई जा रही है कि उसकी मौत दो दिन पहले हो गई है। कृष्णाब्रह्म थानाध्यक्ष नीतीश कुमार ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि मंगलवार को दोपहर बाद ग्रामीणों ने सूचना दी गई कि एक युवक का शव टुड़ीगंज स्टेशन से दक्षिण बागीचा में पड़ा है। इस सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंच शव को कब्जे में ले पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल बक्सर भेज दिया है। उसके पाकेट से एक मोबाइल तथा दो रेलवे टिकट बरामद हुआ है। यह टिकट बक्सर स्टेशन से 13 अक्टूबर को लिया गया था, जिस पर बक्सर से दो व्यक्तियों के दिलदारनगर जाने का टिकट था दूसरा टिकट दिलदार नगर से बक्सर दो व्यक्तियों के साथ आने का था। दोनों टिकट पैसेंजर ट्रेन की है।

अव्यवस्था के बीच हुआ प्रतिमाओं का विसर्जन, पूजा समिति के सदस्यों में नाराजगी

बोले समिति के सदस्य... कृत्रिम तालाब में बहुत कम था पानी, ध्वस्त था ट्रैफिक सिस्टम

♦ गोताखोरों का प्रतिमाओं पर चढ़कर उसे पानी में डूबोने का प्रयास किया जाना देवी देवताओं का अपमान, धार्मिक आस्था पर कुठाराघात

केटी न्यूज/डुमरांव

मां दुर्गा की प्रतिमाओं का विसर्जन सोमवार की देर रात हुआ। पूजा समितियों द्वारा प्रतिमाओं का नगर भ्रमण कराने के बाद टीचर ट्रेनिंग कॉलेज के पीछे नगर परिषद द्वारा खुदवाए गए कृत्रिम तालाब में विसर्जन किया गया। यह सिलसिला रात डेढ़ बजे तक जारी था। हालांकि इस बार का प्रतिमा विसर्जन विवादों से घिरा रहा। एक तरफ कई पूजा समिति के सदस्यों ने आरोप लगाए हैं कि विसर्जन के लिए नगर परिषद प्रशासन द्वारा जो कृत्रिम तालाब खुदवाया गया था उसमें पर्याप्त पानी नहीं था। जिसके कारण प्रतिमा पानी में सही से विसर्जित नहीं हो पा रही थी। ऐसे में वहां तैनात गोताखोर प्रतिमाओं पर चढ़कर उसे पानी में डूबोने का प्रयास कर रहे थे। पूजा समिति के लोगों ने इसे देवी-देवताओं का अपमान बताया है। उनका कहना है कि नौ दिनों तक जिन्हें विधि-विधान से पूजा गया उनका इस तरह अनादर करते हुए विदाई दी जाएगी, इसकी उन्होंने कल्पना नहीं की थी।

वहीं प्रशासन द्वारा प्रतिमाओं का विसर्जन कराने के लिए जिस रास्ते का चुनाव किया गया था वह भी काफी संकरा था, जिस कारण शाम से मध्य रात्रि तक ट्रैफिक व्यवस्था पूरी तरह से बेपटरी हो गई थी। आलम यह था कि पूजा समिति सदस्यों को अपनी प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए घंटों सड़क पर खड़ा होना पड़ा था। सड़क पर भीषण जाम के कारण पूजा समिति सदस्यों को खासी परेशानियों का सामना भी करना पड़ा। जाम के कारण ही प्रतिमाओं के विसर्जन में विलंब भी हुआ। **इस संबंध में केशव टाइम्स ने पूजा समिति सदस्यों से बात कर उनकी समस्याओं को साझा किया है...**

1 – **रिंकू कुमार** – आदि शक्ति मां दुर्गा पूजा समिति अध्यक्ष रिंकू कुमार का कहना है कि कृत्रिम तालाब में पर्याप्त पानी नहीं था, जिस कारण मूर्तियों का विसर्जन नहीं हो पा रहा था। उन्होंने कहा कि प्रशासन द्वारा तैनात गोताखोर मूर्तियों पर खड़े हो उसे पानी में डूबाने का प्रयास कर रहे थे। यह देख पीड़ा हो रही थी कि ऐसा करके गोताखोर देवी-देवताओं का अपमान कर रहे थे।

2 – **संतोष कुमार** – शहीद गेट दुर्गा पूजा समिति के संतोष कुमार की मानें तो वे लोग अपनी मूर्ति का नगर भ्रमण कराते हुए चौक पर पहुंचे थे कि भयंकर जाम लग गया। रात 12 बजे तक जाम से मुक्ति नहीं मिली। मूर्ति को विसर्जन स्थल तक ले जाने की कोई व्यवस्था नहीं थी, लिहाजा मजबूर हो छठिया पोखरा में ही विसर्जन करना पड़ा।

3 – **कृष्णा कुमार** – नवयुवक दल दुर्गा पूजा समिति फूलचंद कानू पथ के कृष्णा कुमार ने बताया कि प्रतिमा विसर्जन के दौरान स्टेशन रोड में मूर्तियों की लंबी लाईन लग गई थी। निर्धारित स्थल पर जाने के लिए टिचर टेर्जनिंग कॉलेज मोड़ के पास काफी संकरा रास्ता था। जिस कारण सभी पूजा समिति सदस्यों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

4 – **दिव्यदीप केशरी** – नया थाना के पास स्थित पूजा समिति के दिव्यदीप केशरी की माने तो स्टेशन रोड में लंबा जाम लगने से प्रतिमा विसर्जन के लिए खुदवाए गए कृत्रिम तालाब तक पहुंचने में घंटों जाम में फंसना पड़ा। जिस कारण सदस्यों को काफी परेशानी हो रही थी। दिव्यदीप ने कहा कि उक्त जगह पर जाने के लिए मुख्य सड़क से काफी पतला रास्ता होने से एक समय में मात्र एक ही वाहन पास कर रहा था। जिस कारण सभी को फजीहत उठानी पड़ी।

5 – **गोलू कुमार** – श्री वीर बालक दुर्गा पूजा समिति जवाहिर मंदिर के गोलू कुमार ने बताया कि विसर्जन स्थल पर कोई व्यवस्था नहीं थी। कृत्रिम तालाब में बहुत कम पानी था, उपर से वहां की मिट्टी धंस रही थी। उन्होंने कहा कि प्रतिमा विसर्जन के लिए नगर परिषद की व्यवस्था व तैयारी संतोषप्रद नहीं थी। जिससे विसर्जन के दौरान भारी अव्यवस्था हो गई थी। उन्होंने कहा कि गोताखोर बलपूवर्क मूर्तियों को पानी में डूबोने का प्रयास कर रहे थे। यह देवी देवताओं का अपमान है।

6 – **अजय कुमार** – आदि शक्ति मां दुर्गा पूजा समिति व्यापार मंडल के अजय कुमार का कहना है कि दुगार्पूजा बड़ा त्योहार है तथा इस बार डुमरांव में दो दर्जन से अधिक पंडालों में मूर्तियों को स्थापित किया गया था। इसे देखते हुए विसर्जन स्थल का दायरा भी बड़ा होना चाहिए था, जबकि ऐसा नहीं हुआ। वहीं, जाम से निजात दिलाने का कोई फौरी कदम नहीं उठाया गया। जिस कारण मध्य रात्रि तक पूजा समिति के सदस्य मूर्तियों के विसर्जन के लिए परेशान थे।

क्या कहते है ईओ

नगर परिषद द्वारा जो कृत्रिम तालाब खुदवाया गया था उसमें 14 फीट तक पानी भरा गया था। पानी की कोई कमी नहीं थी, ऐसा आरोप बेबुनियाद है। सड़क पर जाम हटवाना स्थानीय प्रशासन की जिम्मेवारी है। नगर परिषद ने प्रतिमा विसर्जन के लिए अपने स्तर से काफी अच्छी तैयारी की थी। इसका परिणाम भी सामने आया कि उक्त जगह सभी प्रतिमाओं का विसर्जन हो गया।

500 रुपए के जाली नोट मामले में पुलिस ने तेज की छापेमारी

केटी न्यूज/डुमरांव

शनिवार की देर शाम कोरानसराय थाना क्षेत्र के स्थानीय बाजार से 500 रूपए के 14 जाली नोट के साथ एक युवक के पकड़े जाने की घटना को पुलिस ने काफी गंभीरता से लिया है। इस मामले में पुलिस काफी सक्रिय है तथा छापेमारी अभियान तेज कर दी है। जाली नोट के साथ पकड़े गए युवक के बयान के आधार पर पुलिस संभावित ठिकानों पर छापेमारी कर रही है। पुलिस को अनुमान है कि अभी और जाली नोट मिल सकते है। वही पुलिस जाली नोट के खेल में शामिल असली सरगना को दबोचने के फिराक में लग गई है।

इस घटना के बाद कोरानसराय के साथ ही मुरार थाने की पुलिस भी चौकन्ना है। चूकि जाली नोटों के साथ पकड़ा गया मुकेश साह मुरार थाना क्षेत्र के फफदर गांव का निवासी है, जिस कारण मुरार पुलिस भी अपने इलाके में छापेमारी कर रही है। हालांकि अभी तक इस मामले में पुलिस को कोई बड़ी सफलता नहीं मिली है, लेकिन पुलिस की माने तो जाली नोटों के कारोबार में शामिल लोगों को बेनकाब किया जाएगा। पुलिस हर हाल में सरगना तक पहुंचने की कोशिश कर रही है। जानकारों का कहना है कि यदि पुलिस की यह कोशिश कामयाब हुई तो कई सफेदपोश भी बेनकाब हो सकते है।

दीपावली और छठ को देखते हुए बक्सर में वंदे भारत समेत पांच स्पेशल ट्रेनों का होगा ठहराव

केटी न्यूज/बक्सर

त्योहारी सीजन में बक्सर के यात्रियों को बड़ी राहत मिलने जा रही है। दीपावली और छठ के दौरान बढ़ती भीड़ को देखते हुए रेलवे ने नई दिल्ली-पटना, बरौनी, और जयनगर के लिए विशेष ट्रेनों का संचालन शुरू किया है, जिनका स्टॉपेज बक्सर में भी होगा। इनमें वंदे भारत स्पेशल और तेजस सुपरफास्ट फेस्टिवल स्पेशल ट्रेनों समेत कुल पांच विशेष ट्रेनें शामिल हैं।

वंदे भारत स्पेशल ट्रेनः गाड़ी संख्या 02252/02251 वंदे भारत स्पेशल ट्रेन नई दिल्ली से पटना के बीच 30 अक्टूबर, 01, 03, और 06 नवंबर 2024 को चलाई जाएगी। इस ट्रेन का बक्सर में स्टॉपेज होगा, जहां यह शाम 6:50 बजे पहुंचेगी। वापसी में, ट्रेन 31 अक्टूबर, 02, 04, और 07 नवंबर को पटना से प्रस्थान करेगी और बक्सर में सुबह 08:47 बजे रुकेगी।

तेजस सुपरफास्ट फेस्टिवल स्पेशल ट्रेनः गाड़ी संख्या 02248/02247 नई दिल्ली से पटना के बीच 29, 31 अक्टूबर, 02, और 05 नवंबर 2024 को चलाई जाएगी। बक्सर में इसका स्टॉपेज शाम 6:35 बजे रहेगा। वापसी में, यह ट्रेन 30 अक्टूबर, 01, 03, और 06 नवंबर को पटना से सुबह 08:47 बजे बक्सर पहुंचेगी।

दिल्ली-पटना सुपरफास्ट फेस्टिवल स्पेशलः गाड़ी संख्या 02250/02249 दिल्ली से 24 और 31 अक्टूबर को प्रस्थान करने वाली यह ट्रेन बक्सर में अगले दिन 2:35 बजे रुकेगी, जबकि वापसी में 25 अक्टूबर और 01 नवंबर को बक्सर में शाम 7:40 बजे पहुंचेगी।

नई दिल्ली-बरौनी फेस्टिवल स्पेशलः गाड़ी संख्या 04054/04053 27, 30 अक्टूबर, 02 और 05 नवंबर 2024 को चलेगी और बक्सर में अगले दिन सुबह 4:45 बजे रुकेगी। वापसी में, यह ट्रेन 28 और 31 अक्टूबर, 03 और 06 नवंबर को बरौनी से प्रस्थान करेगी।

नई दिल्ली-जयनगर फेस्टिवल स्पेशलः गाड़ी संख्या 04052/04051 का बक्सर में स्टॉपेज सुबह 4:30 बजे होगा, जबकि वापसी में यह ट्रेन अगले दिन 4:30 बजे बक्सर पहुंचेगी।

जलजमाव की समस्या से नहीं उभर पायी टेक्सटाइल्स कॉलोनी की जनता

केटी न्यूज/डुमरांव

नगर परिषद के अधीन आने वाला टैक्सटाइल्स कॉलोनी की जनता लगभग दो दशकों से समस्याओं के मकड़जाल में फंस कराह रही है। कॉलोनी में रोड नाली-गली के साथ ही जलमाव की समस्या को लेकर लोगों को घर से निकलना भी दुभर हो गया है। नया बोर्ड बनने के बाद लोगों में आस जगी थी कि कॉलोनी में नाली, गली और जलजमाव की समस्या से निजात मिलेगी, लेकिन बोर्ड के गठन के बाद कॉलोनी में कोई कार्य नहीं किया गया है। कॉलोनी में कई ऐसे प्रवेश द्वारा हैं, जो बना ही नहीं है। बारिश में कीचड़ और जलजमाव से होकर गुजरना लोगों की मजबूरी बनी रहती है। मालूम हो कि टैक्सटाइल कॉलानी में अधिकांश वेसे लोगों ने घर बनाया है जो सर्विस से अवकाश प्राप्त कर शहरी सुख पाने के लिए घर बनाए हैं, सेना के जवान अधिक हैं। कुछ ऐसे लोग भी इस कॉलोनी में किराए का घर लिये हैं, जो अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा सकें। लिहाजा किराए पर घर देने के लिए कॉलोनी में बहुमंजिले इमारतों की भरमार है। ऐसे में नाली-गली का समूचित व्यवस्था नहीं होने से लोगों को शहरी सुख पाने का सपना धूमिल पड़ता जा रहा है। जो बहुमंजिले इमारत बनवाए हैं, घर से पानी निकलने की व्यवस्था तो किये हैं, लेकिन घर के भीतर तक ही सीमित है। जो जमीन खरीद कर छोड़ दिये हैं, उनके जमीन में पानी जाकर जमा हो जाता है।

जासो, सरेंजा और कमरपुर पंचायत टीबी मुक्त, मुखिया को भेजा गया शुभकामना पत्र

तीन पंचायत टीबी मुक्त घोषित, स्वास्थ्य मंत्री ने दी बधाई

केटी न्यूज/बक्सर

प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत बक्सर जिले को टीबी मुक्त करने को लेकर सर्वप्रथम पंचायतों को टीबी मुक्त करने की प्रक्रिया चल रही है। इस क्रम में जिले के जासो, सरेंजा और कमरपुर पंचायत को टीबी मुक्त घोषित किया जा चुका है। जिसको लेकर राज्य स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने संबंधित पंचायतों के मुखिया को शुभकामना सह बधाई पत्र जारी किया है। जिसमें राज्य स्वास्थ्य मंत्री ने जासो पंचायत के मुखिया चंदन पाठक, सरेंजा पंचायत की मुखिया सुक्राजी देवी व कमरपुर पंचायत की मुखिया कमलावती देवी को पत्र भेज कर टीबी मुक्त पंचायत कार्यक्रम पहल में अमूल्य सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

राज्य स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने जारी बधाई पत्र में बताया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने टीबी मुक्त भारत का महत्वकांक्षी लक्ष्य रखा है। इस क्रम

में सभी बिहारवासी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के दिशा-निर्देश में पूरे बिहार में स्वास्थ्य व्यवस्था को सशक्त करने का काम कर रहे हैं। वहीं, स्वस्थ बिहार- सशक्त बिहार का सपना बिना पंचायत प्रतिनिधि के सहयोग के अधूरा है। जिसमें आप सभी जनप्रतिनिधियों के प्रयासों एवं सहयोग से जासो, सरेंजा और कमरपुर पंचायत में स्वास्थ्य कार्यक्रम लगातार सशक्त हो रहे हैं, जिसका परिणाम है कि कमरपुर पंचायत को टीबी मुक्त का गौरव प्राप्त हुआ है।

जनप्रतिनिधियों का प्रयास रहा सराहनीय: डॉ शालिग्राम पांडेय

जिला यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ. शालिग्राम पांडेय ने बताया कि जिले के इन तीनों पंचायतों के जनप्रतिनिधियों का प्रयास सराहनीय रहा। वहीं, दूसरी ओर सरकार ने टीबी मरीजों के कारण खिलाफ उनकी लड़ाई को मजबूत करने के लिए केंद्र इस सरकार ने टीबी मरीजों के लिए बहुत बड़ी राहत की घोषणा की है। निक्षय पोषण योजना के तहत टीबी मरीजों को मिलने वाली राशि दोगुनी कर दी गई है। टीबी मरीजों को अब तक 500 रुपये प्रतिमाह मिलते थे। अब इसे बढ़ा कर एक हजार रुपये किया गया है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अपर सचिव एवं मिशन निदेशक आराधना पटनायक द्वारा जारी पत्र के अनुसार अप्रैल 2018 से राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के तहत टीबी के इलाजरत मरीजों को 500 रुपये की राशि दी जाती थी।

13 नवंबर से 14 दिसंबर तक होगा विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेला का आयोजन

केटी न्यूज/छपरा

विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेला के आयोजन को लेकर सोनपुर नगर पंचायत सभागार में सारण सांसद राजीव प्रताप रूड़ी की उपस्थिति में स्थानीय जनप्रतिनिधिगण, मेला कमिटी के सदस्यगण, जिला एवं अनुमंडल स्तर के अधिकारियों की मौजूदगी में बैठक की गई। इस बैठक में बताया गया कि इस वर्ष सोनपुर मेला 13 नवंबर से शुरू होकर 14 दिसंबर तक चलेगा। बैठक में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों से महत्वपूर्ण फीडबैक एवं सुझाव प्राप्त किया गया। सड़कों एवं स्ट्रीट लाइटों की मेला से पूर्व मरम्मती कराने,

सोनपुर में स्थाई सीसीटीवी, महिलाओं के लिये शौचालय व्यवस्था,स्मारिका प्रकाशन आदि जैसे सुझाव महत्वपूर्ण सुझाव दिये गए। सोनपुर मेला क्षेत्र के समग्र विकास हेतु केंद्र सरकार द्वारा 25 करोड़ रुपये स्वदेश दर्शन योजना 2.0 के तहत स्वीकृति दी गई है। सम्पूर्ण मेला क्षेत्र के समग्र विकास हेतु पर्यटन विभाग द्वारा कार्ययोजना तैयार की जा रही है। इस कार्य योजना के ब्लूप्रिंट का प्रेजेंटेशन भी पॉवरपॉइंट के माध्यम से चयनित एजेंसी द्वारा किया गया। अंतिम रूप से स्वीकृत कार्ययोजना के अनुरूप मेला क्षेत्र को स्थाई रूप से विकसित करने हेतु कार्रवाई की जायेगी।

मेले में आने वाले लोगों के लिए होगी विशेष सुविधा

मेले में आने वाले मेहमानों और पशुओं के लिए पीने के पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी। चौबीसों घंटे एम्बुलेंस सुविधा के साथ-साथ पशु चिकित्सा सेवाएं भी उपलब्ध रहेंगी। सोनपुर मेला स्थल पर आपदा प्रबंधन टीम और भगदड़ नियंत्रण दल भी मौजूद रहेंगे। कार्तिक पूर्णिमा स्नान के दौरान शौचालय और चेंजिंग रूम की व्यवस्था रहेगी। मेले का प्रचार-प्रसार पूरे जोर-शोर से किया जाएगा। स्थानीय इलाकों में माइकिंग की जाएगी, मेला क्षेत्र के प्रवेश के सभी मार्गों पर होर्डिंग लगाये जाएंगे। मेले में आयोजित दैनिक कार्यक्रमों को लोगों तक पहुंचाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया जाएगा।

एक नजर

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से नशा मुक्ति के लिए चलाया गया जागरूकता अभियान

छपरा। जिलाधिकारी अमन समीर के निदेशानुसार मढ़ौरा अनुमंडल के चिन्हित महादलित टोलों में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को नशा मुक्ति के प्रति जागरूक किया जा रहा है। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग से सम्बद्ध कला जत्था के कलाकारों द्वारा गीत संगीत एवं नाटक के माध्यम से मनोरंजक तरीके से लोगों को शराब/अन्य मादक पदार्थों के सेवन से होने वाली हानि के बारे में जागरूक करते हुये नशा मुक्त रहने हेतु प्रेरित किया जा रहा है। कार्यक्रम का आयोजन मढ़ौरा अनुमंडल के विभिन्न प्रखण्डों में स्थित कुल 15 महादलित टोलों में कराया जा रहा है।अधिक से अधिक लोगों को जागरूक करने में स्थानीय जनप्रतिनिधियों के भी सहयोग लिया जा रहा है। स्थानीय विकास मित्र द्वारा इन कार्यक्रमों का पर्यवेक्षण किया जा रहा है। मंगलवार को अनुमंडल पदाधिकारी मढ़ौरा ने कला जत्था की टीम की प्रस्तुति का स्वयं अवलोकन किया तथा इसे महादलित टोलों के लिये रवाना किया।

केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने अंगूर बागान गांव में की सदस्यता अभियान की शुरुआत

जहानाबाद। मखदुमपुर प्रखंड के अंगूर बागान गांव में पूर्व सीएम सह केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने हम पार्टी के सदस्यता अभियान की शुरूआत किया। इस दौरान श्री मांझी ने पार्टी के कई सक्रिय सदस्य को पर्ची देकर पार्टी में जोड़ा। वहीं मांझी अंगूर बागान गांव में आयोजित झूमर प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि झूमर हमारी पुरानी परंपरा है जो हमारे समाज के लोग खुशी पूर्वक मानते हैं वही झूमर में कई गांव की मंडली पहुंचकर अपना कर्तव्य दिखाए मौके पर पार्टी के टेकारी विधायक अनिल कुमार राष्ट्रीय सचिव रितेश कुमार उर्फ चुन्नू शर्मा वीरेंद्र सिंह पंपी शर्मा जिला अध्यक्ष मनीष शर्मा जिला पार्षद संगीता देवी मुखिया जितेंद्र सिंह उर्फ पप्पू सिंह पूर्व मुखिया अवधेश शर्मा राजाराम मांझी समेत कई लोग मौजूद थे ।वही झूमर देखने के लिए काफी संख्या में लोगों की भीड़ जमा थी। बताते चले की पूर्व सीएम सह केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने अंगूर बागान में हम पार्टी के सदस्यता अभियान की शुरूआत किया है एवं झूमर प्रतियोगिता का उद्घाटन किया है।

खुदखुशी के इरादे से कुएं में कूदी महिला एक सप्ताह बाद भी जिंदा मिली

छपरा। छपरा से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। जहां खुदखुशी के इरादे से कुएं में कूदने वाली महिला एक सप्ताह बाद जिंदा बच गई। ये घटना सारण जिले के पानापुर थाना क्षेत्र महम्मदपुर गांव की है। दरसल 50 वर्षीय महिला पारिवारिक कलह से तंग आकर एक सप्ताह पूर्व घर से लापता हो गई थी। परिजनों ने महिला का काफी तलाश की, लेकिन उसका पता नहीं चल पाया। इसी बीच लगभग 6 दिन बाद स्थानीय लोगों को कुएं के अंदर से कहराने की आवाज सुनाई दी. ग्रामीणों ने जाकर देखा तो कुएं में गांव की लापता महिला दर्द से कराह रही थी। जिसके बाद आनन-फानन में व्यवस्था कर ग्रामीणों ने उस महिला को कुंआ बाहर निकाला। हालांकि कई दिनों तक कुएं में रहने के कारण महिला काफी कमजोर हो गई है। जिसका स्थानीय स्तर पर इलाज कराया जा रहा है।

खबरें फटाफट

पिकअप के पलटने से नौ मजदूर घायल

छपरा। तरैया थाना क्षेत्र के देवरिया गांव स्थित एसएच 104 मुख्य सड़क पर तेजगति में आकर एक पिकअप गाड़ी पलट गयी जिसमें नौ मजदूर गम्भीर रूप से घायल हो गए हैं। इनमें मढौरा थाना क्षेत्र रामपुर गांव के अनिल मांझी, अंकित कुमार, विकास कुमार गम्भीर रूप से घायल हैं। उक्त घायलों को रेफरल अस्पताल में प्राथमिक उपचार कर पीएमसीएच रेफर कर दिया गया है ।वही पिकअप में एक सवार व्यक्ति अन्य गम्भीर रूप से घायल छह मजदूरों का उपचार कराने पटना ले गए। इलेक्ट्रिक कार्य में काम करने वाले मजदूर सिवान की ओर जा रहे थे तभी यह हादसा हुआ। पुलिस घटना स्थल पहुंचकर उक्त पिकअप गाड़ी को अपने कब्जे में लेकर मामले की छानबीन कर रही है। वही गाड़ी चालक फरार है।

दो दिनों से लापता ईट भट्ठा संचालक का शव बरामद

छपरा। एकमा थाना क्षेत्र के गलिमापुर से दो दिनों से लापता ईंट भट्ठा व्यवसायी का शव सोमवार को खेत से मिला। मृतक शख्स के शरीर पर गहरे जख्म के निशान थे। अनुमान लगाया जा रहा कि उनकी पीट-पीटकर हत्या की गई है। वहीं, व्यवसायी के पांव में भी साइलेंसर से जले के निशान हैं। जहां से उनका शव मिला वहां भी खून पसरा हुआ था। गांव की महिलाओं ने शव देखा जिसके बाद परिजनों को सूचित किया। फिर परिजनों ने पुलिस को जानकारी दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है ।बता दें कि मृतक काशीनाथ सिंह 12 अक्टूबर की शाम से लापता थे। उनको तलाशने के लिए सोशल मीडिया पर फोटो पोस्ट की गई थी। हत्या के स्पष्ट कारणों का जानकारी नहीं मिली है, लेकिन परिजनों ने पुराने विवाद में हत्या होने की बात कही है ।काशीनाथ सिंह के बेटे ने बताया कि हम लोगों का ईंट भट्ठा का व्यवसाय है। शनिवार की शाम में पिताजी वहीं जाने का बोलकर घर से निकले। देर रात तक वापस नहीं आए। घर वालों को लगा कि चिमनी पर ही सो गए होंगे। सुबह में चिमनी पर पता किए जाने के बाद कोई जानकारी नहीं मिली। सुबह खेत में काम करने वाली महिलाओं ने शव को देखा।

कोईलवर थाना क्षेत्र के कपिल देव चौक पर मंगलवार की सुबह घटी घटना

आरा में हथियारबंद अपराधियों ने रंगदारी नहीं देने पर खैनी दुकानदार को मारी गोली

- जख्मी दुकानदार का आरा शहर के बाबू बाजार स्थित अस्पताल में कराया जा रहा इलाज
- घटनास्थल से पुलिस ने दो धोखा किया बरामद

केटी न्यूज/आरा

भोजपुर जिले के कोईलवर थाना क्षेत्र के कपिल देव चौक पर मंगलवार के सुबह हथियारबंद अपराधियों ने रंगदारी ना देने पर दुकान पर चढ़ खैनी दुकानदार को गोली मार दी। जख्मी दुकानदार काफी करीब से दो गोली मारी गई है। जिसमें एक गोली दाहिने साइड हाथ एवं दाहिने साइड सीने में लगी है।गोली लगते ही वह खून से लतपथ होकर जख्मी हालत में जमीन पर गिर पड़े। इसके बाद तीनों अपराधी पर सवार होकर मौके से फरार हो गए। अपराधियों द्वारा करीब तीन राउंड फायरिंग करने की बात सामने आ रही है। वही घटना को लेकर आसपास के इलाके में सनसनी मच गई है। जानकारी के अनुसार जख्मी दुकानदार कोईलवर थाना क्षेत्र के कोईलवर गांव निवासी स्व.कपूर चंद चौधरी के 50 वर्षीय पुत्र राम दयाल चौधरी है। वह पेशे से दुकानदार है एवं करीब 34 वर्षो से कपिल देव चौक पर खैनी दुकान चलाते हैं।

उधर घटना की सूचना मिलते ही सदर एसडीपीओ-टू रंजीत कुमार सिंह कोईलवर थाना के प्रभारी थानाध्यक्ष सुभाष कुमार मंडल पुलिस बल के साथ फॉरेन घटनास्थल पर पहुंचे मामले की छानबीन में जुट गए हैं। वहीं पुलिस ने घटनास्थल से दो खोखा भी बरामद किया है। इसके अलावा पुलिस आसपास के इलाके में लगे सभी सीसीटीवी कैमरे को भी खंगाल रही है। इधर खैनी दुकानदार राम दयाल चौधरी ने बताया कि 8 अक्टूबर की रात करीब साढ़े आठ बजे उनके मोबाइल पर एक व्यक्ति का कॉल आया था। जिसने बताया कि मैं सिपाही गैंग से बोल रहा हूं और हम लोग खाने पीने वाले लोग हैं। तुम हमे पांच लाख रुपया दे दो। तभी वह अपने मोबाइल के स्पीकर ऑन कर उसकी आवाज को रिकॉर्ड करने लगे। तभी उसने कहा कि बेटा अब तुम जाओगे। जिसको लेकर 10 अक्टूबर को उन्होंने स्थानीय थाना में लिखित आवेदन देखकर इस घटना की जानकारी दी थी। मंगलवार की सुबह जब वह अपने खैनी दुकान पर बैठे हुए थे। तभी एक बाइक पर सवार तीन हथियारबंद अपराधी आए और बाइक से उतारकर उनके दुकान पर गए और कहां की भईया ने कुछ कहा है तो उन्होंने कहा कि कौन भईया। कोई भईया ने कुछ नहीं कहा है। आप लोगों को खैनी लेना है तो बोलिए। इसके बाद उन्होंने हथियार निकाल कर ताबड़तोड़ उन्हें गोली मार दी। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गए। इसके बाद तीनों अपराधी बाइक पर सवार होकर वहां से फरार हो गए। वहीं दूसरी ओर जख्मी दुकानदार राम दयाल चौधरी ने अपने गांव में व दुकान के आसपास किसी भी व्यक्ति से किसी भी प्रकार की दुश्मनी एवं विवाद की बातों से साफ इनकार किया है। इसके अलावा उन्होंने 8 अक्टूबर को रात में मोबाइल पर कॉल आए सिपाही गैंग पर रंगदारी मांगने एवं ना देने पर गोली मारने का आरोप लगाया है। बहरहाल पुलिस अपने स्तर से मामले की छानबीन कर रही है। जबकि इलाज कर रहे हैं सर्जन चिकित्सक डॉ.विकाश सिंह ने बताया कि एक व्यक्ति गोली से जख्मी हालत में आए हैं और उन्हें दो गोली लगी है। एक गोली दाहिने साइड सीने में लगी है जो पेट में जाकर फंस गई है। जबकि दूसरी गोली उनके दाहिने हाथ में लगी है जो आरपार हो गई है। अभी उनके पेट का सीटी स्कैन कराया जा रहा है और तत्काल ब्लड का इंतजाम करने के लिए कहा गया है। सीटी स्कैन रिपोर्ट आने के बाद ही तत्काल ऑपरेशन कर उनका बुलेट निकल जाएगा। हालांकि अभी मरीज स्टेबल है।

जहानाबाद में प्रेम प्रसंग में अपहरण के बाद युवक की हत्या, आक्रोशित परिजनों ने किया सड़क जाम

जहानाबाद। एक युवक का अपहरण कर हत्या कर दिए जाने का मामला सामने आया है । हत्या के पीछे प्रेम प्रसंग का मामला बताया जा रहा है। घटना से आक्रोशित परिजनों ने जहानाबाद सदर अस्पताल के सामने सड़क को घंटे जाम रखा और अपराधियों के गिरफ्तारी की मांग कर रहे थे। इस दरम्यान मृतक के परिजनों और पुलिस के बीच नोक झोंक भी हुई । हालांकि पुलिस ने अक्रोशित लोगों को समझाबुझा कर जाम को समाप्त कर दिया है। दरअसल जहानाबाद के काको थाना के भेलावर ओपी के भरथूआ गांव के युवक संजीत कुमार का अपहरण दो दिन पूर्व कर लिया गया था । इस बाबत परिजनों ने भेलावर ओपी में लिखित शिकायत भी की थी परंतु युवक का कुछ अतापता नही चला। इसी बीच जहानाबाद के कढ़ौना और नदौल के बीच रेलवे ट्रैक पर एक युवक की लाश मिली जिसे रेलवे पुलिस ने अज्ञात लाश समझकर पोस्मार्टम करा दिया। बाद में यह लाश की पहचान अपहृत युवक संजीत कुमार के रूप में हुई। शव की पहचान होते ही परिजन आक्रोशित हो गए और जाम कर दिया। जाम को हटाने को लेकर ट्रैफिक डीएसपी नवनीत कुमार और भेलावर ओपी अध्यक्ष दुर्गा नंद मिश्रा को काफी मशक्कत करना पड़ा।

विसर्जन के दौरान जाति सूचक गाना बजाने से मना करने पर दो गुटों के बीच रोड़ेबाजी

केटी न्यूज/आरा

भोजपुर जिले के धोबहा थाना क्षेत्र के सलेमपुर गांव में सोमवार की शाम मूर्ति विसर्जन के दौरान जाति सूचक गाना बजाने को लेकर दो गुटों के बीच जमकर रोडबाजी हुई। जिसमें रोड़ेबाजी के दौरान होमगार्ड जवान व सिपाही तीन पुलिसकर्मी जख्मी हो गए। इसके अलावा पुलिस की प्राइवेट गाड़ी भी क्षतिग्रस्त हो गई। इसके बाद जख्मी पुलिस कर्मियों का इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। घटना को लेकर लोगों के बीच काफी देर तक अफरा-तफरी मची रही। जानकारी के अनुसार जख्मियों में होमगार्ड जवान धारीक्षण दुबे के 55 वर्षीय पुत्र सियाराम दुबे,स्व.प्रभाहंस सिंह के 54 वर्षीय पुत्र योगेंद्र सिंह एवं उदय पासवान के 24 वर्षीय पुत्र व सिपाही रोहित कुमार शामिल है। वह तीनों धोबहा थाना में कार्यरत हैं।

इधर होमगार्ड जवान सियाराम दुबे ने बताया कि वे लोग मूर्ति विसर्जन के दौरान ड्यूटी पर थे। तभी मूर्ति विसर्जन करने जा रहे लोगों द्वारा जाति सूचक गाना बजा दिया गया। जिसको लेकर दूसरे पक्ष के लोग भड़क उठे और उनके बीच पहले धक्का-मुक्की हुई। इसके बाद दोनों पक्षों द्वारा रोड़ीबाजी कर दी गई। जब पुलिस उन्हें मना करने गई तो उन लोगों द्वारा पुलिस पर भी रोडबाजी कर दी गई। जिसमें वह वह उनके साथी होमगार्ड जवान योगेंद्र सिंह एवं सिपाही रोहित कुमार जख्मी हो गए। इसके अलावा एक वहां भी क्षतिग्रस्त हो गई और कई ग्रामीण अभियंशिक रूप से जख्मी हो गए। इसके बाद सूचना पाकर धोबहा थानाध्यक्ष संजीव कुमार अतिरिक्त पुलिस बल के साथ फॉरेन घटनास्थल पर पहुंचे और मामले को शांत कराया। वहीं दूसरी और पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए छह लोगो को हिरासत में भी लिया है। हालांकि इसकी अधिकारी पुष्टि नहीं हो पाई है।

आरा में नवविवाहिता की दहेज की मांग को लेकर गला दबाकर हत्या, ससुराल के लोग आए दिन करते थे परेशान

केटी न्यूज/आरा

शहर से सटे मुफस्सिल थाना क्षेत्र के महुली गांव में सोमवार की सुबह गला दबाकर एक नवविवाहिता की हत्या कर दी गई। घटना को लेकर गांव एवं आसपास के इलाके में सनसनी मच गई है। वहीं मृतका के परिजन द्वारा पैसे की मांग को लेकर ससुराल वालों पर गला दबाकर उसकी हत्या करने का आरोप लगाया जा रहा है। जानकारी के अनुसार मृतका मुफस्सिल थाना क्षेत्र के महुली गांव मंटू पासवान की 19 वर्षीया पत्नी गुड़िया कुमारी है।

इधर मृतका के चचेरे भाई गोपाल पासवान ने बताया कि धोबहा थाना क्षेत्र के सलेमपुर गांव निवासी व उसके चाचा ओम प्रकाश पासवान ने अपनी पुत्री गुड़िया कुमारी की शादी इसी वर्ष 24 अप्रैल को मुफस्सिल थाना क्षेत्र के महुली गांव निवासी मन पासवान के पुत्र मंटू पासवान से लेनदेन के साथ एवं पूरे हिंदू रीति-रिवाज के साथ की थी। शादी के समय उन्होंने दहेज में एक बाइक भी दिया था पर नगदी रुपए में कुछ कम दिए थे। शादी के कुछ दिन बीत जाने के बाद से ही उसके पति व ससुराल वालों द्वारा नगदी रुपए में मिले कम पैसे की मांग करने लगे और उसे कहने लगे कि जाओ और अपने मायके से मांग कर पैसा ले आओ। जिसको लेकर उसे बराबर प्रताड़ित किया जाता था। इसके बाद उसके ससुराल वालों द्वारा कुछ दिन पूर्व उसे अपने मायके भेज दिया गया। जिसके बाद वे लोग उसे ससुराल नहीं भेज रहे थे। लेकिन उसका पति व ससुर उसके मायके गए और कहां की अब हम लोग इसे ठीक से रखेंगे। यह कह कर उसे वापस ससुराल ले आए। इसी बीच सोमवार की सुबह उसके ससुर मन पासवान द्वारा फोन कर सूचना दी गई कि उसकी मौत हो गई है। सूचना पाकर जब वे लोग उसके ससुराल महुली गांव पहुंचे तो उन्होंने देखा कि उसका शव ऑटो में पड़ा है और ससुराल के सभी लोग फरार हैं इसके पश्चात परिजन द्वारा इसकी सूचना स्थानीय थाना को दी। सूचना पाकर स्थानीय थाना मौके पर पहुंच शव को अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। वहीं दूसरी तरफ मृतका के चचेरे भाई गोपाल पासवान ने उसके पति मंटू पासवान,ससुर मन पासवान,सास एवं ससुराल के अन्य लोगों पर शादी के समय दहेज में नगदी में मिले कम रुपए की मांग को लेकर उसकी गला दबाकर हत्या करने का आरोप लगाया है। बहरहाल पुलिस अपने स्तर से मामले की छानबीन कर रही है।

बताया जाता है कि मृतका अपने तीन बहन व एक भाई में बड़ी थी। उसके परिवार में दो बहन खुशी कुमारी,पूजा कुमारी एवं एक भाई शंकर पासवान है। उसकी मां निंता देवी की मौत वर्ष 2015 में बीमारी के कारण हो गई थी। घटना के बाद मृतका के घर में हाहाकार मच गया है।

शारदीय नवरात्र में प्रदेश के एक दर्जन से अधिक जिलों में बेटियां बनीं एक दिन की डीएम-एसपी

केटी न्यूज/लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बेटियों को आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और प्रोत्साहित करने के लिए लगातार कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इसी के तहत सीएम योगी के निर्देश पर शारदीय नवरात्र में मिशन शक्ति के तहत प्रदेश में कई कार्यक्रम आयोजित किये गए। इसी कड़ी में शारदीय नवरात्र के अवसर पर प्रदेश के एक दर्जन से अधिक जिलों में बेटियों को प्रोत्साहित करने के लिए एक दिन का डीएम, सीडीओ, एसडीएम और एसपी बनाया गया। इस दौरान बेटियों ने शिकायतों को सुन त्वरित निस्तारण भी किया। सीएम योगी का आभार जताते हुए बेटियों ने कहा कि इस पहल से आत्मविश्वास बढ़ा है। उन्होंने कड़ी मेहनत कर भविष्य में प्रशासनिक सेवा में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने की बात भी कही।

अग्रिमा बनीं लखीमपुर की डीएम, दिए कई निर्देश

लखीमपुर खीरी की डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने बताया कि सीएम योगी की मंशा के अनुरूप मिशन शक्ति और बेटी बचाओ बेटी पढ़ओ के तहत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार की आठवीं की छात्रा अग्रिमा धवन ने डीएम की कुर्सी संभाली। अग्रिमा ने जनसुनवाई के दौरान सब्जियों के दाम कंट्रोल करने के निर्देश दिये। इसके अलावा जिले की सभी सातों तहसील क्रमशः लखीमपुर में भाव्या सिंह, गोला में स्मृति सिंह, पलिया में निधि गुप्ता, धौरहरा में अनन्या रस्तोगी, निघासन में अनुष्का पटेल, मोहम्मदी में नन्दिनी गुप्ता, मितौली में खुशबू राठौर ने सांकेतिक रूप से एसडीएम की भूमिका अदा की। जौनपुर के डीएम दिनेश चंद्र सिंह ने बताया कि इंटर में जिले की टॉपर सजल गुप्ता ने डीएम की कुर्सी संभाली।

महराजगंज की सांकेतिक डीएम निधि और एसपी प्रतीक्षा ने सुनीं समस्याएं

गाजीपुर डीएम आर्यका अखौरी ने बताया कि हाईस्कूल की मेधावी छात्रा प्रियंका कुशवाहा को एक दिन का डीएम बनाया गया। उन्होंने जनता दर्शन में समस्याएं सुनकर कार्रवाई के निर्देश दिये। शामली डीएम अरविंद चौहान ने बताया कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के तहत जिले की इंटर की टॉपर आकांक्षा को डीएम बनाया गया। उन्होंने संपूर्ण समाधान दिवस में शिकायतों को सुनकर निस्तारण के निर्देश दिये। सीतापुर डीएम अभिषेक आनंद ने बताया कि बेटी अर्पिता सिंह को एक दिन का डीएम, प्रतीक्षा सिंह को एसपी, संध्या मिश्रा को सीडीओ बनाया गया। बेटियों ने जनसुनवाई कर समस्या का निस्तारण किया। महराजगंज के डीएम अनुनय झा ने बताया कि अष्टमी पर हाईस्कूल की जिले की टॉपर निधि यादव को एक दिन का डीएम बनाया गया। उन्होंने 8 शिकायतें सुनीं और एक का तुरंत निस्तारण किया। जिलाधिकारी न्यायालय का दौरा कर निधि ने मुआवजे से संबंधित मामलों को देखा।

श्रावस्ती की सांकेतिक डीएम रश्मि कसौधन ने देखी डाक फाइलें

श्रावस्ती डीएम अजय कुमार द्विवेदी ने बताया कि कक्षा-12 की रश्मि कसौधन को एक दिन का डीएम, प्राची तिवारी को एडीएम और रीना को एसडीएम बनाया गया। डीएम रश्मि ने डाक फाइलों पर हस्ताक्षर किये और जनता दर्शन में फरियादियों की समस्याओं को सुना। एसपी घनश्याम चौरसिया ने बताया कि कक्षा-11 की मेधावी छात्रा सरिता कुमारी को एक दिन का एसपी बनाया गया। इसी विद्यालय की लक्ष्मी को एएसपी बनाया गया। एसपी सरिता ने भवानीनगर थाना को एक मामले में इंस्पेक्टर को तत्काल कार्रवाई करने के निर्देश दिये। इस पर एफआईआर दर्ज की गयी। ललितपुर डीएम अक्षय त्रिपाठी ने बताया कि कक्षा-9 की बेटी शिवानी राजपूत को डीएम बनाया गया। तहसील की बेटियों को एसडीएम बनाकर जनसमस्याओं का निस्तारण कराया गया। बेटियों ने 114 जनसमस्याएं सुनीं और 27 का मौके पर निस्तारण किया। झांसी डीएम अविनाश कुमार ने बताया कि छात्रा अदिति साहू को डीएम बनाया गया।

लखीमपुर खीरी में 1100 बेटियों का हुआ कन्या पूजन

लखीमपुर खीरी में कन्या पूजन शक्ति वंदन समारोह हुआ। इसमें परिषदीय विद्यालयों की 1100 बेटियों का कन्या पूजन किया गया। उन्हें उपहार से भरा बैग (टिफिन, बोतल, स्टील की प्लेट, दीवार घड़ी एवं एनीमिया चार्ट) भेंट किया गया। 6 माह की 11 बालिकाओं को खीर खिलाकर अन्नप्राशन संस्कार कराया गया। इन बेटियों को गर्म कपड़े और हाइजीन किट भी प्रदान की गई। डीएम शक्ति नागपाल ने कहा कि कन्याओं को मदद की नहीं बल्कि मौके की जरूरत है। इसी तरह गोंडा में ?शक्ति सारथी? कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके तहत 1000 पिंक कलर के ई-रिक्शा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इनका उपयोग 90 प्रतिशत से अधिक महिलाओं द्वारा किया जाएगा। डीएम नेहा शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में 108 कन्याओं का पूजन और विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 9 महिलाओं को सम्मानित किया गया।

खबरें फटाफट

नाचने के दौरान गिरा युवक, मौत

बिल्थरारोड। दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के दौरान डीजे की धुन पर नाच रहे एक बीस वर्षीय युवक की मौत गिरने से हो गयी। घटना सोमवार की रात्रि लगभग 10 बजे बतायी जा रही है। जानकारी के अनुसार नगर के वार्ड नम्बर 5 में बालक बाल संघ द्वारा रखी गयी दुर्गा प्रतिमा का विसर्जन करने के लिए कमेटी के युवा सोमवार की रात्रि लगभग 10 बजे वाहन पर डीजे लगाकर गाजे बाजे के साथ जा रहे थे। इसी बीच वार्ड नम्बर 5 निवासी हिमांशु 20 वर्ष पुत्र रमाशंकर कनौजिया डीजे के गाने पर अन्य युवाओं के साथ नाचने लगा और अनियन्त्रित होकर जमीन पर गिर गया। आनन फानन में सीएचसी सीयर पहुँचाया गया जहां डॉक्टर ने हिमांशु को मृत घोषित कर दिया।

विवाहिता की मौत 11 लोगों पर केस

बिल्थरारोड। उभांव थाना क्षेत्र के सोनाडीह गांव में बीते शनिवार की रात्रि एक विवाहिता की संदिग्ध स्थिति में मौत के मामले में मृतिका के भाई की तहरीर पर उभांव पुलिस ने सास, ससुर और पति समेत 5 नामजद व तीन, चार अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या, दहेज व अन्य धाराओं में मुकदमा पंजीकृत किया है। ज्ञात हो कि उभांव थाना क्षेत्र के सोनाडीह गांव में चंदन साहनी अपनी पत्नी मिन्नी साहनी के साथ रहता था। मृतका के भाई अजय निवासी लौवासाथ थाना मधुबन जिला मऊ ने बहन के ससुराल वालों पर हत्या का आरोप लगाया। अजय ने आरोप लगाया कि शादी में बहनोई को 3 लाख रुपए, एक बुलेट व सोने चांदी के गहने उपहार में दिए गए थे। बावजूद इसके वह और दहेज के लिए बहन को अक्सर प्रताड़ित करते रहते थे।

राजस्व अभिलेखागार का निरीक्षण

बलिया। कलेक्ट्रेट स्थित राजस्व अभिलेखागार का जिलाधिकारी ने मंगलवार को आकस्मिक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने आए आवेदन की जानकारी ली। उन्होंने लम्बित नकल की जानकारी प्राप्त करते हुए कहा कि नियमानुसार व समयबद्ध नकल दिया जाय तथा समुचित तरीके से रजिस्टर पर अंकन किया जाए।

प्रभारी मंत्री ने लोक निर्माण विभाग के सभी कार्यों की समीक्षा की

जाम वाले क्षेत्रों को चिन्हित कर सड़क निर्माण की बने कार्ययोजना: दयाशंकर

- प्रभारी मंत्री ने जनपद के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण कर सड़कों का सर्वे करने का दिया निर्देश
- बोले- जनपद के बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र में सीसी सड़क ही बनाया जाए, जिससे बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में सड़क न टूटे

केटी न्यूज/बलिया

योगी सरकार में प्रभारी मंत्री दयाशंकर मिश्र दयालु ने कहा है कि शहर के अंदर जाम वाले क्षेत्रों को चिन्हित कर सड़क निर्माण की कार्ययोजना बनाई जाय। जिससे जाम की समस्या का समाधान हो सकें। इस संबंध में जनप्रतिनिधियों से भी विचार-विमर्श किया जाय। वह कलेक्ट्रेट सभागार में लोक निर्माण विभाग के सभी कार्यों की समीक्षा बैठक को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि जनपद में स्थित छोटे-बड़े औद्योगिक क्षेत्र का भ्रमण कर औद्योगिक क्षेत्र को मुख्य सड़कों से जोड़ने की कार्ययोजना बनाई जाए। इसके साथ उन्होंने कहा कि जनपद में बड़े क्षेत्र में औद्योगिक क्षेत्र विकसित करने की कार्यवाही की जाए। उद्योग के बिना क्षेत्र का विकास नहीं हो सकता। उद्योग से रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे। उन्होंने कहा कि जनपद के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण कर सड़कों का सर्वे कर लिया जाए। जनपद के बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र में सीसी सड़क ही बनाया जाए, जिससे बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में सड़क न टूटे। उन्होंने कहा कि जिन सड़कों के निर्माण के प्रस्ताव पर जनप्रतिनिधि विशेष बल दे रहे हैं, उन सड़कों के निर्माण के लिए प्राथमिकता के आधार पर कार्ययोजना में शामिल किया जाय। इस दौरान सांसद सनातन पाण्डेय ने कहा कि गोपालपुर क्षेत्र के सड़कों का निरीक्षण कराकर सड़कों का निर्माण कार्य कराया जाय। इसके साथ ही उन्होंने अन्य सड़कों के निर्माण के लिए कार्ययोजना में शामिल करने का प्रस्ताव दिया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष संजय यादव, जनप्रतिनिधिगण, जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लाक्षकार, मुख्य विकास अधिकारी ओजस्वी राज सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

एक समान हो सड़क चौड़ी करण का कार्यः दयाशंकर सिंहः बैठक के दौरान परिवहन मंत्री दया शंकर सिंह ने कहा कि सुरक्षा के दृष्टिगत शहर के प्रमुख चौराहों/स्थानों तथा जनपद के प्रमुख स्थानों पर सीसीटीवी लगाए जाने के लिए स्थल चिन्हित कर प्रस्ताव शीघ्र उपलब्ध कराई जाय। उन्होंने कहा कि अंतरराज्य गेट निर्माण के अंतर्गत बैरिया के तहत माझी तथा जनेश्वर मिश्र सेतु के अंतिम छोर पर गेट के निर्माण के कार्य को कार्ययोजना में शामिल किया जाय। भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए गेट का निर्माण चौड़ा एवं ऊंचा बनाया जाय,जिससे भविष्य में सड़क चौड़ी करने पर कोई परेशानी न होने पाए। उन्होंने कहा कि शंकरपुर से विश्वविद्यालय तक आने वाली सड़क का प्रस्ताव भी कार्ययोजना में शामिल किया जाय, जिससे छात्र-छात्राओं को आने-जाने में सुगमता हो सकें। उन्होंने कहा कि जनपद की दोनों राष्ट्रीय राजमार्गों को भी आपस में जोड़ने की कार्यवाही किया जाय। उन्होंने कहा कि पोल शिफ्टिंग के अंतर्गत टी0 डी0 कॉलेज से बहादुरपुर तक के पोल शिफ्टिंग का कार्य लिया जाय। उन्होंने कहा कि माल्देपुर से लेकर कदम चौराहा तक बनाई जा रही सड़क को कहीं चौड़ा-कहीं पतला न बनाया जाय,सड़क को एक समान रूप से बनाया जाय।

पीडब्ल्यूडी का कारनामा

सड़क मरमत्तीकरण कार्य में गिट्टी की जगह डाल रहे ईंट

केटी न्यूज/सिंहपुर

फेफना विधानसभा में एनएच 31 से सिंहपुर जाने वाली सड़क की हालत जर्जर हो चुकी थी। सड़क पर गहरे गड्ढे बने हुए थे। ग्रामीण सालों से इस सड़क के निर्माण की मांग कर रहे थे। पीड्ब्ल्यूडी विभाग ने सड़क बनाने की जिम्मेदारी भी ली लेकिन गिट्टी की जगह ईट के टुकड़े से गड्ढे भरा जा रहा है। ग्रामीणों ने सोमवार को विभाग के खिलाफ रोष जताते हुए गुणवत्ता पूर्वक काम करने की मांग की।

सिंहपुर गांव निवासी खेदन मौर्य,गंगेश्वर सिंह, हरिनाथ सिंह, राणा विजेंद्र प्रताप सिंह आदि लोगों ने बताया कि गांव में आने वाला सड़क की हालत काफी खस्ता थी। सड़क पर बने गहरे गड्ढे लोगों के लिए परेशानी का सबब बने हुए थे। ग्रामीण सड़क निर्माण की मांग कर रहे थे। मांग को विभाग स्वीकार भी किया लेकिन सड़क मानक के अनुरूप बनाया जा रहा है। वही पीडब्ल्यूडी जेई धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि सड़क का मरमतीकरण कार्य 12 लाख रुपए से कराया जा रहा है जो गुणवत्ता पूर्वक कार्य कराया जाएगा। लेकिन जब मौके पर जाकर देखा गया तो सड़क पर गिट्टी की बजाय गड्ढो में इट भरी जा रही है। जिसको लेकर स्थानीय लोगों में काफी आक्रोश है।

निर्माण कार्य की कराई जाएगी जांच: विधायक

इस संबंध में पीडब्ल्यूडी जेई धर्मेंद्र कुमार का कहना है कि सड़क का निर्माण कार्य 12 लाख रुपए की लागत से कराया जा रहा है। सड़क का निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण तरीके कराया जाएगा। क्षेत्रीय विधायक संग्राम सिंह यादव का कहना है कि सिंहपुर में सड़क निर्माण कार्य हो रहा है, अगर उसमें किसी प्रकार की लापरवाही बरती जा रही है तो इसकी शिकायत पीडब्ल्यूडी के मुख्य अधिकारी से की जाएगी एवं जांच कराई जाएगी।

सनातन ही एक मात्र ऐसा धर्म जहां होती है नारियों की पूजा

मऊ। विश्व हिंदू परिषद की मातृ संगठन दुर्गा वाहिनी द्वारा मां शीतला धाम पर शस्त्र पूजन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रदेश सयोजिका दुर्गा वाहिनी कल्पना ने कहा कि सनातन धर्म में नारी पूजनीय है, हमारे धर्म में नारी सम्मान सबसे ऊपर है यहां नारी को देवी का दर्जा दिया गया है, विश्व में कोई ऐसा धर्म नहीं है शिवाय सनातन के जहां नारी की पूजा होती हो। इसलिए यहां हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है, हमें शास्त्र के साथ शस्त्र शिक्षा का भी ज्ञान होना आवश्यक है तभी हम आज के समाज में घूम रहे रक्तबीज की पहचान कर उनका संघार कर पाएंगे। दुर्गा वाहिनी की संयोजक ईशानी सिंह ने कहा कि आज युवतियों का झुकाव सोशल मीडिया की तरफ ज्यादा है, यह वही युवतियां हैं जिन्होंने अपने धर्म और शास्त्र को कभी पढ़ा ही नही है, जहां हमें देवी का दर्जा प्राप्त है वहां कुछ गुमराह युवतियों को सोशल मीडिया पर अभद्र रिल बना रही हैं। उन्होंने उन युवतियों से अपने गौरवशाली इतिहास के बारे में पढ़ने व जानने की अपील की।

नौकरी व ठेका दिलाने के नाम पर दो भाइयों ने की धोखाधड़ी

केटी न्यूज/बलिया

शहर कोतवाली पुलिस ने बिहार के दो भाइयों पर रेलवे का अधिकारी बन कर ठेका व नौकरी दिलाने के नाम पर धोखाधड़ी करने के मामले में पीड़ित के तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई आरम्भ कर दिया है।

बता दे कि यूपी के प्रयागराज सांरगपुर निवासी प्रभाकर तिवारी ने शहर कोतवाली में दिए तहरीर में आरोप लगाया है कि रिश्तेदारी में आयोजित एक शादी समारोह में राजीव रंजन मिश्रा निवासी कपसिया थाना कोचस जिला रोहतास बिहार मिला। उसने स्वयं को एडीआरएम मुगलसराय बताया था तथा अपने भाई आशुतोष कुमार मिश्रा को रेलवे में रेल ड्राइवर बताया करता था। दिसम्बर 2023 में राजीव रंजन मिश्रा और उसका भाई आशुतोष मुझसे बात किया और कहे कि डेढ़ लाख रुपये खर्च करिए तो आपको हम दोनों भाई रेलवे में स्कैप का ठेका दिलवा देंगे। मैं इन दोनों की जालसाजी को समझ नहीं सका और राजीव रंजन मिश्रा के खाते में 26 दिसम्बर को डेढ़ लाख रुपया भेज दिया। इसके अलावा वह मेरी गाड़ी को रेलवे में लगवाने के नाम पर तीन माह तक रखा। जब पता चला कि दोनों मेरे साथ फ्राड किए है और जो आईडी दिखाया है वह फर्जी है। इसके बाद मैंने अपना पैसा मांगा तो उन्होंने 10 अक्टूबर को बलिया ओवर ब्रीज के पास बुलाया, वहां कुछ देर बात करने के बाद जान से मारने की धमकी देने लगे। इस मामले में शहर कोतवाली पुलिस ने पीड़ित के तहरीर के आधार पर दोनों के विरुद्ध संबंधीत धाराओं में मुकदमा दर्ज जांच पड़ताल शुरू कर दिया है।

उधर सिगरा वाराणसी में उप निरीक्षक ने पुलिस को दी तहरीर में कहा कि राजीव रंजन मिश्र से कैंट थाना पर मुलाकात हुई। जिसने स्वयं को सीनियर सेक्शन इंजीनियर के पद पर मुगलसराय तैनात होना बताया। जिसने बेटे को नौकरी दिलवाने के बहाने 10 लाख रुपया ठगने का आरोप लगाया। इस बाबत शहर कोतवाल योगेंद्र बहादुर सिंह ने बताया कि दोनों आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

एक नजर

एड्स से बचाव के लिए फ्लैश मॉब के साथ लोगों को दिया गया जागरूकता संदेश

बलिया। नाको भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी तथा जेएनसीयू के समाजकार्य विभाग द्वारा संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को शहर के रेलवे स्टेशन और बस स्टेशन पर जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ आनंद कुमार द्वारा किया गया। जिसके बाद समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों द्वारा फ्लैश माब व नुक्कड़ सभा कर एड्स को रोकने की जानकारी के साथ एड्स से बचाव का संदेश दिया। इस दौरान डॉ आनंद ने बताया कि एड्स एचआईवी नामक वायरस से होता है और एड्स हमारे शरीर में बीमारियों से लड़ने की क्षमता पर बुरा असर डालता है। एड्स कोई छुआछूत की बीमारी नहीं है। यह असुरक्षित यौन संबंध, संक्रमित हुई सुई और संक्रमित खून के द्वारा फैलता है। जानकारी ही इस बीमारी की सबसे अच्छा सुरक्षा कवच है। कार्यक्रम में अमरदीप, नागेंद्र पांडे, राजेश एवं बड़ी संख्या में स्वास्थ्य विभाग के कार्मिक, विश्वविद्यालय के अध्यापक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

नवीन कृषि मंडी तिखमपुर से रंगा हुआ 21 कुन्तल लाल आलू को किया गया सीज

बलिया। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन की टीम ने सोमवार की सायं को बड़ी कार्रवाई करते हुए नवीन कृषि मंडी तिखमपुर में लाल रंग से रंगा हुआ 21 कुन्तल आलू और रंगने वाले पदार्थ को पकड़ा है। सचल दल रंगे हुए आलू व रंगने वाले पदार्थ का नमूना लेकर जांच के लिये प्रयोगशाला भेज दिया और आलू को सीज कर दिया। सहायक आयुक्त द्वितीय वेद प्रकाश मिश्र ने बताया कि शिकायत मिली थी कि किसी लाल रंग के पदार्थ से आलू को रंग करके बेचा जा रहा है। जिसपर तत्काल करवाई करते हुए मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी दिनेश कुमार राय के नेतृत्व में खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम को नवीन कृषि मंडी भेजा गया। टीम ने शिकायत सही मिलने पर बिक्री के लिये रखा लाल रंग के पदार्थ से रंगा 21 कुन्तल आलू को सीज कर दिया। कार्रवाई के दौरान टीम को पता चला कि लाल रंग के पदार्थ से रंगे आलू को चार सौ रुपये प्रति कुन्तल महंगा बेचने की फिराक में था। टीम में रंगा हुआ लाल आलू व लाल रंग के पदार्थ के नमूनों को जांच के लिये प्रयोगशाला भेज दिया गया है। रिपोर्ट आने पर नियमानुसार करवाई की जायेगी। टीम में खाद्य सुरक्षा अधिकारी अनिल कुमार, अखिलेश कुमार मौर्य, ओम प्रकाश यादव भी थे।

सार्वजनिक रास्ते पर दबंगों द्वारा किए जा रहे अतिक्रमण को मुक्त कराने की मांग

पकड़ी। पकड़ी थाना क्षेत्र के उकछी गांव में सार्वजनिक रास्ते पर दबंगों द्वारा अतिक्रमण किया जा रहा है। इस संबंध में मिली जानकारी के अनुसार गांव के सार्वजनिक रास्ते पर आर सीसी की गई है। जिससे लोगों का आना-जाना लगा रहता है। लेकिन गांव के ही कुछ दबंगों द्वारा सीमेंटेड सड़क को ही अतिक्रमण किया जा रहा है। इस संबंध में प्रेम यादव ने प्रार्थना पत्र पर उप जिलाधिकारी सिकंदरपुर को दिया। बावजूद अब तक कुछ भी नहीं हुआ। ना ही अब तक अतिक्रमण नहीं हटाया गया है। इसको लेकर प्रेम यादव ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर भी अपनी शिकायत दर्ज कराई है। ताकि सार्वजनिक रास्ते से अतिक्रमण को हटाया ताकि लोगों का आवा गमन सुचारू रूप से हो सके प्रेम यादव का कहना है कि तहसील दिवस पर दौड़ते दौड़ते मैं थक गया हूं। कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है।

गाजे बाजे के साथ निकल महाबीरी झंडा जूलूस

गड़वार। क्षेत्र के बरवां गांव में पुलिस की निगरानी के बीच मंगलवार की दोपहर गाजे-बाजे और हाथी घोड़े के साथ जयकारा लगाते हुए ऐतिहासिक महाबीरी झंडा जूलूस व शोभा यात्रा को दुधेश्वर नाथ मंदिर परिसर से निकाली गई। शोभा यात्रा दक्षिणी चट्टी, शिव मंदिर, खेल का मैदान होते हुए पुनः मंदिर परिसर जाकर समाप्त हुई। वहीं सुरक्षा के मद्देनजर सुखपुरा थाना प्रभारी सहित भारी संख्या में पुलिस बल सहित महिला सिपाही कर्मी चक्रमण करते रहे। बरवां गांव में धूमधाम से निकला शोभा यात्रा में राम दरबार, हनुमान जी की झांकी आकर्षण का केंद्र रही। शोभा यात्रा के दौरान हनुमान जी के जयघोष से पूरा क्षेत्र गुंजायमान हो उठा। इस मौके पर आयोजक मनोज सिंह चौहान, हरखनाथ सिंह, चौहान,शत्रुघ्न, घूरा गिरी,अजय सिंह,प्रमोद वर्मा, शिवजी यादव, मुकेश चौहान,सोनू, सुनील,मनोज आदि मौजूद रहे।

हजारों अकीदतमंदों ने की चादर पोशी, मांगी दुआ

सिकन्दरपुर। नगर के मोहल्ला बड्ढा (मुड़ियापुर) स्थित हजरत सय्यद हाशिम शाह चहारजर्ब दाता रहमतुल्लाह अलैहे के नाम से मशहूर (दाता साहब) के सालाना उर्स के मौके पर मोहल्ला मुड़ियापुर स्थित उनके मजार पर मंगलवार की सुबह गागर भराई की रस्म अदायगी के साथ उनके शहन में कुल शरीफ तथा मिलाद का आयोजन किया गया। उनके उर्स के मौके पर सुबह से ही दूरदराज के क्षेत्रों से आए हुए जायरीनों नें हिस्सा लिया तथा नातख़्वाहों ने नातख़्वानी व मिलाद पढ़ा। ततपश्चात उनके आस्ताने पर अकीदतमंदों का आना जाना शुरू हो गया जो पूरे दिन भर जारी रहा।शाम होते ही हजारों अकीदतमंदों ने उनके मजारे पाक पर हाजिरी लगाई तथा चादर पोशी की, फातिहा पढ़ी और खुद के साथ ही कौम व मुल्क में अमन ,शांति, मिल्लत व सलामती के लिए दुआ मांगी। साथ ही उनके मजार शरीफ के आसपास लगे मेला में मेलार्थियों की भी काफी भीड़ रही और विभिन्न सामानों की लोग जम कर खरीदारी करते देखे गए।

विकासखंड मोहम्मदाबाद गोहना के ग्राम पंचायत गालिबपुर में ग्राम चौपाल का आयोजन

पात्र लोगों का चयन कर उन्हें योजनाओं का लाभ दिलाएं: मंडलायुक्त

केटी न्यूज/मऊ

मंडलायुक्त मनीष चौहान की अध्यक्षता में विकासखंड मोहम्मदाबाद गोहना के ग्राम पंचायत गालिबपुर में ग्राम चौपाल का आयोजन किया गया। ग्राम चौपाल के आयोजन के दौरान मंडलायुक्त महोदय ने सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की ग्राम पंचायत में वर्तमान स्थिति की विस्तृत जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों से संवाद किया। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को उनके विभाग द्वारा संचालित योजनाओं से ग्राम पंचायत के समस्त पात्र लोगों का चयन कर उन्हें योजनाओं से लाभान्वित करने के निर्देश दिए। सामुदायिक शौचालय के नियमित

प्रयोग हेतु उन्होंने जिला पंचायत राज अधिकारी को आवश्यक निर्देश दिए। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत कार्यरत समूह की महिलाओं से भी उन्होंने संवाद किया। इस दौरान एक ही समूह के विभिन्न महिलाओं द्वारा अलग-अलग रोजगार किए जाने पर उन्होंने डीसी एनआरएलएम को बेहतर और नए कार्य करने के निर्देश दिए, जिससे उनके लाभ में वृद्धि की जा सके। उन्होंने समूह की महिलाओं को भी बेहतर कार्य करने को कहा जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके। वृद्धा पेंशन, निराश्रित विधवा पेंशन एवं दिव्यांगजन पेंशन योजना में एनपीसीआई के कारण कुछ पात्र अभ्यर्थियों को पेंशन न मिलने पर उन्होंने समस्या के समाधान हेतु संबंधित बैंकों का कैंप लगाने को कहा जिससे समस्त पात्र लाभार्थियों को इन योजनाओं से लाभान्वित किया जा सके। इस दौरान उन्होंने कन्या सुमंगला योजना, आयुष्मान कार्ड बनने की स्थिति, पशुओं के टीकाकरण, अंत्योदय कार्ड बनने की स्थिति आदि की भी जानकारी लेते हुए इन योजनाओं से पात्र लाभार्थियों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। उन्होंने जनसुनवाई के दौरान प्राप्त शिकायतों के निस्तारण की स्थिति की भी जानकारी ली तथा शिकायतकर्ता से फीडबैक भी लिया। ग्राम चौपाल के उपरांत मंडला आयुक्त ने उसी ग्राम पंचायत में निमार्णाधीन पानी की टंकी का भी निरीक्षण किया। इस टंकी का निर्माण हर घर जल योजना के तहत किया जा रहा है। इसके पूर्ण होने की तिथि मार्च 2024 थी। मंडलायुक्त ने अधिशासी अभियंता जल निगम को तत्काल इसे पूर्ण करते हुए हर घर जल पहुंचने की व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा। इसके अलावा मंडलायुक्त द्वारा डॉक्टर भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में निमार्णाधीन एस्ट्रो टर्फ हाकी का मैदान, वालीबाल एवं बास्केटबॉल हेतु निर्मित मैदान का भी निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अधिशासी अभियंता यूपी सिडको को मानकों का अनुपालन करते हुए समय सीमा के अंदर सारे कार्य गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण करने के निर्देश दिए। इसके उपरांत मंडलायुक्त ने जिला अस्पताल परिसर में निमार्णाधीन 100 शैय्या युक्त क्रिटिकल केयर हॉस्पिटल का भी निरीक्षण किया।

संक्षिप्त समाचार

टाटा-जम्मूतवी को भोडवाल मजरी स्टेशन पर ठहराव

जमशेदपुर, एजेंसी। यात्री सुविधा में टाटानगर-जम्मू एक्सप्रेस और संबलपुर-जम्मू एक्सप्रेस को 22 अक्तूबर से 22 नवंबर तक हरियाणा स्थित भोडवाल मजरी स्टेशन पर ठहराव मिला है। दक्षिण पूर्व रेलवे जोन से दोनों ट्रेनों के ठहराव को लेकर पत्र जारी हुआ है। रेलवे के अनुसार, दोनों ट्रेनें अप-डाउन में दो मिनट तक भोडवाल मजरी स्टेशन पर रुकेगी। जानकारी के अनुसार स्थानीय लोगों ने भोडवाल मजरी स्टेशन पर ठहराव की मांग पर रेलवे को पत्र दिया था।

ट्रेन से हाथी के बच्चे की मौत पर दो लोको पायलट गिरफ्तार

जमशेदपुर, एजेंसी। मालगाड़ी की चपेट में आकर हाथी के बच्चे की मौत के बाद टाटानगर के दो लोको पायलट मनोज कुमार और कविराज कुमार को ओडिशा वन विभाग ने गिरफ्तार कर लिया। इससे मंडल के लोको पायलट आक्रोशित हो गए और राउरकेला-बंडामुंडा के लॉबी पर धरना दिया। मालूम हो कि बीते रात चक्रधरपुर रेल मंडल के बंडामुंडा ए केबिन के निकट मालगाड़ी की चपेट में आने से एक हाथी के बच्चे की मौत हुई है। इससे रात में हावड़ा-मुंबई रेलमार्ग पर आधा दर्जन ट्रेनों का परिचालन भी प्रभावित हुआ। इधर, गिरफ्तार लोको पायलट को रिहा कराने कई रेल अधिकारी चक्रधरपुर से बंडामुंडा गए हैं।

जूनियर डॉक्टर ने ओपीडी बंद कराया, मरीजों का हंगामा

जमशेदपुर , एजेंसी। एमजीएम अस्पताल में मंगलवार को जूनियर डॉक्टरों ने ओपीडी सेवा बाधित कर दी जिससे नाराज होकर मरीज ने हंगामा किया। कोलकाता में मेडिकल कॉलेज की छात्रा के साथ गैंगरेप और हत्या के बाद चल रहे विरोध प्रदर्शन के समर्थन में झारखंडी के भी सभी मेडिकल कॉलेज के जूनियर डॉक्टरों ने मंगलवार को भूख हड़ताल किया है। डाक्टरों ने एमजीएम के सेंट्रल रजिस्ट्रेशन काउंटर को बंद कर दिया। जिसके कारण मरीज नाराज हो गए और जमकर हंगामा किया। मरीजों का कहना था कि यहां आए दिन अस्पताल में इस तरह बंद करना मरीज को परेशान करना है। जूनियर डॉक्टरों को अपनी मांगों को पूरा करना है तो उचित मंच पर जाएं ना कि मरीजों को परेशान करें।

महुदा में जमुनिया नदी पर पुल का शिलान्यास

धनबाद , एजेंसी। धनबाद जिला ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल की ओर से महुदा की लोहपिट्टी पंचायत की अंधारी बस्ती के समीप जमुनिया नदी उच्च स्तरीय पुल का शिलान्यास सोमवार को हुआ। सांसद प्रतिनिधि शत्रुघ्न महतो ने नारियल फोड़कर शिलान्यास किया। जिप प्रतिनिधि राजू महतो ने बताया कि पुल के निर्माण पर 6 करोड़ रुपए लागत आएगी। इस पुल के बनने से महुदा, तेलमच्चो आदि क्षेत्र के लोगों को दुगदा, चन्द्रपुरा जाने में काफी सुविधा होगी। सांसद प्रतिनिधि शत्रुघ्न महतो ने कहा कि पहले लोगों को चंद्रपुरा जाने के लिए बहुत दूर से घूमकर जाना पड़ता था। मौके पर मुखिया सुनीता देवी, नारायण महतो, टेकलाल महतो, दिलिप साव, विजय दास, देवानंद सिंह, उत्तम सिंह, बीरू साव, भरत गोप, दीपक सिंह, भरत महतो आदि मौजूद थे।

धनबाद में ईसीआरकेयू चुनाव की तैयारी शुरू

धनबाद , एजेंसी। ईस्ट सेंट्रल रेलवे कर्मचारी यूनियन (ईसीआरकेयू) के चुनाव की धनबाद में तैयारी शुरू हो गई है। हाजीपुर महाप्रबंधक मुख्यालय में नामांकन 22 अक्टूबर को दाखिल किया जाएगा। यूनियन ने उक्त तिथि पर रेलकर्मियों की एक विशाल जनसभा करने का निर्णय लिया है। ऑल इंडिया रेलवे मेंस फेडरेशन के महामंत्री शिव गोपाल मिश्रा सभा को संबोधित करेंगे और ईसीआरकेयू को पुन: बहुमत से जीत दिलाने का आह्वान करेंगे। ईसीआरकेयू के अध्यक्ष डीके पाण्डेय और महामंत्री एसएनपी श्रीवास्तव भी अपने संबोधन में ईसीआरकेयू एवं फेडरेशन के उपलब्धियों को जनसभा में रेलकर्मियों के समक्ष रखेंगे। ईसीआरकेयू के पूर्व अपर महामंत्री बीके सिंह भी रेलकर्मियों को एक मजबूत यूनियन बनाने के लिए ईसीआरकेयू को भारी मतों से विजयी बनाने के लिए अपनी बात रखेंगे। यह जानकारी ईसीआरकेयू के अपर महामंत्री सह धनबाद मंडल के पीएनएम प्रभारी मो। जियाउद्दीन ने दी।

गठबंधन के तहत 81 विस क्षेत्र से लड़ेंगे चुनाव: हेमंत सोरेन

रांची, एजेंसी। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर झारखंड मुक्ति मोर्चा केंद्रीय समिति की बैठक सोमवार को हरमू स्थित सोहराई भवन में दिन के 11 बजे से 7।30 बजे तक चली। इस मैराथन बैठक में सभी विधायक, सांसद, नेता व कार्यकर्ता शामिल हुए। सुबह से शाम तक हुई कई पाली में बैठकों में मंथन का दौर जारी रहा। संध्या 6।15 बजे राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन बैठक में शरीक होने के लिये सोहराई भवन पहुंचे। उनके पहुंचते ही सारे नेता कार्यकर्ताओं में एक अलग ही जोश आ गया। सुबह से शाम तक चली बैठक का मुख्यमंत्री हेमंत सोरेने ने पहले बंद कमरे में आकलन लिया। दिनभर के मंथन के बाद शाम में जीत का खाका उपस्थित पार्टी समूह के बीच मुख्यमंत्री ने खींचा। जिससे जुटे मजमे में अलग ही खुशी की झलक देखने को मिली। बैठक के बाद बाहर निकलते समय सभी के चेहले खिले नजर आये।

उसके बाद मीडिया से मुखातिब होते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि आगामी विधानसभा 2024 के चुनाव की तैयारी बैठक सोहराई भवन में सुबह से शाम तक हुई। यह बैठक झारखंड मुक्ति मोर्चा की केंद्रीय समिति की थी। इस बैठक में सभी

लोग शरीक हुए। आगामी विधानसभा चुनाव की उत्तम तैयारी शुरू करने का निर्देश भी दिया गया है। झामुमो की केंद्रीय समिति का मैं भी सदस्य हूं। इस लिए बैठक में शरीक हूं, और अपनी जिम्मेदारी निभा रहा हूं। यह साल चुनाव का साल है, सीट शेयरिंग के प्रश्न के जवाब में हेमंत सोरेन ने कहा कि हमारी सरकार गठबंधन की सरकार है, इस लिए हम समस्त 81 विधानसभा सीट से गठबंधन के साथ चुनाव लड़ेंगे।

बीजेपी जुमले करती है और हम करके दिखाते हैं - सरफराज : राज्यसभा सांसद सरफराज अहमद ने कहा कि हम लोग चुनाव के लिये पूरी तरह से तैयार हैं। झामुमो की केंद्रीय कमेटी की बैठक सुबह से शाम तक हुई, इसका फलाफल निकाल कर निर्णय लिया जाएगा। हमारी सरकार ने कार्य पूरे किये हैं। बीजेपी की तरह हम जनता को बहलाते नहीं हैं। मंईयां योजना ठीक चुनाव के समय शुरू करने के प्रश्न पर उन्होंने कहा कि हमारी सरकार सभी को योजना के तहत अधिकार दे रही है, लेकिन महिलाओं को नहीं मिल रहा था, इस पर गौर किया गया और 18 से 49 वर्ष की लड़कियों व महिलाओं को मंइयां योजना का लाभ दिया जा रहा है। बीजेपी की ओर से भी तो गोगो दीदी योजना महिलाओं के लिये है। राज्यसभा सांसद ने कहा कि एक योजना का लाभ देना और एक योजना आगे शुरू होगी दोनों में बहुत अंतर है। बीजेपी तो बस जुमले करती है, पहले उनकी सरकार भी तो रही है, तो अब याद आ रहा है, इसे क्या कहा जाएगा।

ये बैठक थी बहुत खास -विनोद : झामुमो के केंद्रीय महासिचव विनोद कुमार पांडे ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव से पहले झारखंड मुक्ति मोर्चा की ओर से विस्तारिक बैठक सुबह से रात तक हुई। इस बैठक में सारे सांसद, विधायक, नेता मंत्री शामिल हुए। उन्होंने कहा कि आज की स्टेट कोऑर्डिनेशन कमेटी की बैठक इसलिए अहम है कि इस बैठक में संगठनात्मक एकता, गठबंधन को और मजबूती प्रदान करने व पार्टी को धरदार बनाने और आगामी विधानसभा चुनाव में जीत को ले रणनीति तय करने पर मंथन किया गया।

चुनाव के लिए हम लोग पूरी तरह से हैं तैयार -सुदीप : गिरिडीह विधायक सुदीप कुमार सोनू ने कहा कि हम लोग चुनाव के लिए पूरी तरह से तैयार हैं, चुनाव में कहीं कोई कमियां नहीं हो इसी की आज झामुमो केंद्रीय समिति की बैठक हुई। हमारा राज्य स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार के क्षेत्र में बढ़ रहा है। आगे और भी बेहतर कार्य होंगे।

विधानसभा चुनाव की तैयारी बैठक है - भूषण : गुमला विधायक भूषण तिर्की ने कहा कि यह आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारी बैठक है। चुनाव के लिये हम लोग पूरी तरह से तैयार हो गये हैं। आज की इस बैठक में झामुमो के सांसद, विधायक समेत सारे कार्यकर्ता शामिल हुए हैं।

झरिया में अग्रसेन जयंती पर 17 को निकलेगी भव्य निशान सोभायात्रा

धनबाद , एजेंसी। झरिया में अग्रसेन जयंती पर 17 अक्टूबर को भव्य निशान सोभायात्रा निकाली जाएगी। यह जानकारी सोमवार को अग्रसेन भवन में मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से आयोजित प्रेसवार्ता में दी गई। मारवाड़ी सम्मेलन, झरिया के सचिव दीपक अग्रवाल ने बताया कि श्याम मंदिर से शोभायात्रा सुबह 10 बजे निकलेगी और पूरे झरिया का भ्रमण करते हुए अग्रवाल धर्मशाला में समाप्त होगी।

इसके बाद सामूहिक भोज का आयोजन होगा और शाम 5 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। सम्मेलन के अध्यक्ष राजकुमार अग्रवाल ने कहा कि अग्रसेन जी महाराज का जन्म भगवान राम के कुल में 5149 वर्ष पहले अग्रोहा में हुआ था। उनकी शादी नाग कन्या से हुई थी, जिनका नाम महारानी माधवी था। उन्होंने कहा था कि तुम अपने अगल-बगल रहने वालों की चिंता करो, तुम्हे अपनी चिंता करने की जरूरत नहीं है। समाज के सभी वर्गों का ख्याल रखो। माता लक्ष्मी की कृपा तुम पर हमेशा बनी रहेगी।

उनके बताये मार्ग पर चल कर ही समाज की ओर से स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल, मंदिर आदि की स्थापना हुई और उनका संचालन भी बेहतर तरीके से हो रहा है। प्रेसवार्ता में रमेश अग्रवाल, नरेश अग्रवाल, गोपाल अग्रवाल, गणेश अग्रवाल, विनोद मोदी, विनोद अग्रवाल, सत्यनारायण भोजगढ़िया, महेश जालुका, दीपक अग्रवाल, अमित अग्रवाल, अनूप लिल्हा आदि मौजूद थे।

रांची को मिल गए चार और नए थाने, विधानसभा चुनाव से पहले हेमंत सरकार का बड़ा फैसला

गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग ने इससे संबंधित अधिसूचना जारी कर दी ह

रांची, एजेंसी। राज्य सरकार ने रांची में यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने के लिए चार और यातायात थाने का सृजन किया है। इन चार थानों में पंडरा, खेलगांव, डेली मार्केट व डोरंडा यातायात थाना शामिल हैं।

रांची में पहले से चार यातायात थाने लालपुर, गोंदा, कोतवाली व जगन्नाथपुर में कार्यरत हैं। नए थानों से लोगों को काफी सुविधा होगी।

इस प्रकार रांची में यातायात थानों की संख्या आठ हो गई है। गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग ने इससे संबंधित अधिसूचना जारी कर दी है। इसी तरह लातेहार के चंदवा थाना क्षेत्र के ग्राम बेतर में पुलिस आउट पोस्ट का सृजन किया गया है। इस ओपी के अधीन दो पंचायत बरवाटोली व लाधुप होंगे।

इनमें बरवाटोली पंचायत के गांव बेतर, रोहुम, मुड़मा, बेलंगा, जमुआरी, हेसलांग, टाटा, रूद, बरवाटोली व चिलदिरी तथा लाधुप पंचायत के गांव लाधुप, आरा, कुदरा, गोली, दुधीमाटी, बेलगड़ा, पीरदाग, सेन्हा, हेसला व मनातु गांव शामिल किए गए हैं।

राज्य सरकार ने सिमडेगा थाना व मुफ्फसिल थाना के कार्यक्षेत्र का पुनर्निधारण किया है। इसमें सिमडेगा के सेवई पंचायत के सेवई व सनसेवई गांव को सिमडेगा से मुफ्फसिल थाना से संबद्ध किया गया है।

वहीं, पिथरा पंचायत के पिथरा, रिगड़ी, गुल्डा, मेरोमलोया, बड़कीछापर, जमुनाखैर, तुमडेगी व सेमरबेड़ा को सिमडेगा से मुफ्फसिल थाना के साथ जोड़ा गया है।

तामड़ा पंचायत चिकसुरा, तभाडीह, तामड़ा, कामतारा, कोनसेरा व डाडगुरदा गांव को मुफ्फसिल थाना से हटाकर उसे सिमडेगा थाना से जोड़ा गया है। गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग ने इससे संबंधित अधिसूचना जारी कर दी है।

झारखंड में फिर बजने वाली है विधानसभा चुनाव की रणभेरी, पिछली बार ऐसा था संख्याबल

रांची, एजेंसी। झारखंड में विधानसभा चुनाव की घोषणा आज यानी कि मंगलवार को होगी। इसी तरफ प्रदेश में आदर्श आचार संहिता भी लागू हो जाएगा। चुनाव आयोग इस संबंध में दोपहर तीन बजे प्रेस कांफ्रेंस करने वाला है। झारखंड में विधानसभा की 81 सीटें हैं।

पिछली बार यानी कि 2019 में पांच चरणों में झारखंड विधानसभा चुनाव आयोजित हुआ था। इस बार, उम्मीद है कि तीन से चार चरणों में चुनाव हो सकते हैं। बता दें कि 2019 के झारखंड विधानसभा चुनाव में महागठबंधन ने भारी बहुमत से जीत दर्ज की थी। हेमंत सोरेन की पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा को 30 सीटें, कांग्रेस को 16, राजद को एक और बीजेपी को 25 सीटें मिली थीं।

चुनाव के मद्देनजर भारत निर्वाचन आयोग के मुख्य आयोक्त ने अपनी टीम के साथ हाल ही में झारखंड का दौरा भी किया था। इस दौरान सभी राजनीतिक दलों से चुनाव की प्रक्रिया को लेकर सुझाव भी लिया था।

इस दौरान सभी राजनीतिक दलों ने छठ पूजा और राज्य स्थापना दिवस के बाद चुनाव कराने का अनुरोध किया था। साथ ही सभी ने कम से कम चरणों में चुनाव कराने का सुझाव आयोग को दिया था। बता दें कि झारखंड विधानसभा का कार्यकाल नए साल में पांच जनवरी को समाप्त हो रहा है।

सड़क दुर्घटना में मृत वकील के परिजनों को 50:90 लाख मुआवजा देने का आदेश

रांची, एजेंसी। झारखंड हाईकोर्ट ने सड़क दुर्घटना में मृत अधिवक्ता के परिजनों को 50 लाख 90 हजार 176 रुपये का मुआवजा देने का आदेश दिया है। साथ ही कोर्ट ने इंश्योरेंस कंपनी बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस द्वारा दायर याचिका को खारिज कर दी है, जिसमें उसने मोटर दुर्घटना ट्रिब्यूनल के उस आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें इंश्योरेंस कंपनी को सड़क दुर्घटना में मारे गये वकील के परिवार को मुआवजा देने का आदेश दिया गया था।

इस मामले की सुनवाई हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस सुभाष चांद की कोर्ट में हुई। सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा कि प्रत्यक्षदर्शियों के बयान, एफआईआर, चार्जशीट और पोस्टमार्टम रिपोर्ट को ध्यान में रखते हुए दुर्घटना का तथ्य पर्याप्त रूप से सिद्ध है। इसलिए कंपनी की याचिका खारिज की जाती है।

अधिवक्ता की पत्नी ने इंश्योरेंस के लिए किया था क्लेम : बता दें कि वर्ष 2018 में धनबाद के अधिवक्ता अजीत कुमार की सड़क दुर्घटना में मौत हो गयी थी। इसके बाद उनकी पत्नी ने बीमा पॉलिसी के तहत इंश्योरेंस के लिए क्लेम किया था। मोटर दुर्घटना ट्रिब्यूनल ने कंपनी को मृतक के परिजनों को मुआवजा भुगतान का आदेश दिया था। मोटर दुर्घटना ट्रिब्यूनल के आदेश के खिलाफ इंश्योरेंस कंपनी ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था।

ना खपत बढ़ी, न उत्पादन घटा, फिर भी सब्जियों के दामों में 78 प्रतिशत तक का हुआ इजाफा

रांची, एजेंसी। सब्जियों पर महंगाई की मार देखने को मिल रही है। सितंबर में सब्जियों की थोक महंगाई दर 48।73 फीसदी बढ़ गयी है। वहीं आलू और प्याज की कीमतों में 78 फीसदी, जबकि टमाटर की कीमतों में 48 प्रतिशत तक का इजाफा हुआ है। खुदरा महंगाई के आंकड़ों ने भी चिंता बढ़ा दी है। यह रिजर्व बैंक के 5 प्रतिशत की सीमा को पार कर गयी है और सब्जियों की महंगाई लगभग 36 प्रतिशत बढ़ी है (अगस्त में यह केवल 10प्रतिशत थी)। सितंबर में खाद्य महंगाई दर बढ़कर 9।24 प्रतिशत तक पहुंच गयी है, जो अगस्त में 5।66 प्रतिशत थी। खुदरा महंगाई के सूचकांक में सब्जियों का योगदान लगभग 7।46 प्रतिशत है।

आमतौर पर यह माना जाता है कि महंगाई किल्लत से बढ़ती है। लेकिन आलू, प्याज, और टमाटर की उपज लगातार बढ़ रही है। वर्ष 2022 तक पिछले एक दशक में उनकी पैदावार में 63 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। 2022-23 में

भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा आलू-टमाटर का उत्पादक है। वहीं भारत प्याज का सबसे बड़ा उत्पादक है। इसके बावजूद सब्जियों पर महंगाई बढ़ती ही जा रही है।आंकड़े बताते हैं कि उपभोक्ताओं के मासिक खर्च में सब्जियों का हिस्सा पिछले एक दशक से 3-4 प्रतिशत पर स्थिर है। कुल उत्पादन का केवल 8।6 प्रतिशत प्याज और 2 प्रतिशत आलू-टमाटर निर्यात होता है। इसका मतलब है कि यह पूरी तरह से घरेलू खपत के लिए होते हैं, फिर भी महंगाई क्यों इतनी अधिक है? थोक व्यापारी भी 32 से 37 पैसे का मुनाफा कमाते हैं और बचे हुए पैसे का हिस्सा रेहड़ी वालों के पास जाता है, जो बड़ी कीमतों को बढ़ाकर बेची न गयी सब्जियों के नुकसान की भरपाई करता है।

सब्जियों के इस आर्थिक चक्र में मौसम का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। इसको संभालने के लिए भंडारण और आपूर्ति के नये उपायों की आवश्यकता है। इस स्थिति में सब्जियों की महंगाई किसान और उपभोक्ता दोनों की जेब काट रही है। तो फिर इस स्थिति का लाभ किसे मिल रहा है? खेती पर राजनीतिक भाषणों और वादों का गुणगान अपना ही महत्व रखता है और जब ये टूटते हैं, तब हमें यह समझ में आता है कि ताजा महंगाई वहां से आ रही है, जहां हम आत्मनिर्भर हैं।

कैपिटल हिल में लगी मोदीगोल्ड सोने व हीरे के गहनों की प्रदर्शनी

रांची, एजेंसी। मोदीगोल्ड' सोने और हीरे की गहनों की आर्ट क्राफ्ट घराने की विशिष्ट प्रदर्शनी सोमवार को कैपिटल हिल में लगाई गई। बता दें कि मोदीगोल्ड ने आशा कमल मोदी और शिवानी मोदी सोनी द्वारा डिजाइन किए विशिष्ट गहनों का संग्रह है। जो पिछले तीन दशकों से आर्ट क्राफ्ट नाम से मशहूर पारम्परिक डिजाइन और केयर शुद्धता के लिए प्रसिद्ध है। 'मोदीगोल्ड' 18 कैरेट एवं 22 कैरेट सोना, हीरे एवं जेवरात के साथ सुन्दरता से बनायी गयी ज्वेलरी है, जो देखने में काफी पुराने जमाने के जेवरों जैसी लगती है। आशाजी द्वारा बॉलीवुड के 10 से अधिक मशहूर फिल्मों में ज्वेलरी का डिजाइन किया गया है, जिसमें पदमावत, बाजीरवा मस्तानी, रामलीला है।

इसके अलावा रानी डायाना, जॉर्डन की महारानी गायत्री देवी एवं यूएइ की राजकुमारी शेख शम्मा के जेवरों की डिजाईन तैयार किया गया है। आशाजी अपनी पुत्री शिवानी के साथ तीन दशकों से ज्वेलरी का डिजाइन कर रही हैं जो 'मोदी गोल्ड' के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रदर्शन में आप उनके उत्कृष्ट सोना, चांदी तथा हीरा के जेवरात के डिजाइन देखेंगे। इस प्रदर्शनी में सोना, पोलकी, हीरा एवं कीमती बहुमूल्य रत्नों के समागम से बहुत ही खूबसूरती

के साथ बनाया जाता है।'मोदीगोल्ड' इन्हीं गहनों की एक प्रदर्शनी है जो सामान्यतः पुरानी तस्वीरों एवं एवं किताबों में देखने को मिलती है।

बाजार में उपलब्ध अधिकांश ज्वेलरी एक ही डिजाइन के बार-बार रूपांतरित कर बनाया जाता है किन्तु मोदी गोल्ड में विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं में मिलने वाले डिजाइन को ध्यान में रखकर बनायी गयी है। पारखी नजर रखने वालों के लिए आशा मोदी, शिवानी मोदी द्वारा डिजाइन किया हुआ डक्न, मुगल, और यूरोपिय कलाओं से प्रेरित बहुमूल्य जवाहरातों के संग्रह की प्रदर्शनी है जिसे एक बार अवश्य देखना उचित रहेगा। इस प्रदर्शनी में उपलब्ध संग्रह में गले का हार, कान की बालियां, ब्रेसटलेट, बाजूबंध, मांगटीका, अंगुठी, नोजपीन उपलब्ध है जो कि 500 से अधिक डिजाइन में है और इनकी कीमत 50000 से 5 लाख तक के जेवरात बहुत ही आकर्षक दरों पर पेश किए जा रहे हैं।

अराजू के बाबूलाल की तमिलनाडु में हुई मौत

बोकारो, एजेंसी। रोजी रोटी की तलाश में तमिलनाडु गये जरीडीह प्रखंड के अराजू निवासी बाबूलाल सिंह(37 वर्ष) भी पलायन की भेंट चढ़ गया। राजू के चालमुंडरी निवासी स्व तारु सिंह का पुत्र बाबूलाल सिंह मजदूरी करने गोवा गया था। वहां काम के दौरान कंपनी के कुछ लोगों व ठेकेदार से बहस व हाथापाई हुई तो वह एक मित्र से संपर्क कर तमिलनाडु के सेलम चला आया था। बताया गया कि वह सेलम में अपने एक रिश्तेदार के भाड़े के घर में सोया था। इसी बीच उसके सिर में दर्द उठा और उसकी तबीयत बिगड़ गयी। उसके साथी तुरंत स्थानीय अस्पताल में ले गये, जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद रविवार को मृतक का शव गांव पहुंचा। घटना की सूचना के बाद स्थानीय पंचायत प्रतिनिधियों के अलावा समाजसेवी चीकू मेहता, संतोष कुमार नायक, जगदीश सिंह, टीकाराम सिंह, कलेवर सिंह, संजय सिंह व अन्य कई लोग पहुंचे और पीड़ित परिवार को ढाढ़स बंधाया। ग्रामीणों ने बताया कि जहां घटना घटी, उस ठेकेदार ने मानवता के नाम पर भी कुछ भी सहायता राशि या मदद नहीं भेजी। ग्रामीणों ने इस घटना की जांच कर पीड़ित परिवार को आर्थिक मदद देने की मांग की।

सफाई के लिये निगम खरीदेगा 3:20 करोड़ की मशीनें

रांची , एजेंसी। रांची नगर निगम क्षेत्र के विभिन्न जलाशयों, तालाबों, डैम आदि की बेहतर सफाई के लिये सोमवार को सेंट्रल कोल फील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) एवं रांची नगर निगम के बीच एमओयू हुआ। जिसके तहत सीसीएल के सीएसआर राशि के सहयोग से निगम द्वारा दो अत्याधुनिक मशीन थ्रैश स्कीमर/वीड हार्वेस्टिंग मशीन, ड्रेन क्लीनिंग मशीन का क्रय खरीदी जायेगी। मालूम हो कि इन दोनों मशीनों की कुल लागत 3।20,00000 करोड़ (तीन करोड़ बीस लाख रुपए) होगी। जिसमें वीड हार्वेस्टिंग मशीन की लागत 1,46,00,000 रुपए तथा ड्रेन क्लीनिंग मशीन की लागत ।1,74,00,000 रुपए होगी। उक्त मशीनों के क्रय के लिये आज निविदा आमंत्रित की गई है। निगम की टीम में इन मशीनों के आ जाने से रांची शहर के जलाशयों को साफ करना सरल हो जायेगा।

सुभाषितम्

एक बेहतरीन किताब 100 अच्छे दोस्त के बराबर है, लेकिन एक सर्वश्रेष्ठ दोस्त पुस्तकालय के बराबर है। -अब्दुल कलाम

कोरोना वैक्सीन के साइड इफेक्ट की जांच क्यों नहीं?

सुप्रीम कोर्ट ने कोरोना वैक्सीन के साइड इफेक्ट को लेकर सोमवार को सुनवाई के बाद एक जनहित याचिका को खारिज कर दिया है। इस जनहित याचिका में याचिकाकर्ता द्वारा कोरोना वैक्सीन के बाद जिस तरह से साइड इफेक्ट देखने को मिल रहे हैं। उसकी जांच कराने के लिए यह याचिका लगाई थी। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीबाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और मनोज मिश्रा की खंडपीठ ने इस याचिका को निरस्त करते हुए कहा, कि यह सनसनी फैलाने के लिए याचिका लाई गई है। सुप्रीम कोर्ट की खंडपीठ ने कहा वैश्विक स्तर पर फैली महामारी पर संकट पाने के लिए वैक्सीन तैयार की गई थी। इस महामारी ने मानवता को हिलाकर रख दिया था। सुप्रीम कोर्ट द्वारा याचिका पर सुनवाई किए बिना ही जिस तरीके से याचिका को खारिज किया है। उसने करोड़ों लोगों को निराश किया है। जो लोग वैक्सीन लगने के बाद से नई-नई विभिन्न बीमारियों से पीड़ित हैं। उन्हें याचिका निरस्त होने से तगड़ा झटका लगा है। याचिका करता के वकील ने सुप्रीम कोर्ट में वैक्सीन लगने के बाद रक्त के थक्के जमने,शुगर बढ़ने और कई तरह के साइड इफेक्ट होने की बात याचिका में कही थी। जब कोरोना की महामारी फैली थी। तब कोरोना की वैक्सीन बनाना और उसे सुरक्षा की दृष्टि से लगवाना उस समय के हिसाब से सरकार का कदम सही था। लेकिन वैक्सीन लगने के बाद यदि कोई दुष्प्रभाव लोगों में देखने को मिल रहे हैं। ऐसी स्थिति में साइड इफेक्ट की जांच करना और उपयुक्त इलाज खोजना सरकार और स्वास्थ्य विभाग की ही जिम्मेदारी है। वैक्सीन लगने और नहीं लगने को लेकर यह याचिका नहीं थी। इस याचिका को इसलिए लगाया गया था। कोरोना महामारी से बचने के लिए जो वैक्सीन लगाई गई थी। मानव जीवन पर उसका किस तरह का प्रभाव हुआ है। इसके अलावा कोरोना महामारी के लक्षण होने पर जिन लोगों का इलाज अस्पतालों में हुआ था। मरीज के इलाज में जिस तरह की दवाइयों का प्रयोग किया गया था। मरीजों में उसके क्या असर हुए हैं। यदि कोई साइड इफेक्ट हैं,तो इसकी जांच होना जरूरी है। ब्रिटेन जैसे देश में कोरोना वैक्सीन और कोरोना महामारी के उपचार को लेकर कई तरह की जांच की गई है। वैक्सीन के साइड इफेक्ट को जानकर साइड इफेक्ट दूर करने के लिए मरीज को किस तरह की दवाई दी जाएं। जिससे मरीजों का जीवन सुरक्षित हो। ब्रिटेन की सरकार और ब्रिटेन की न्यायपालिका इसके लिए सजग है। नागरिकों के स्वास्थ्य की जवाबदारी सरकार और स्वास्थ्य विभाग की है। महामारी आती हैं, चिकित्सकों द्वारा हर संभव इलाज भी किए जाता है, महामारी के टीके भी समय-समय पर विकसित कर सुरक्षा की दृष्टि से सभी को लगाए जाते हैं। वैक्सीन की गुणवत्ता और उसके प्रभाव को कई स्तर पर जाँचने की व्यवस्था होती है। वैक्सीन का मानव जीवन में क्या प्रभाव पड़ा है। यदि कोई विपरीत प्रभाव है, उस दुष्प्रभाव को कैसे दूर किया जा सकता है। इसकी जांच हर हालत में होनी ही चाहिए। ब्रिटिश कंपनी एक्स्ट्रा जेनिका ब्रिटेन की हाईकोर्ट में इस मामले की सुनवाई में शामिल है। ब्रिटेन के स्वास्थ्य विभाग और ब्रिटेन की अदालतों में साइड इफेक्ट को लेकर जो बातें निकलकर सामने आईं हैं। उसके लिए कंपनी और सरकार क्या कर सकती है। इसका निर्णय वहां की न्यायपालिका कर रही है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के खोजकताओं ने भी इस मामले में रिसर्च शुरू की थी लेकिन उसे रोक दिया गया। जिस महामारी का असर करोड़ों लोगों पर हुआ है। इस वायरस का कोई इलाज उसे समय चिकित्सा जगत के पास नहीं था। बीमारी सामने आने के बाद इलाज अपने-अपने तरीके से किए गए थे। जब कोरोना वैक्सीन आई, तो आशा की एक किरण जागी। लोगों ने वैक्सीन भी लगवाई। वैक्सीन लगने के बाद यदि कोई साइड इफेक्ट लोगों में देखने को मिल रहे हैं। तो साइड इफेक्ट के इलाज से ना तो सरकार को बचाना चाहिए। नाही न्यायपालिका को अपनी जिम्मेदारी से बचना चाहिए।

चिंतन-मनन

अपूर्णता से पूर्णता की ओर

मनुष्य का बाह्य जीवन वस्तुतः उसके आंतरिक स्वरूप का प्रतिबिम्ब मात्र होता है। जैसे ड्राइवर मोटर की दिशा में मनचाहा बदलाव कर सकता है। उसी प्रकार, जीवन के बाहरी ढर्रे में भारी और आश्चर्यकारी परिवर्तन हो सकता है। वाल्मीकि और अंगुलिमाल जैसे भयंकर डाकू क्षण भर में परिवर्तित होकर इतिहास प्रसिद्ध संत बन गये। गणिका और आम्रपाली जैसी वीरांगनाओं को सती-साध्वी का प्रातः स्मरणीय स्वरूप ग्रहण करते देर न लगी। वामित्र और भतृहरि जैसे विलासी राजा उच्च कोटि के योगी बन गये। नृशंस अशोक बौद्ध धर्म का महान प्रचारक बना। तुलसीदास की कामुकता का भक्ति भावना में परिणत हो जाना प्रसिद्ध है। ऐसे असंख्य चरित्र इतिहास में पढ़े जा सकते हैं। छोटी श्रेणी में छोटे-मोटे आश्चर्यजनक परिवर्तन नित्य ही देखने को मिल सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि जीवन का बाहरी ढर्रा जो चिर प्रयत्न से बना हुआ होता है, विचारों में भावनाओं में परिवर्तन आते ही बदल जाता है। मित्र को शत्रु बनते, शत्रु को मित्र रूप में परिणत होते, दुष्ट को संत बनते, संत को दुष्टता पर उतरते, कंजूस को उदार, उदार को कंजूस, विषयी को तपस्वी, तपस्वी को विषयी बनते देर नहीं लगती। आलसी उद्योगी बनते हैं और उद्योगी आलस्यग्रस्त होकर दिन बिताते हैं। दुगरुणियों में सद्गुण बढ़ते और सद्गुणी में दुगरुण उपजते देर नहीं लगती। इसका एकमात्र कारण इतना ही है कि उनकी विचारधारा बदल गई, भावनाओं में परिवर्तन हो गया। संसार का जो भी भला-बुरा स्वरूप हमें दृष्टिगोचर हो रहा है, समाज में जो कुछ भी शुभ-अशुभ दिखाई पड़ रहा है, व्यक्ति के जीवन में जो कुछ उत्कृष्ट-निकृष्ट है, उसका मूल कारण उसकी अंतःस्थिति ही होती है। धनी-निर्धन, रोग-नीरोग, अकाल मृत्यु-दीर्घ जीवन, मूर्ख-विद्वान, घृणित-प्रतिष्ठत और सफल-असफल का बाहरी अंतर देखकर उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है। यह बाहरी भली-बुरी परिस्थितियां मनुष्य के मनोबल, आस्था और अंतःप्रेरणाओं की प्रतीक हैं।

कब भूखमरी एवं भूखें लोगों की दुनिया से निजात मिलेगी?

ललित गर्ग

विश्व खाद्य दिवस 16 अक्टूबर को दुनिया भर में हर साल मनाया जाने वाला एक अंतरराष्ट्रीय दिवस है। 1945 में संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन की स्थापना उपलक्ष्य में यह दिवस भूख और खाद्य सुरक्षा से संबंधित कई अन्य संगठनों द्वारा व्यापक रूप से मनाया जाता है, जिसमें विश्व खाद्य कार्यक्रम, विश्व स्वास्थ्य संगठन और कृषि विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय कोष शामिल हैं। डब्ल्यूएफपी को भूख से लड़ने, संघर्ष क्षेत्रों में शांति में योगदान देने और युद्ध और संघर्ष के लिए हथियार के रूप में भूख के इस्तेमाल को रोकने में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए 2020 का शांति का नोबेल पुरस्कार मिला। साल 2024 की थीम है बेहतर जीवन और बेहतर भविष्य के लिए भोजन का अधिकार ह्ल आज भारत एवं अन्य देशों में भोजन की बबार्दा को रोकना भी प्रमुख प्राथमिकता बननी चाहिए। भारत सरकार भी हर व्यक्ति तक भोजन की पहुँच और विशेष रूप से कमजोर वर्ग के लिए ह्यप्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजनाह्ल व अंत्योदय अन्न योजना जैसे कार्यक्रम चलाती है।

विश्व की करीब दो अरब तीस करोड़ आबादी को भूखमरी एवं भूख का सामना करना पड़ रहा है। दो वक्त की भोजन सामग्री जुटाने के लिए इस आबादी को जिन मुश्किलों, संकटों एवं त्रासद स्थितियों का सामना करना पड़ रहा है, वह विश्व की सरकारों एवं व्यवस्थाओं के विकास के बयानों को बेमानी सिद्ध करता है। संयुक्त राष्ट्र की इस रिपोर्ट के मुताबिक, कोरोना महामारी और उसके बाद रूस-यूक्रेन युद्ध ने भूखमरी को विकट बनाने में अहम भूमिका निभाई है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया 2030 तक सभी रूपों में भूख, खाद्य असुरक्षा, स्वास्थ्य और कुपोषण को खत्म करने के अपने लक्ष्य से और दूर जा रही है। लेकिन भारत-सरकार के प्रयासों से भारत में कुपोषण एवं भूखमरी से उबरने की सफल कोशिशें हो रही है। भारत की टिकाऊ और स्वस्थ खाने की आदतों की दिशा में प्रगति स्पष्ट है। खेत से लेकर मेज तक का आंदोलन जोर पकड़ रहा है, जो उपभोक्ताओं को ताजा, स्थानीय रूप से प्राप्त उपज से जोड़ रहा है। खाद्य उद्यमियों की सफलता की कहानियाँ लचीलापन और नवाचार को दशार्ती हैं, जो एक जीवंत खाद्य परिदृश्य में योगदान देती हैं। अत्याधुनिक खाद्य प्रौद्योगिकी नवाचारों के साथ, भारतीय खाद्य उद्योग विकसित हो रहा है, जिससे दक्षता और कम बबार्दी सुनिश्चित हो रही है।

कुपोषण और भुखमरी से जुड़ी वैश्विक रिपोर्टें न केवल चौंकाने बल्कि सरकारों की नाकामी को उजागर करने वाली ही होती हैं। विश्वभर की शासन-व्यवस्थाओं का नाकामी एवं शैतानों की शरणस्थली बनना एक शर्मनाक विवशता है। लेकिन इस विवशता को कब तक ढोते रहेंगे और कब तक दुनिया भर में कुपोषितों का आंकड़ा बढ़ता रहेगा, यह गंभीर एवं चिन्ताजनक स्थिति है। लेकिन ज्यादा चिंताजनक यह है कि तमाम कोशिशों और दावों के बावजूद कुपोषितों और भुखमरी का सामना करने वालों का आंकड़ा पिछली बार के मुकाबले हर बार बढ़ा हुआ ही निकलता है। रिपोर्टें बताती हैं कि ऐसी गंभीर समस्याओं से लड़ते हुए हम कहां से कहां पहुंचे है। इसी में एक बड़ा सवाल यह भी निकलता है कि जिन लक्ष्यों को लेकर दुनिया के देश सामूहिक तौर पर या अपने प्रयासों के दावे करते रहे, उनकी कामयाबी कितनी नगण्य एवं निराशाजनक है। कुपोषण, गरीबी, भूख में सीधा रिश्ता है। यह दो-चार देशों ही नहीं, बल्कि दुनिया के बहुत बड़े भूभागों के लिए चुनौती बनी हुई है। दुनिया से लगभग आधी आबादी इन समस्याओं से जूझ रही है। इसलिए यह सवाल तो उठता ही रहेगा कि इन समस्याओं से जूझने वाले देश आखिर क्यों नहीं इनसे निपट पा रहे हैं? इसका एक बड़ा कारण आबादी का बढ़ना भी है। गरीब के संतान ज्यादा पैदा होती है क्योंकि कुपोषण में आबादी ज्यादा बढ़ती है। विकसित राष्ट्रों में आबादी की बढ़त का अनुपात कम है, अविकसित और निर्धन राष्ट्रों की आबादी की बढ़त का अनुपात ज्यादा है। भुखमरी पर स्टैंडिंग टुगेदर फॉर न्यूट्रीशन कंसोर्टियम ने आर्थिक और पोषण डाटा इकट्ठा किया, इस शोध का नेतृत्व करने वाले सासकिया ओसनदार्प अनुमान लगाते हैं कि जो महिलाएं अभी गर्भवती हैं वो ऐसे बच्चों को जन्म देंगी जो जन्म के पहले से ही कुपोषित हैं और ये बच्चे शुरू से ही कुपोषण के शिकार रहेंगे। एक पूरी पीढ़ी दांव पर है। अफ्रीकी देशों से आने वाली तस्वीरें डराती हैं। खाने के एक-एक पैकेट के लिए हजारों की भीड़ उमड़ पड़ती है। ऐसे में पौष्टिक भोजन की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। महंगाई के कारण मध्य और निम्न वर्ग के लोग अपने खान-पान के खर्च में भारी कटौती के लिए मजबूर होते हैं। ऐसे में एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए निर्धारित मानकों वाले खाद्य पदार्थ उनकी पहुंच से दूर हो जाते हैं। पौष्टिक भोजन के अभाव में लोग गंभीर बीमारियों की जद में आने लगते हैं।

गरीब मुल्कों की मदद के लिए विश्व खाद्य कार्यक्रम को तेज करने की जरूरत है। विकासशील देशों को ऐसी नीतियां बनानी होंगी जो गरीबी, कुपोषण एवं भुखमरी दूर कर सकें। सत्ताएं ठान लें तो हर नागरिक को पौष्टिक भोजन देना मुश्किल भी नहीं है। लेकिन इसकी सबसे बड़ी बाधा शासन-व्यवस्थाओं में बढ़ता भ्रष्टाचार है। गलत जब गलत न लगे तो यह मानना चाहिए कि बीमारी गंभीर है। बीमार व्यवस्था से स्वस्थ शासन की उम्मीद कैसे संभव है? संयुक्त राष्ट्र की ताजा वैश्विक खाद्य सुरक्षा रिपोर्ट में दुनिया में भुखमरी की स्थिति पहले के मुकाबले ज्यादा विकराल होने की स्थितियां तमाम विकास की तस्वीरों पर एक बदनुमा दाग है। दुनिया में उभरती आर्थिक महाशक्तियों, व्यवस्थाओं एवं विकास के बीच भूखे लोगों की तादाद में इजाफा होना दुनिया के विकास एवं संतुलित समाज की संरचना पर एक गंभीर प्रश्न है। कहीं-ना-कहीं दुनिया के विकास मॉडल में खामी है या वर्तमान सरकारों की कथनी और करनी में फर्क है। ऐसा लगता है कि विकास के लुभावने स्वरूप को कामयाबी माना जाने लगा है, लेकिन इसके बुनियादी पहलुओं को केंद्र में रखकर जरूरी कदम नहीं उठाए गए या उन पर अमल नहीं किया गया, तभी भूखमरी एवं भूखे लोगों की विडम्बनापूर्ण स्थितियां सुरसा की भांति बढ़ती ही जा रही है। यह कैसी संवेदनहीनता एवं उपेक्षापूर्ण मानसिकता है कि भूखमरी एवं कुपोषण की त्रासद एवं खौफनाक मसले पर किसी नई रिपोर्ट पर हैरानी तक नहीं होती, मगर इससे इतना जरूर पता चलता है कि विश्वभर में नीतियां बनाने और उन्हें लागू करने को लेकर कोई संतुलित रुख नहीं अपनाया जाता। यह शासन व्यवस्थाओं की नीति एवं नियत में खोट को ही दशार्ता है। हमारी दुनिया विरोधाभासी एवं विडम्बनाओं से ग्रस्त है। एक तरफ भूखमरी तो दूसरी ओर महंगी दावतों और धनाढ्य वर्ग की विलासिताओं के अम्बार, बड़ी-बड़ी दावतों में जूठन की बहुतायत मानवीयता पर एक बदनुमा दाग है। इस तरह व्यर्थ होने वाले भोजन पर अंकुश लगाया जाए, विज्ञापन कंपनियों को भी दिशा निर्देश दिए जाएं, होटलों और शैक्षिक संस्थानों, दफ्तरों, कैंटीनों, बैठकों, शादी और अन्य समारोहों और अन्य संस्थाओं में खाना बेकार न किया जाए। इस भोजन का हम अपने समाज की बदहाली, भूखमरी और कुपोषण से छुटकारे के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। सरकारों के भरोसे ही नहीं, बल्कि जन-जागृति के माध्यम से ऐसा माहौल बनाना चाहिए। आखिर में खुद से पूछना चाहिए कि क्या हम अशांत, अस्थिर, हिंसक और अस्वस्थ समाज चाहते हैं या उसे बदलना चाहते हैं? क्या हम भूखमरी एवं भूखें लोगों की दुनिया के नागरिक होना चाहते है या खुशहाल एवं साधन-सम्पन्न नागरिकों की दुनिया के नागरिक?

गुजरात हादसा : कब तक जिन्दा दफन होते रहेंगे बेकसूर मजदूर

नरेन्द्र भारती

कब तक जिन्दा दफन होते रहेंगे बेकसूर मजदूर यह एक यक्ष प्रश्न बनता जा रहा है बेशक प्रतिवर्ष 1 मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है । केवल मात्र एक दिन बडे-बड़े सैमिनार,गोष्ठियां की जाती है मजदूरों के हितों को सुरक्षित करने के लिए बड़े दावे किये जातें है मगर 364 दिन मजदूरों के बारे में कोई नहीं सोचता कि मजदूरों के साथ कैसे-कैसे हादसे होते रहते है।प्रतिदिन समाचार पत्रों में मजदूरों के मरने की खबरें सुखियां बनती है मगर सरकारें मूकदर्शक बनी तमाशा देख रही हैं। देश के कारखानों में मजदूर मर रहे हैं हर जगह मजदूर काल का ग्रास बन रहे है। ताजा हादसा 12 अक्टूबर को गुजरात के मेहसाणा के कड़ी कस्बे मे घटित हुआ जहाँ काम करते समय 9 मजदूर जिन्दा दफन हो गए सभी मजदूरों के शव निकाल दिए है दफन होने वाले मजदूर 25 से तीस साल के थे'मजदूरों ने सपने मे भी नहीं सोचा होगा की उनकी इतनी दर्दनाक मौत होगी'देश में मजदूरों के साथ हादसे कब थमेगें यह एक यक्ष प्रशन है। हर साल दिवस मनाए जाते है मगर धरातल की सच्चाइयां बहुत ही भयानक है मजदूरों का शोषण किया जाता है। मजदूरों के नाम पर सैकडों योजनाए चलाई जाती है मगर उन्हे उनका हक नहीं मिलता। देश में हर रोज मजदूर बेमौत मर रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार उत्तरकाशी में बेकसूर मजदूरों ने 17दिन और 16 रातें कैसे निकाली थी यह मजदूर ही जानते होंगे' खौफनाक मंजर को कभी नहीं भूल पाएंगे' 17 दिन सूर्य के दर्शन नहीं हुए थे' मजदूरों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था की जिस सुरंग का निर्माण कर रहे हैं उसमें कैद हो जाएंगे' करोड़ों देश वासिओं की दुआएं रंग लाई और मजदूरों को नया जीवन मिल गया और 12दिन सुरंग की कैद से मुक्त हो गए थे' 12 तारीख को एक तरफ रविवार को दीपावली के दिन जहाँ पूरा भारतवर्ष दिवाली की खुशियाँ मना रहा था वहीं दूसरी तरफ उत्तराखंड के उत्तरकाशी में निमार्णाधीन सुरंग में बहुत ही भयंकर दुःखद हादसा हुआ था जब सुरंग ढहने से 41मजदूर सुरंग के अंदर फंस गए थे' उत्तरकाशी के सिल्कयारा में राष्ट्रीय राजमार्ग पर बनी सुरंग में फंसे 41 मजदूर जिंदगी व मौत के बीच झूल रहे थे सरकार द्वारा मजदूरों को बाहर निकालने के लिए जारी रेस्क्यू अभियान का 17 दिन ऑपरेशन जारी रहा था और मजदूरों को सुरक्षित बाहर निकाल दिया गया था' देश प्रतिदिन समाचार पत्रों में मजदूरों के मरने की खबरें सुखियां बनती है मगर सरकारें मूकदर्शक बनी तमाशा देख रही हैं। देश में मजदूरों के साथ हादसे थमने का नाम नहीं ले रहें हैं।हर साल दिवस मनाए जाते है मगर धरातल की सच्चाइयां बहुत ही भयानक है मजदूरों का शोषण किया जाता है। मजदूरों के साथ होने वाले यह हादसे बहुत ही त्रासदी है।कहीं उद्योगों में जलकर मारे जा रहे हैं।हादसों की बजह से बच्चे अनाथ हो रहे है।मगर केन्द्र व राज्य की सरकारों को जरा सा सदमा होता तो मजदूरों के हितों में कदम उठाती लेकिन सरकारें तो तब जागती हैं जब बड़ा हादसा घटित हो जाता है।देश में हर वर्ष लाखों मजदूर दबकर मारे जा रहे हैं उद्योगों में जलकर मारे जा रहे हैं। मगर केन्द्र व राज्य की सरकारों को जरा सा सदमा होता तो मजदूरों के हितों में कदम उठाती लेकिन सरकारें तो तब जागती हैं जब बड़ा हादसा घटित हो जाता है।देश के कारखानों में मजदूर मर रहे हैं, इमारतों के नीचे दबकर मजदूर काल का ग्रास बन रहे है।हादसों को देखकर रौगंटे खडे.हो जाते हैं देश के राज्यों में चल रहे ईटों के भठ्ठों में मजदूर मारे जा रहे हैं।मजदूरों के पसीने से ही ईटें पकती हैं मगर भठठा मालिक मजदूरों का शोषण कर रहे हैं मजदूर खून-पसीना बहाकर काम करते है।मगर बदले में मेहनताना नाममात्र दिया जाता है।मालिक मजदूरों के सिर पर करोड़ों रुपया कमा रहे है।आकडों के मुताबिक बीते सालों में देश में हजारों मजदूर मारे जा चुके है।हादसों नं सवाल खड़े कर दिये हैं कि बार-बार हो रहे इन हादसों के कारण क्या है इस घटना ने यह प्रमाणित कर दिया है कि बीती घटनाओं से न तो सरकार ने सबक सिखा और न ही लोगों ने सीखा। हांलाकि इसयह कोई पहला हादसा नहीं है पिछले कई सालों से ऐसे दर्दनाक हादसे हो रहे हैं। बीते वर्ष में रायबरेली के उंचाहार में एटीपीसी संयत्र का बायलर फटने से 30 मजदूरों की दर्दनाक मौत हो गई थी तथा 100के लगभग घायल हो गए थे।500 मैगावाट इकाई के बायलर में यह हादसा हुआ था उस समय 200 कामगार मौजूद थे सरकारों ने मृतकों को मुआवजे की घोषणा करती है मगर मुआवजा इसका हल नहीं है।एक ऐसा ही हादसा जयपुर के पास खातोलाई गांव में घटित हुआ था जहां टाज्सफारमर फटने से 14 लोगों की मौत हो गई थी। इन हादसों ने औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूरों की सुरक्षा पर प्रशनचिन्ह लगा दिया है इन हादसों पर संज्ञान लेना होगा तथा मजदूरों की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने होगें ताकि भविष्य में ऐसे हादसों पर रोक लग सके। गत वर्ष जम्मू के उधमपूर से 80 किलोमीटर दूर रामबन जिले के चंद्रकोट में जम्मू-कश्मीर हाईवे पर टनल कर्मचारियों की बैरक में आग लगने से दस श्रमिक जिंदा जल गए थे।गत वर्ष एक निमार्णाधिन प्रोजेक्ट की दीवार गिरने से चार मजदूर बेमौत मारे गए।यहां पर 11 मजदूर काम कर रहे थे कि अचानक दीवार गिर गई सात मजदूर तो भागकर बच गए मगर बेचारे चार मजदूर जिन्दा दफन हो गए थे ।इन मजदूरों पर 42 मीटर लंबी दीवार गिर गई यह बहुत ही दुखद हादसा था। मुम्बई के अलीबाग में एक पटाखा फैक्ट्री में आग लगने से 9 मजदूर मारे गए और 19 घायल हो गए थे। और दूसरी घटना में 24 फरवरी 2014 को कुल्लु के मणीकर्ण में करंट लगने से एक मजदूर की मौत हो गई थी जो के एक ठेकेदार के पास काम कर रहा था इस दर्दनाक हादसे में एक अन्य मजदूर घायल हो गया था। गोवा के कनाकोना शहर में फिर एक निमार्णाधीन इमारत गिरने से 7 लोगों की मौत हो गई थी। जब यह इमारत ढही उस समय 40 लोग काम कर रहे थे।

सोलह कलाओं से पूर्ण चंद्रमा बरसाता है अमृत!

डॉ श्रीगोपाल नारसन

आश्विन माह के पूर्णिमा तिथि की शुरूआत 16 अक्टूबर को रात्रि 08 बजकर 40 मिनट पर होगी। जिसका समापन अगले दिन 17 अक्टूबर को शाम को 04 बजकर 55 मिनट पर होगा। इस दिन चंद्रमा सोलह कलाओं से पूर्ण होकर रातभर अपनी किरणों से अमृत वर्षा करता है। देश के कई राज्यों में इसे फसल उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन खीर बनाने की प्रथा है। खीर को रातभर चंद्रमा की चांदनी में रखा जाता है।मान्यता है कि इस दिन रातभर खीर को चंद्रमा की चांदनी में रखने से खीर अमृत के समान हो जाती है और इस खीर का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद होता है।शरद पूर्णिमा को शाम 7:18 बजे से रेवती नक्षत्र का प्रारंभ है। रेवती नक्षत्र को शुभ माना गया है। शरद पूर्णिमा की खीर शाम को 7:18 बजे के बाद चांदनी में रख सकते हैं। शरद पूर्णिमा की रात जब चंद्रमा पूर्ण रूप से दिखाई देने लगे और उसकी किरणें आप तक पहुंचने लगें,तब खीर बनाकर उसे खुले में रखने से फायदेमंद होता है।इस साल की शरद पूर्णिमा 2024 पर 3 शुभ संयोग बन रहे हैं। इससे इसका महत्व बढ़ गया है। इस पूर्णिमा को रास पूर्णिमा, कमला पूर्णिमा नाम से भी जाना जाता है। इस दिन शरद पूर्णिमा व्रत और लक्ष्मीजी की पूजा करने वालों के लिए चंद्रमा की पूजा अनिवार्य है। शरद पूर्णिमा के निर्धारण के लिए इसका निशीथ व्यापिनी होना जरूरी है। इस दिन चंद्रोदय शाम 5.02 बजे होगा। इस दिन रेवती नक्षत्र, रवि और ध्रुव योग का विशेष संयोग भी बन रहा है।

पहली मान्यता यह है कि इस दिन भगवान कृष्ण ने गोपियों के साथ महा रास का आयोजन किया था, जिसके कारण इसे रास पूर्णिमा कहा जाता है।दूसरी मान्यता यह है शरद पूर्णिमा के दिन माता लक्ष्मी पृथ्वी पर भ्रमण करने के लिए आती है। शरद पूर्णिमा के दिन खुले आसमान के नीचे चांद की रौशनी में खीर रखने का विधान है। शरद पूर्णिमा के रात चंद्रमा की रौशनी बहुत ही महतवपूर्ण माना जाती है। इस दिन चंद्रमा सोलह कला से सुसज्जित होते है ज्योतिषशास्त्र के अनुसार चंद्रमा को मन का कारक माना गया है चंद्रमा का प्रकाश हमारे शारीर को शीतलता प्रदान करते करते है साथ ही शरीर में उर्जा भरपूर प्रदान करते है। शरद पूर्णिमा की रात की किरण अमृत समान है इसलिए शरद पूर्णिमा की रात में चावल की खीर बनाकर बर्तन में रखकर रात्रि में खुले आसमान के निचे रखकर जालीदार कपडे से ढककर रखे अगले दिन ब्रह्म मुहूर्त में भगवान विष्णु को खीर का भोग लगाकर प्रसाद के रूप में पूरे परिवार को खिलाए इससे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाता है।

आज का राशिफल

मेष आज दिन बहुत शुभ है, जीवनसाथी का पूरा सहयोग मिलेगा। रुके हुए कार्य पूरे होंगे।	**तुला** आज भाग्य साथ दे रहा है, आज मन में शांति और स्थिरता रहेगी। सफलता मिलेगी।
वृषभ सभी काम बिना किसी रुकावट के पूरे होंगे। रुका हुआ धन मिलने से मन प्रसन्न होगा।	**वृश्चिक** आज भाग्य का साथ मिलेगा, नई योजनाओं पर काम करने में मजा आएगा।
मिथुन आज करियर के मामले में दिन सफलता से भरा रहेगा। आज ही फाइनेंस से जुड़े फैसले ले लें।	**धनु** आज का दिन मिलाजुला रहेगा। कुछ मामलों में भागदौड़ करनी पड़ सकती है।
कर्क आज किसी पुराने अधूरे काम को पूरा करने में बीतेगा और उसमें आपको सफलता मिलेगी।	**मकर** भागदौड़ में बीतेगा लेकिन एक बार जब आप अपने कामों को एक-एक करके निपटाना शुरू कर देंगे।
सिंह दूसरों से प्रेरणा मिलेगी। ऑफिस में सहकर्मी आपके टीम वर्क की सराहना करेंगे।	**कुंभ** आज का दिन अनुकूल रहेगा। सुबह से ही किसी शुभ समाचार का इंतजार रहेगा।
कन्या अपनी रुचि के कामों को आगे बढ़ाने के बारे में सोचें तो ज्यादा फायदा होगा।	**मीन** आज का दिन परेशानियों भरा रहेगा। सुबह जिन बातों को लेकर आप परेशान रहेंगे।

राजकाज

नेशनल कांफ्रेंस को कांग्रेस की जरूरत नहीं?

राजनीति में गिरगिट की तरह नेता भी अपना रंग बदल देते हैं। जम्मू कश्मीर चुनाव परिणाम के जो नतीजे आए हैं। उसमें नेशनल कांफ्रेंस पार्टी को 42 सीटों पर विजय प्राप्त हुई है। 6 निर्दलीय प्रत्याशियों को विजय प्राप्त हुई है। निर्दलीय विधायकों ने नेशनल कांफ्रेंस को समर्थन दे दिया है। एक सीट पर आम आदमी पार्टी ने भी अपना समर्थन दे दिया है। ऐसी स्थिति में अब नेशनल कांफ्रेंस को कांग्रेस की समर्थन की जरूरत नहीं रही। हाल ही में नेशनल कांफ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला ने कांग्रेस को सीख देते हुए कहा, हरियाणा की हार पर कांग्रेस को विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मैनें पहले भी कहा था। एग्जिट पोल पर भरोसा नहीं करना चाहिए। जिस तरह से अब्दुल्ला ने अपना बयान दिया है। यह माना जा रहा है, उन्होंने अपने तेवर कांग्रेस को लेकर कड़े कर दिए हैं। सत्ता की भागीदारी में कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस के ऊपर दबाव नहीं बना पाए। जम्मू कश्मीर में कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस पर डिपेंड बनी रहे। इस पर सभी को आश्चर्य हो रहा है।

जयप्रकाश को लेकर योगी बने खलनायक

जयप्रकाश नारायण की जयंती पर श्रद्धा सुमन अर्पित नहीं करने देने पर अखिलेश यादव भड़क गए हैं। जयप्रकाश नारायण को माल्यार्पण नहीं करने देने का मामला इतना तूल पकड़ेगा। यह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नहीं सोचा था।योगी जी की तनातनी अखिलेश यादव के साथ है। लेकिन जिस तरह से उन्होंने अखिलेश की सरकारी आवास के चारों ओर वेरीकेटिंग लगवाकर अखिलेश को न केवल हीरो बना दिया है। बरन केंद्र की सरकार को भी पशो-पेश में डाल दिया है। उत्तर प्रदेश की राजनीति में संजय सेठ को लेकर बदनामी का ठीकरा अपने सिर पर ओढ़ लिया है। इसकी चर्चा देश भर में हो रही है।

कार्टून कोना

आज का इतिहास

1793 फ्रांसीसी क्रांति के दौरान रानी मेरी एटोनेशे को मौत के घाट उतार दिया गया। 1943 शिकागो के मेयर एडवर्ड केली ने भूमिगत रेल प्रणाली का उद्घाटन किया। 1946 दस नाजी युद्ध अपराधियों को फांसी दी गयी। 195१ बंगाल का प्रथम विभाजन हुआ। 1964 चीन ने प्रथम परमाणु परीक्षण किया। 1974 अनवर सादात विधिवता मिस्त्र के राष्ट्रपति चुने गए। 1973 अमरीका के हेनरी किसिंजर और वियतनाम के ली डक को नोबेल शांति पुरस्कार देने की घोषणा की गई लेकिन ली डक ने उसे ठुकरा दिया। 1978 रोमन कैथोलिक पादरियों ने केरोल वोजतिलका को पोप चुना। 1983 बेरूत हवाई अड्डे पर हमले में अमरीकी कैप्टन माइकल ओलर मारे गए और कई अन्य सैनिक घायल हो गए। 1986 हरगोविंद खुराना को चिकित्सा के क्षेत्र में योगदान के लिए नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा की गई।

दैनिक पंचांग

16 अक्टूबर 2024 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

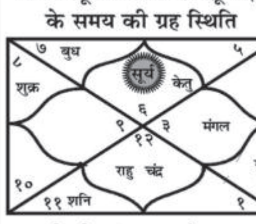

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	कन्या में	तुला	06.06 बजे से
चंद्र	मीन में	वृश्चिक	08.20 ब.से
मंगल	मिथुन में	धनु	10.36 बजे से
बुध	तुला में	मकर	12.42 बजे से
गुरु	वृष में	कुंभ	14.28 बजे से
शुक्र	वृश्चिक में	मीन	16.01 बजे से
शनि	कुंभ में	मेष	17.31 बजे से
राहु	मीन में	वृष	19.11 बजे से
केतु	कन्या में	मिथुन	21.10 बजे से
राहुकाल		कर्क	23.23 बजे से
12.00 से 1.30		सिंह	01.39 बजे से
बजे तक		कन्या	03.51 बजे से

बुधवार 2024 वर्ष का 290 वां दिन **दिशाशूल** उत्तर **ऋतु** शरद। **विक्रम संवत्** 2081 **शक संवत्** 1946 **मास** आश्विन **पक्ष** शुक्ल **तिथि** चतुर्दशी 20.41 बजे को समाप्त। **नक्षत्र** उत्तराभाद्रपदा 19.18 बजे को समाप्त। **योग** ध्रुव 10.09 बजे तदनन्तर व्याघात 05.56 बजे प्रात: को समाप्त। **करण** गर 10.32 बजे तदनन्तर वणिज 20.41 बजे को समाप्त। **चन्द्रायु** 13.2 घण्टे **रवि क्रान्ति** दक्षिण 08° 59' **सूर्य** दक्षिणायन **कलि अहर्गण** 1872134 **जूलियन दिन** 2460599.5 **कलियुग संवत्** 5125 **कल्पारंभ संवत्** 1972949123 **सृष्टि ग्रहारंभ संवत्** 1955885123 **वीरनिर्वाण संवत्** 2550 **हिजरी सन्** 1446 **महीना** रवि उस्सानी **तारीख** 12 **विशेष** कोजागरी व्रत, शरद पूर्णिमा।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
लाभ	05.54 से	07.22 बजे तक	उद्वेग	05.41 से	07.12 बजे तक
अमृत	07.22 से	08.51 बजे तक	शुभ	07.12 से	08.44 बजे तक
काल	08.15 से	10.19 बजे तक	अमृत	08.44 से	10.16 बजे तक
शुभ	10.19 से	11.47 बजे तक	चर	10.16 से	11.47 बजे तक
रोग	11.47 से	01.16 बजे तक	रोग	11.47 से	01.19 बजे तक
उद्वेग	01.16 से	02.44 बजे तक	काल	01.19 से	02.51 बजे तक
चर	02.44 से	04.12 बजे तक	लाभ	02.51 से	04.23 बजे तक
लाभ	04.12 से	05.41 बजे तक	उद्वेग	04.23 से	05.54 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

कनाडा एक ऐसा देश है जो कानून के शासन में निहित है, और हमारे नागरिकों की सुरक्षा सर्वोपरि है- जस्टिन ट्रूडो

ओटावा , एजेंसी। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने कहा है कि कनाडा कभी भी कनाडा की धरती पर कनाडाई नागरिकों को धमकाने और उनकी हत्या करने में विदेशी सरकारों की संलिप्तता को बर्दाश्त नहीं करेगा, उन्होंने इसे कनाडा की संप्रभुता का अस्वीकार्य उल्लंघन करार दिया. एक बयान में, ट्रूडो ने भारत सरकार से कनाडा सरकार के साथ सहयोग करने और अब तक साझा किए गए सबूतों की विश्वसनीयता और गंभीरता को पहचानने का आग्रह किया. विदेश मंत्रालय ने सोमवार को कहा कि ट्रूडो ने सितंबर 2023 में कुछ आरोप लगाए हैं. हालांकि, कनाडा सरकार ने उनके कई अनुरोधों के बावजूद भारत सरकार के साथ एक भी सबूत साझा नहीं किया है. 14 अक्टूबर को जारी एक बयान में, ट्रूडो ने कहा कि कनाडा एक ऐसा देश है जो कानून के शासन में निहित है, और हमारे नागरिकों की सुरक्षा सर्वोपरि है. इसीलिए, जब हमारी कानून प्रवर्तन और खुफिया सेवाओं ने विश्वसनीय आरोपों की जांच शुरू की कि भारत सरकार के एजेंट कनाडा की धरती पर एक कनाडाई नागरिक हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में सीधे तौर पर शामिल थे - तो हमने जवाब दिया. हमने भारत सरकार के साथ अपनी चिंताओं को साझा किया और उनसे इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर प्रकाश डालने के लिए हमारे साथ काम करने को कहा. साथ ही, पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों ने कनाडाई लोगों को सुरक्षित रखने के लिए अपने पास मौजूद सभी साधनों का इस्तेमाल किया है. उन्होंने आगे कहा कि आज, रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस (ऋष्टस्श्च) की ओर से प्रस्तुत साक्ष्यों को देखते हुए, हम कनाडाई लोगों की सुरक्षा के लिए अतिरिक्त कदम उठा रहे हैं. उन्होंने आरसीएमपी आयुक्त माइक डुहामे के पिछले बयान के बारे में बात की, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि कनाडा के पास सबूत हैं कि भारतीय सरकार के एजेंट ऐसी गतिविधियों में शामिल हैं और लगे हुए हैं जो सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करती हैं, जिसमें गुप्त सूचना एकत्र करने की तकनीक, दक्षिण एशियाई कनाडाई लोगों को लक्षित करने वाला बलपूर्वक व्यवहार और हत्या सहित एक दर्जन से अधिक धमकी भरे और हिंसक कृत्यों में शामिल होना शामिल है और उन्होंने इन कार्रवाइयों को अस्वीकार्य करार दिया. ट्रूडो ने कहा कि जबकि आरसीएमपी और राष्ट्रीय सुरक्षा अधिकारियों ने इस मामले पर भारत सरकार और भारतीय कानून प्रवर्तन समकक्षों के साथ काम करने का प्रयास किया है, उन्हें बार-बार मना कर दिया गया है. यही कारण है कि, इस सप्ताहांत, कनाडाई अधिकारियों ने एक असाधारण कदम उठाया. उन्होंने आरसीएमपी साक्ष्य साझा करने के लिए भारतीय अधिकारियों से मुलाकात की, जिसमें निष्कर्ष निकाला गया कि भारत सरकार के छह एजेंट आपराधिक गतिविधियों में रुचि रखने वाले व्यक्ति हैं. भारत सरकार से बार-बार अनुरोध करने के बावजूद, उन्होंने सहयोग नहीं करने का फैसला किया है. यह देखते हुए कि भारत सरकार अभी भी सहयोग करने से इनकार कर रही है, मेरे सहयोगी, विदेश मंत्री, मेलानी जोली के पास केवल एक ही विकल्प था. आज, उन्होंने इन छह व्यक्तियों के लिए निर्वासन नोटिस जारी किया. उन्हें कनाडा छोड़ना होगा, उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने कहा कि ये छह व्यक्ति अब कनाडा में राजनयिक के रूप में कार्य नहीं कर पाएंगे या कनाडा में फिर से प्रवेश नहीं कर पाएंगे. उन्होंने कहा कि आरसीएमपी द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और कनाडा में सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा बनी रहने वाली आपराधिक गतिविधियों को रोकने के लिए यह आवश्यक है. उन्होंने जोर देकर कहा कि कनाडा सरकार सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से कनाडाई लोगों के अपने देश में सुरक्षित महसूस करने के अधिकार के लिए खड़ी होगी. उन्होंने कहा कि हम कनाडा की धरती पर कनाडाई नागरिकों को धमकाने और मारने में किसी विदेशी सरकार की संलिप्तता को कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे - यह कनाडा की संप्रभुता और अंतर्राष्ट्रीय कानून का गहरा अस्वीकार्य उल्लंघन है. कनाडा ने 13 अक्टूबर को एक राजनयिक विज्ञप्ति में सिख अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की 2023 में हत्या में भारतीय उच्चायुक्त की संलिप्तता का आरोप लगाया. भारत के विदेश मंत्रालय ने 14 अक्टूबर को कनाडा के आरोपों को बेतुका आरोप बताया और तर्क दिया कि यह मामला ट्रूडो सरकार के घरेलू मोर्चे पर सामने आ रही राजनीतिक चुनौतियों से जुड़ा है।

संक्षिप्त समाचार

हवाई हमले में मारा गया हमास एरियल यूनिट का प्रमुख : इजरायली सेना

यरुशलम, एजेंसी। इजरायली सैन्य और सुरक्षा एजेंसी ने कहा है कि गाजा पट्टी में इजरायली हवाई हमले में हमास की हवाई इकाई के प्रमुख की मौत हो गई। इजरायल की सेना और घरेलू सुरक्षा एजेंसी शिन बेट ने एक संयुक्त बयान में इसकी जानकारी दी। शिन्हुआ समाचार एजेंसी के मुताबिक सितंबर में युद्धक विमानों द्वारा किए गए हमले में हमास के हवाई अभियान के प्रमुख समर अबू दक्का की मौत हो गई। बयान के अनुसार, अबू दक्का कई ड्रोन हमलों में शामिल था और हमास के हवाई अभियान में केंद्रीय भूमिका निभाता था। पिछले साल एरियल यूनिट प्रमुख असिम अबू रकाबा के मारे जाने के बाद दक्का को जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इजरायली सुरक्षा अधिकारियों ने कहा कि अबू दक्का 7 अक्टूबर, 2023 को इजरायल के खिलाफ हुए हमले में भी शामिल था। कथित तौर पर उसने दक्षिणी इजरायल में हमास के पैराग्लाइडर और ड्रोन अटैक यूनिट टीम को लीड किया था। उस अचानक हुए अटैक में 1,200 मौतें हुई थीं। जिसके बाद गाजा में जंग के हालात बने। गाजा स्थित स्वास्थ्य अधिकारियों ने सोमवार को एक बयान में जानकारी दी है कि गाजा पर इजरायली हमलों में अब तक 42,289 फिलिस्तीनी मारे गए हैं।

आर्थिक विकास में चीन और अमेरिका से आगे निकल जाएगा भारत- यूएसआईएसपीएफ अध्यक्ष

वाशिंगटन/ नई दिल्ली, एजेंसी। अमेरिका-भारत रणनीतिक साझेदारी मंच (यूएसआईएसपीएफ) के अध्यक्ष जॉन चैंबर्स ने सोमवार को दावा किया कि भारत प्रमुख आर्थिक मापदंडों में चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका से आगे निकल जाएगा। नई दिल्ली में यूएसआईएसपीएफ द्वारा आयोजित वार्षिक भारत नेतृत्व शिखर सम्मेलन 2024 में बोलते हुए, चैंबर्स ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की आर्थिक प्रगति की तेज गति की तारीफ की। चैंबर्स ने कहा, महत्वपूर्ण क्षण वह था जब राष्ट्रपति बाइडेन और प्रधानमंत्री मोदी ने वाशिंगटन में मुलाकात की और घोषणा की कि यह अब तक की सबसे रणनीतिक साझेदारी है। यूएसआईएसपीएफ अध्यक्ष ने कहा, जीडीपी प्रति व्यक्ति आय वृद्धि के मामले में भारत चीन से लगभग 100 प्रतिशत और अमेरिका से 33 प्रतिशत बड़ा होगा। यहां जीवन स्तर और समग्र विकास दुनिया के किसी भी अन्य देश से आगे निकल जाएगा। चैंबर्स ने जोर देते हुए कहा, यह भारत की सदी है। उन्होंने आगे कहा कि अमेरिका के साथ मिलकर व्यापार, सरकार, शिक्षा जगत के लीडर्स के साथ काम करके भारत वैश्विक विकास के लिए एक मॉडल बन सकता है। यूएसआईएसपीएफ अध्यक्ष ने आगे भविष्यवाणी की कि मजबूत अमेरिकी-भारत साझेदारी के माध्यम से, हम संभावित रूप से भारत की जीडीपी वृद्धि को दो प्रतिशत वार्षिक दर से बढ़ा सकते हैं और अमेरिकी जीडीपी वृद्धि को एक प्रतिशत तक बढ़ा सकते हैं। यूएसआईएसपीएफ शिखर सम्मेलन प्रधानमंत्री मोदी की संयुक्त राज्य अमेरिका की सफल यात्रा के बाद हो रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य द्विपक्षीय व्यापार को मजबूत करना, सप्लाई चेन को बढ़ावा देना, सेमीकंडक्टर निवेश, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नेक्स्ट जेनरेशन टेक्नोलॉजी सहयोग को बढ़ावा देना है।

श्रीलंका में बारिश का कहर, तीन लोगों की मौत

कोलंबो, एजेंसी। श्रीलंका में भारी बारिश के कारण लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। श्रीलंका के आपदा प्रबंधन केंद्र (डीएमसी) ने बताया कि मौसम की खराब स्थिति के कारण श्रीलंका में सोमवार सुबह तक तीन लोगों की मौत हो गई। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, डीएमसी ने कहा कि श्रीलंका में सात अक्टूबर से भारी बारिश शुरू हुई और सोमवार सुबह तक देश भर के 12 जिलों में बारिश से उत्पन्न आपदाओं के कारण 34,492 परिवारों के 134,484 लोग विस्थापित हुए हैं। श्रीलंका के सिंचाई विभाग ने पांच मुख्य नदियों के सात स्थानों पर बाढ़ की चेतावनी जारी की है। श्रीलंका के मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, साबरागमुवा, उत्तर-पश्चिमी और उत्तरी प्रांतों तथा गाले और मतारा जिलों में कुछ स्थानों पर 100 मिमी से अधिक भारी बारिश होने की संभावना है। बता दें कि इससे पहले खबर आई थी कि श्रीलंका में बारिश से जुड़ी घटनाओं जैसे बाढ़, तेज हवाएं, पेड़ गिरने और बिजली गिरने के कारण 22 हजार से ज्यादा लोग विस्थापित हुए हैं। श्रीलंका के आपदा प्रबंधन केंद्र (डीएमसी) ने बताया था कि सात अक्टूबर से शनिवार सुबह तक दक्षिण एशियाई देश के 11 जिलों में 5 हजार 348 परिवारों के 22 हजार 64 लोग विस्थापित हो चुके हैं। श्रीलंका के आपदा प्रबंधन केंद्र के अनुसार, पानी से भरे धान के खेत में एक व्यक्ति डूब गए। बता दें कि इसी साल जून में श्रीलंका में बाढ़ और बारिश से संबंधी घटनाओं में कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई थी और छह अन्य लापता बताए हो गए थे।

ईरान का इजराइल पर हमला करना पड़ा भारी, ब्रिटेन ने लगाया कड़ा प्रतिबंध

लंदन, एजेंसी। ईरान का इजराइल के खिलाफ हमला करना भारी पड़ा. ब्रिटेन ने इरान पर कई सख्त प्रतिबंध लगाने का फैसला किया है. इसके तहत ब्रिटेन ने ईरान के सैन्य अफसरों और स्पेस एजेंसी पर बैन लगाया है. विदेश मंत्री डेविड लैमी ने कहा कि बार-बार चेतावनी के बावजूद ईरान और उसके सहयोगियों की खतरनाक कृत्यों से मिडल ईस्ट में तनाव और बढ़े हैं. ब्रिटेन के विदेश कार्यालय ने सोमवार को कहा कि एक अक्टूबर को इजराइल पर ईरान के हमले के बाद उसके सैनिकों, रक्षा संगठनों और अंतरिक्ष अभियानों से जुड़े संगठनों पर बैन लगाए गए हैं. नये प्रतिबंधों का लक्ष्य ईरान की सेना, वायु सेना तथा बैलिस्टिक एवं क्रूज मिसाइल विकास से जुड़े संगठनों के वरिष्ठ अधिकारी हैं.

मिसाइल बनाने से जुड़े संगठन पर बैन : ब्रिटेन ने क्रूज मिसाइल में इस्तेमाल किए जाने वाले हिस्सों और डिजाइन बनाने का काम करने वाले संगठन फरजानेगन प्रोपल्शन सिस्टम डिजाइन ब्यूरो पर भी प्रतिबंध लगाने का फैसला लिया है. इसके अलावा ईरानी अंतरिक्ष एजेंसी पर भी प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया है. ये बैलेस्टिक मिसाइल तैयार करने में तकनीकी सहायता करती है. विदेश मंत्री डेविड लैमी ने कहा कि ईरान और उसके समर्थक मिडल ईस्ट में तनाव को बढ़ावा रहे हैं. उन्होंने बयान में कहा कि इजराइल पर उसके बैलिस्टिक मिसाइलों के हमले के बाद हम ईरान को जवाबदेह ठहरा रहे हैं. इन कृत्यों में मदद करने वालों को बेनकाब कर रहे हैं. ईरान अपने सहयोगियों और भागीदारों के साथ अस्वीकार्य धमकियां दे रहा है. इसके खिलाफ पूरे क्षेत्र में तनाव कम करने के लिए दबाव बनाने के लिए आवश्यक उपाय करना जारी रखेंगे।

अमेरिकी अस्पतालों में मेडिकल प्रोडक्ट्स की कमी, तूफान मिल्टन की वजह से सप्लाई चेन बाधित

सैक्रामेंटो, एजेंसी। संयुक्त राज्य अमेरिका में हेल्थ केयर प्रोवाइडर को मेडिकल प्रोडक्ट्स की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा है। तूफान हेलेन और मिल्टन ने इंट्रावेनस (आईवी) फ्लुइड्स की सप्लाई चेन को गंभीर रूप से बाधित कर दिया है। अमेरिका में सबसे बड़े अस्पताल-बेस्ड रिसर्च एंटरप्राइज, मास जनरल ब्रिघम ने शुक्रवार को घोषणा की कि वह रविवार से कम से कम बुधवार तक गैर-आपातकालीन, वैकल्पिक प्रक्रियाओं को स्थगित कर देगा। इसने कहा कि यह साफ नहीं है कि आईवी फ्लुइड्स की आपूर्ति कब सुधरेगी। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, हेल्थकेयर लॉजिस्टिक्स कंपनी प्रीमियर इंक की तरफ से गुरुवार को जारी एक सर्वे के अनुसार, देश भर में 86 फीसदी से अधिक हेल्थ केयर प्रोवाइडर आईवी फ्लुइड्स की कमी का सामना कर रहे हैं। यह स्थिति तब शुरू हुई जब पिछले महीने के अंत में तूफान हेलेन ने उत्तरी कैरोलिना में बैक्सटर आईवी प्लांट को नुकसान पहुंचाया। इससे देश की 60 फीसदी आईवी सॉल्यूशन सप्लाई निकट भविष्य के लिए ऑफलाइन हो गई। अमेरिकी स्वास्थ्य एवं मानव सेवा मंत्री जेवियर बेसेरा ने 9 अक्टूबर को स्वास्थ्य सेवा नेताओं को लिखे पत्र में कहा कि आने वाले हफ्तों में सप्लाई बाधित रह सकती है और तूफान मिल्टन पहले से ही कमजोर बाजार को और अधिक बाधित कर सकता है।

ताइवान की सीमा में घुसे 14 युद्धपोत और 153 विमान, मध्य रेखा के साथ ही चीन ने पार की हद

ताइपे, एजेंसी। चीन और ताइवान के बीच लगातार तनाव बढ़ता जा रहा है। बीजिंग अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। एक बार फिर चीनी सेना ने ताइवान की सीमा में घुसपैठ की कोशिश की। हालांकि, ताइवान की सेना ने भी इसका जवाब दिया। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि चीन के विमान, नौसैनिक पोत और जहाज ताइवान की सीमा के करीब देखे गए।

इतने विमान दिखाई दिए : ताइवान के राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय (एमएनडी) ने बताया कि मंगलवार सुबह छह बजे ताइवान के आसपास चीनी 14 नौसैनिक पोत और 12 आधिकारिक जहाज देखे गए। जबकि 153 सैन्य विमानों को उड़ान भरते देखा गया। सेना ने बताया कि 153 विमानों में से 111 ने ताइवान स्ट्रेट की मध्य रेखा को पार किया और ताइवान के पूर्वी वायु रक्षा पहचान क्षेत्र (एडीआईजेड) में प्रवेश किया। बता दें चीन और ताइवान के बीच यह जल संधि एक अनौपचारिक सीमा है। इसके जवाब में ताइवान ने चीन की गतिविधि की निगरानी के लिए विमान, नौसैनिक जहाजों और वायु रक्षा मिसाइल प्रणालियों को तैनात किया। एमएनडी ने यह जानकारी सोशल मीडिया मंच एक्स पर दी।

हम स्थिति पर नजर रखे हुए- एमएनडी : ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, आज सुबह 153 विमान , 14 पोत और 12 जहाज ताइवान के आसपास नजर आए। 111 विमानों ने ताइवान स्ट्रेट की

मध्य रेखा को पार किया और ताइवान के उत्तरी, मध्य, दक्षिण-पश्चिमी और दक्षिणपूर्वी एडीआईजेड में प्रवेश किया। हम स्थिति पर नजर बनाए रखे हुए हैं।

क्या है ग्रे जोन रणनीति : गौरतलब है चीन, ताइवान को अपना हिस्सा मानता है, जबकि ताइवान खुद को संप्रभु राष्ट्र मानता है। अब तक चीन ने सीधे ताइवान पर आक्रमण नहीं किया है, लेकिन वो ये सब कुछ ग्रे जोन में करता है। ये चीन की सेना का एक पैंतरा है, जिससे वो सीधे युद्ध तो नहीं करती लेकिन ये शक्ति प्रदर्शन करती है। ग्रे जोन का मतलब है कि कोई देश सीधा हमला नहीं करता है लेकिन इस तरह का डर हमेशा बनाए रखता है। सीधे सैन्य कार्रवाई की जगह, ऐसी कई चीजें होती रहती हैं, जिनसे हमले का डर बना रहता है। ताइवान के साथ चीन यही कर रहा है। चीन सितंबर 2020 से ग्रे जोन रणनीति का अधिक बार उपयोग कर रहा है। जानकारों का कहना है कि ग्रे जोन युद्ध रणनीति दरअसल, एक तरीका है, जिससे लंबी अवधि में धीरे-धीरे प्रतिद्वंद्वी को कमजोर कर दिया जाता है और चीन ताइवान के साथ ठीक यही करने की कोशिश कर रहा है।

सनकी किंग किम जोंग उन ने द. कोरिया पर निकाला गुस्सा, अंतर-कोरियाई सारी सड़कें उड़ा दीं

प्योंगप्यांग, एजेंसी। दक्षिण कोरिया के सनकी किंग किम जोंग उन ने कहा कि उत्तर कोरिया ने मंगलवार को अंतर-कोरिया सड़कों के उन उत्तरी हिस्सों को उड़ा दिया है जो अब उपयोग में नहीं हैं। दक्षिण कोरिया द्वारा उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंगयांग के ऊपर ड्रोन उड़ाए जाने के उसके दावे के बाद दोनों प्रतिद्वंद्वी देशों के बीच तनाव बढ़ गया है। दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ ने एक संक्षिप्त बयान में कहा कि उत्तर कोरिया ने मंगलवार को सड़कों के कुछ हिस्सों को उड़ा दिया। इसमें कहा गया है कि दक्षिण कोरियाई सेना अपनी तैयारी और निगरानी बढ़ा रही है लेकिन उसने और कोई जानकारी नहीं दी। इस कार्रवाई से एक दिन पहले उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन ने अपने शीर्ष सैन्य और सुरक्षा अधिकारियों के साथ एक बैठक बुलायी थी। बैठक में किम ने दक्षिण कोरिया द्वारा कथित तौर पर ड्रोन भेजे जाने को ''दुश्मन का गंभीर उकसावे वाला कदम बताया। उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया द्वारा फिर से ड्रोन भेजे जाने पर उस पर हमले शुरू करने के लिए अपनी सैन्य इकाइयों को तैयार रहने के

लिए कहा था। दक्षिण कोरिया ने ड्रोन भेजे जाने की पुष्टि करने से इनकार कर दिया लेकिन चेतावनी दी थी कि अगर उसके नागरिकों की सुरक्षा को खतरे में डाला गया तो उत्तर कोरिया को इसका अंजाम भुगतना पड़ेगा। अंतर कोरियाई सड़कों को नष्ट करने की कार्रवाई, उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन की दक्षिण कोरिया के साथ संबंध समाप्त करने तथा उसे औपचारिक रूप से अपने देश का प्रमुख शत्रु घोषित करने की उनकी कोशिश के अनुरूप होगी। साल 2000 में अंतर-कोरियाई संबंधों में नरमी के दौरान दोनों देशों ने भारी किलेबंदी वाली अपनी सीमा को दो सड़क मार्गों और दो रेल पटरियों से फिर से जोड़ा था। लेकिन उत्तर कोरिया के परमाणु कार्यक्रम और अन्य मुद्दों को लेकर बाद में उनका संचालन निलंबित कर दिया गया था। पिछले सप्ताह उत्तर कोरिया ने कहा था कि वह दक्षिण कोरिया के साथ अपनी सीमा को स्थायी रूप से अवरुद्ध कर देगा और दक्षिण कोरियाई व अमेरिकी सेनाओं की ''उकसावे वाली कार्रवाई से निपटने के लिए अग्रिम पंक्ति पर रक्षा क्षमताओं का विकास करेगा।

कनाडाई पत्रकार बोर्डमैन ने कहा कि कनाडा में विश्वसनीय नहीं रहे जस्टिन ट्रूडो

ओटावा, एजेंसी। भारत और कनाडा के बीच बढ़ते तनाव के बीच कनाडाई पत्रकार डैनियल बोर्डमैन ने प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की विश्वसनीयता और नेतृत्व में बढ़ते भरोसे की कमी की ओर इशारा किया है. बोर्डमैन ने भारत सरकार की ओर से अपने उच्चायुक्त और अन्य राजनयिकों को वापस बुलाने के फैसले को दोनों देशों के बीच बढ़ती दरार का स्पष्ट संकेत बताया. उन्होंने कहा कि कनाडा में कुछ खालिस्तानी सरकारी सिस्टम के भीतर कुछ तत्व हैं, वे इस पर पूरी तरह से हावी हैं. खालिस्तानी तत्व पूरी तरह से हमलावर हैं. वे इसे पूरी जीत के रूप में ले रहे हैं और भारत पर हमला कर रहे हैं. उन्होंने कनाडाई लोगों के बीच आम भावना पर भी टिप्पणी की, इस बात पर जोर देते हुए कि अधिकांश कनाडाई लोग ट्रूडो के तरीके से निराश हो रहे हैं. उन्होंने कहा कि कनाडा के अधिकांश लोग इस सरकार से बेहद तंग आ चुके हैं. वे संस्थाओं पर भरोसा नहीं करते, मीडिया को विश्वसनीय नहीं मानते, जस्टिन ट्रूडो को विश्वसनीय नहीं मानते. बहुत से कनाडाई इसे देखकर कंधे उचका देंगे और शायद भारत का पक्ष भी लेंगे. उन्होंने कहा कि भारत-कनाडा संबंधों की वर्तमान स्थिति क्रायोस्टेसिस जैसी होगी. मुझे लगता है कि भारतीयों ने कनाडा को तब तक क्रायो पॉड में डाल दिया है जब तक कि हमें नई सरकार नहीं मिल जाती. उन्होंने आगे कहा कि भारत सरकार ट्रूडो

को एक उचित नेता के रूप में नहीं देखती है. उन्होंने कहा कि मुझे नहीं लगता कि वे जस्टिन ट्रूडो को एक उचित अभिनेता के रूप में देखते हैं. मुझे नहीं लगता कि जब भारत की बात आती है तो वे उचित अभिनेता हैं, खासकर जब उनका समर्थन जगमीत सिंह द्वारा किया जाता है, जो खुले तौर पर शत्रुतापूर्ण हैं. बोर्डमैन ने भविष्यवाणी की कि यदि सरकार में बदलाव जल्दी नहीं होता है तो राजनयिक ठहराव कम से कम एक और वर्ष तक जारी रह सकता है. उन्होंने सुझाव दिया कि यदि चुनाव होते हैं, तो नई सरकार भारत के साथ संबंधों के लिए एक अलग दृष्टिकोण अपना सकती है. उन्होंने कहा कि फिलहाल अगले एक साल तक संबंधों में सुधार की कोई गुंजाइश नजर नहीं आती है. उन्होंने कहा कि एक साल बाद यहां सरकार बदलने की संभावना है. नई सरकार आतंकवाद विरोधी और भारत समर्थक हो सकती है।

हांगकांग में बदहाली के दुकानों और 1000 रेस्तरां पर लटका ताला

विक्टोरिया, एजेंसी। हवाई कंपनियां हांगकांग के लिए पर्यटकों को छूट दे रही हैं। वहां पर्यटकों के लिए ड्रोन और दूसरे एअर शो हो रहे हैं। हांगकांग ने सैकड़ों सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर्स को अपने यहां आमंत्रित किया है कि वे आकर देश की खूबसूरती देखें और इसकी कहानी बताएं। इसके बावजूद हांगकांग को पर्यटक नहीं मिल रहे, तो यह आश्चर्य की ही बात है।

दरअसल, एक समय पर्यटन व्यवसाय ही हांगकांग की आर्थिक ताकत था। लेकिन कोविड और राजनीतिक उथल-पुथल के कारण वहां पर्यटकों की संख्या जो घटी, उसमें अब भी वृद्धि नहीं हो पा रही। हांगकांग के लिए परेशानी की बात यह भी है कि थाईलैंड, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे दूसरे एशियाई देशों में पर्यटकों का आंकड़ा कोविड से पहले के स्तर पर आ गया है। लंबे समय से पर्यटकों की कमी के कारण हांगकांग की छोटी-छोटी असंख्य दुकानें और रेस्तरां बंद हो गए हैं। जबकि बड़े होटलों में किसी भी समय दर्जनों कमरे खाली पाए जाते हैं।

ग्राहकों की कमी से छोटी दुकानों और रेस्तरां को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। मार्च से अगस्त के बीच देश में लगभग 1,000 रेस्तरां बंद हो गए हैं। वर्ष 2019 में चीन के वर्चस्ववाद के खिलाफ हांगकांग में हुए जनांदोलन के कारण पर्यटन उद्योग पर प्रतिकूल असर पड़ा। क्रिस्टिन चुंग हांगकांग की इस बदहाली के कई कारण बताए जा रहे हैं। वर्ष 2019 में चीन के वर्चस्ववाद के खिलाफ हांगकांग में हुए जनांदोलन के कारण पर्यटन उद्योग पर प्रतिकूल असर पड़ा। उस साल के उत्तरार्ध में वहां पर्यटकों के आंकड़े में 2018 की तुलना में 40 फीसदी

की कमी आ गई। वर्ष 2020 में कोविड से निपटने के लिए हांगकांग ने अपनी सीमाएं सील कर दी थीं। और अब भारी संख्या में विदेशी नागरिकों और कंपनियों के बाहर निकल जाने से लंबे समय से वैश्विक वित्तीय केंद्र के रूप में हांगकांग की जो छवि बनी थी, उसे धक्का लगा है। और सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि चीन में खाना और शॉपिंग करना महंगा होने के कारण हांगकांग के स्थानीय लोग शॉपिंग करने और यहां तक कि भोजन करने तक के लिए सीमा पार कर चीन पहुंच रहे हैं। ग्राहकों की कमी से छोटी दुकानों और रेस्तरा को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। हांगकांग फेडरेशन ऑफ रेस्टोरेंट्स ऐंड रिलेटेड ट्रेड्स के प्रमुख सिमॉन वांग का-वो के अनुसार, ग्राहकों के अभाव में मार्च से अगस्त के बीच देश में लगभग 1,000 रेस्तरां बंद हो गए हैं।

इस देश में हर साल डॉल्फिन्स को उतारा जाता है मौत के घाट, 16 हजार से ज्यादा मछलियों का होता है शिकार

दुनिया में बहुत से लोगों को मछलियां पकड़ने का शौक होता हैं। हालांकि, कई लोग अलग-अलग उद्देश्य से मछली पकड़ते रहते हैं। इनमें से कई लोग मछलियों को पालता है, तो कई मछलियों का व्यापार करता हैं। हालांकि, कुछ लोग ऐसे होते हैं जो मछलियों को मारकर खा जाता है। लेकिन आपको यह जानकर हैरानी होगी की जापान के ताईजी नाम के इलाके में बड़ी क्रूरता के साथ इस काम को अंजाम दिया जाता है। हैरानी की बात तो यह है कि वहां की सरकार को इससे कोई आपत्ति नहीं है। मगर, पूरी दुनिया में जापान के इस शिकारी खेल की आलोचना की जाती है।

खून से हो जाता है समंदर लाल

ऐसा दावा किया जाता है कि शिकार के दौरान समुद्र के पानी का रंग पूरा लाल हो जाता है। यह तमाशा महीने की शुरुआत में समुद्री तट वाले शहरों में शुरु होता है। इसमें सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात तो यह है की इस अजीबोगरीब खेल को कभी भी बंद नहीं किया जा सकता। इन डॉल्फिन्स में स्तनधारी मछलियों की संख्या सबसे अधिक होता है। क्योंकि उनमें ज्यादा मास पाया जाता है।

इस तरह से किया जाता है शिकार

इन डॉल्फिन्स का शिकार मछुआरे बहुत चालाकी से करते हैं, जिससे ज्यादा से ज्यादा मछलियों को मारा जा सके। सबसे पहले मछुआरे अपनी नावों के नीचे लगे स्टेनलेस स्टील के खंबों में पानी डालकर उस पर ऊपर से हथोड़े को कई बार मारते हैं। इस हथोड़े से उत्पन्न होने वाली आवाजों से पानी के अंदर एक दीवार बनाती है। जिससे प्रभावित होकर डॉल्फिन अपने आप को उस दीवार और तटरेखा के बीच फंसा हुआ पाती हैं। इस ध्वनि से बचने की कोशिश में डॉल्फिन्स विपरीत किनारे की तरफ तैरती हैं। इसका फायदा उठाते हुए मछुआरे मछलियों को ताईजी बंदरगाह के नजदीक एक छोटी खाड़ी की ओर ले जाते हैं। जब लंबे समय तक मछलियां तैरते हुए थक जाती हैं,तब मछुवारे उनकी गर्दन में नुकीली धातु से तेज प्रहार कर देते हैं। जिसके बाद उनकी रीढ़ की हड्डी टूट जाती है और अंतत- उनकी मौत हो जाती है।

दुनिया का सबसे पुराना रेगिस्तान

जहां मौजूद है भगवान के पैरों के निशान

कुछ लोग मानते हैं कि वे देवताओं के पैरों के निशान हैं। दूसरों को लगता है कि वहां रात में परियां नाचती हैं। कुछ अन्य लोगों को शक है कि वहां यूएफओ आते हैं, लेकिन आज तक कोई भी नामीब रेगिस्तान पर बनी लाखों गोलाकार आकृतियों की व्याख्या नहीं कर पाया है। दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका के अटलांटिक तट से लगा नामीब रेगिस्तान धरती पर सबसे सूखी जगहों में से एक है। स्थानीय नामा भाषा में इसका अर्थ है- वह इलाका जहां कुछ भी नहीं है। मंगल ग्रह की सतह जैसा दिखने वाले इस भू-भाग पर रेत के टीले हैं, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ हैं और तीन देशों के 81 हजार वर्ग किलोमीटर में फैले बजरी के मैदान हैं।

पांच करोड़ 50 लाख साल पुराने नामीब रेगिस्तान को दुनिया का सबसे पुराना रेगिस्तान माना जाता है। सहारा रेगिस्तान सिर्फ 20 से 70 लाख साल पहले का है। गर्मियों में यहां तापमान अक्सर 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है और रातें इतनी ठंडी होती हैं कि बर्फ जम जाए। बसने के लिहाज से यह धरती के सबसे दुर्गम इलाकों में से एक है, फिर भी कई प्रजातियों ने इसे अपना घर बनाया है।

नामीब रेगिस्तान दक्षिणी अंगोला से नामीबिया होते हुए 2,000 किलोमीटर दूर दक्षिण अफ्रीका के उत्तरी हिस्से तक फैला है। नामीबिया के लंबे अटलांटिक तट पर यह नाटकीय रूप से समुद्र से मिलता है। ऐसा लगता है मानो पूरब की ओर रेत का अंतहीन समुद्र फैला हो, जो दक्षिण अफ्रीका के 160 किलोमीटर अंदर विशाल ढलान तक जाता है। नामीब रेगिस्तान के सबसे सूखे हिस्सों में साल में औसतन सिर्फ दो मिलीमीटर बारिश होती है। कई साल बिल्कुल बारिश नहीं होती। फिर भी ओरिक्स, स्प्रिंगबॉक (दोनों हिरण की प्रजातियां), चीता, लकड़बग्घा, शुतुरमुर्ग और जेब्रा ने यहां की कठोर परिस्थितियों में खुद को ढाल लिया है। शुतुरमुर्ग पानी के नुकसान को कम करने के लिए अपने शरीर के तापमान को बढ़ा लेते हैं। हार्टमैन के पहाड़ी जेब्रा कुशल पर्वतारोही हैं जिन्होंने रेगिस्तान के बीहड़ इलाकों में खुद को ढाल लिया है। ओरिक्स बिना पानी पिए सिर्फ पौधे की जड़ और कंद खाकर हफ्तों तक जिंदा रह सकते हैं। नामीब रेगिस्तान का सबसे जानलेवा इलाका रेत के टीलों और टूटे हुए जहाजों के जंग खाए पतवारों से भरा हुआ है। अटलांटिक तट पर 500 किलोमीटर लंबे क्षेत्र में फैला यह इलाका कंकाल तट के नाम से जाना जाता है। दक्षिणी अंगोला से मध्य नामीबिया तक फैला यह इलाका व्हेल के अनगिनत कंकालों और लगभग 1,000 जहाजों के मलबे से पटा हुआ है, जो पिछली कई सदियों में यहां जमा हुए हैं। यह कंकाल तट अक्सर घने कोहरे से ढंका रहता है, जो अटलांटिक की ठंडी बेंगुएला धारा और नामीब रेगिस्तान की गर्म हवाओं के टकराने से बनता है। समुद्री जहाजों के लिए इस कोहरे से पार पाना कठिन होता है। स्थानीय सैन लोगों का कहना है कि ईश्वर ने इस क्षेत्र को गुस्से में बनाया है।

1486 ईस्वी में अफ्रीका के पश्चिमी तट के किनारे-किनारे चलते हुए पुर्तगाल के मशहूर नाविक डियागो काओ कुछ समय के लिए कंकाल तट पर रुके थे। काओ और उनके लोगों ने वहां क्रॉस की स्थापना की, लेकिन कठिन परिस्थितियों में वे ज्यादा समय तक टिक नहीं पाए। जाते-जाते उन्होंने इस जगह को नरक का दरवाजा नाम दे दिया। सैलानी सोसुस्वेले के इर्द-गिर्द रेत के गेरुआ टीलों को देखने नामीब आते हैं। नमक और कीचड़ का यह पैन 50 हजार वर्ग किलोमीटर में फैले अफ्रीका के तीसरे सबसे बड़े राष्ट्रीय उद्यान के केंद्र में है। रेत के टीले तो नामीब में हर जगह हैं, लेकिन सोसुस्वेले के आसपास उनका रंग गहरे नारंगी रंग का है। यह रंग असल में जंग का है। यहां की रेत में लोहे की सांद्रता काफी अधिक है, जिसका ऑक्सीकरण होता रहता है। यहां के रेत के कुछ टीले दुनिया में सबसे ऊंचे हैं। कुछ टीलों की ऊंचाई 200 मीटर तक है।

सोसुस्वेले के उत्तर में एक टीला तो करीब 400 मीटर ऊंचा है। नामीब की हैरान कर देने वाली कई पहेलियों में सबसे बड़ी पहेली एक भू-आकृति है जिसे परियों का घेरा कहा जाता है। एक खास प्रजाति के घास से घिरे गोल-गोल घेरों में कोई पौधा नहीं होता। पूरे नामीब रेगिस्तान में ऐसे लाखों घेरे हैं जो कई दशकों से विशेषज्ञों को चकित किए हुए हैं। इन घेरों को आसमान से देखना सबसे अच्छा है। नामीब के अंतहीन रेगिस्तान में हर जगह ये घेरे दिखते हैं, जो कई बार चेचक के धब्बों की तरह लगते हैं।

ये घेरे बजरी के मैदानों में भी मिलते हैं और रेत के टीलों पर भी। हर जगह उनकी संरचना गोल ही रहती है। सेंट्रल नामीब में घेरे का व्यास 1.5 मीटर से 6 मीटर तक होता है। उत्तर-पश्चिमी नामीबिया में वे इससे चार गुना तक बड़े हो सकते हैं। वहां घेरों का व्यास 25 मीटर तक हो सकता है। वर्षों तक यही समझा जाता रहा कि परियों के ये छल्ले सिर्फ नामीबिया में हैं।

ऑस्ट्रेलिया में मिले घेरे देखने में तो नामीबिया के घेरों जैसे ही हैं, लेकिन दोनों जगहों की मिट्टी की संरचना अलग है। इसने वैज्ञानिकों को और चकरा दिया। परियों के घेरे की पहेली सुलझाने में विशेषज्ञ भले ही चकरा रहे हैं, लेकिन नामीबिया के स्थानीय लोगों को इन आकृतियों के बारे में बहुत पहले से पता था। स्थानीय हिम्बा लोगों का विश्वास है कि इन्हें आत्माओं ने बनाया है और ये उनके देवता मुकुरु के पैरों के निशान हैं।

आकृतियों के रहस्य को सुलझाने के लिए गणित के कुछ विशेषज्ञों ने मॉडल बनाकर यह समझने की कोशिश की कि क्या ये रिंग किसी पैटर्न में बनते हैं। लेकिन नामीब-नौक्लुफ्ट राष्ट्रीय उद्यान के बाहर रोस्टॉक रिट्ज डेजर्ट लॉज के मालिक हेन शुल्ट्ज का कहना है कि स्थानीय लोग मानते हैं कि ये रहस्यमय आकृतियां यूएफओ या रात में परियों के नाचने से बनती हैं। आज तक इन घेरों की व्याख्या करने वाला कोई सर्वमान्य सिद्धांत सामने नहीं आया है। हाल के वर्षों में नामीबिया, जर्मनी, अमेरिका और अन्य देशों के वैज्ञानिकों ने एक साथ इन पर काम शुरू किया है।

रेगिस्तान के बीच में बने गोबाबेब-नामीब रिसर्च इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिक यूजीन मारैस का कहना है कि नामीब में पानी की घोर कमी से दो प्रमुख सिद्धांत सामने आते हैं। कुछ शोध बताते हैं कि ये घेरे दीमक के कारण बने हैं, जो जमीन से पानी और पोषक तत्वों को तलाशते रहते हैं। पौधे की जड़ों को खाकर वे जमीन के नीचे खाली जगह बना देते हैं, जिससे बारिश के पानी को धरती के अंदर तक पहुंचने में आसानी होती है। इस सिद्धांत के मुताबिक दीमक भूमिगत स्रोतों से पानी पीकर पूरे साल जीवित रहते हैं। दूसरा सिद्धांत यह है कि वनस्पतियां खुद यह प्रबंधन करती हैं। घास के पौधों को भी पानी और पोषक तत्वों की जरूरत होती है। उनकी जड़ें इसके लिए एक दूसरे से होड़ करती हैं। बंजर गोलाकार क्षेत्र जलाशय की तरह काम करता है, जहां से वे पानी और पोषक तत्व लेते हैं। वर्षों के सूखे के बाद घास सूख जाते हैं और धीरे-धीरे खत्म हो जाते हैं। मारैस एक और पहेली के बारे में बताते हैं। वह यह कि जब भी बारिश होती है तो अचानक जादू की तरह ये घेरे फिर से प्रकट हो जाते हैं। मारैस के मुताबिक, नामीब के इन परी घेरों पर हुए शोध मुख्य रूप से बजरी के मैदानों या रेत के टीलों पर मिले घेरों पर केंद्रित रहे हैं। इन आकृतियों को पूरी तरह समझने के लिए उनको लगता है शोध को एक साथ दोनों जगह ध्यान देने की जरूरत है। मारैस को लगता है कि ये रहस्यमय घेरे एक नहीं, बल्कि कई वजहों से बनते हैं, लेकिन वे वजह क्या हैं ये अब तक रहस्य है।

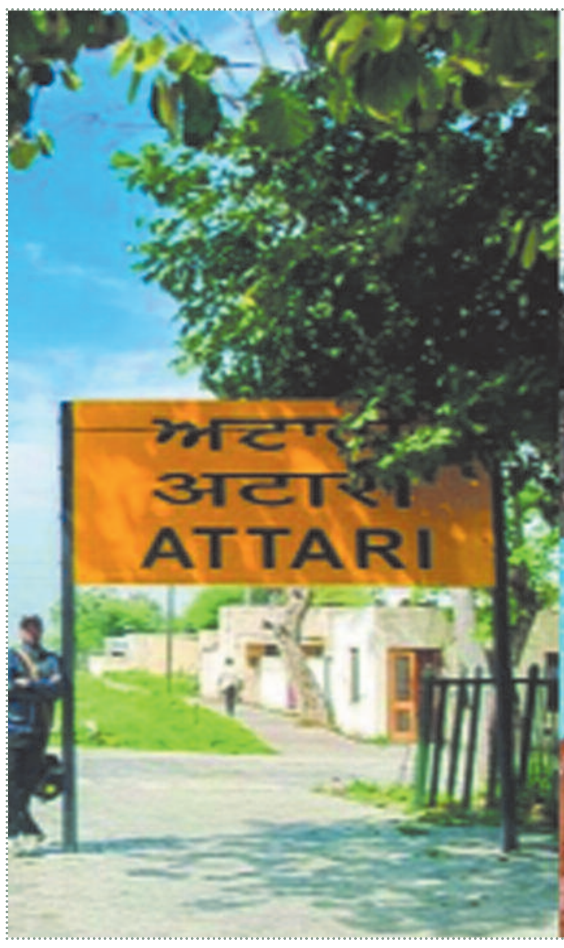

भारत के इस रेलवे स्टेशन पर जाने के लिए चाहिए पासपोर्ट और वीजा

भारत रेलवे दुनिया के बड़े रेलवे में से एक है। भारतीय रेलवे को देश की लाइफ लाइन माना जाता है। भारतीय रेलवे एशिया का दूसरा सबसे बड़ा और दुनिया चौथा रेल नेटवर्क है। भारत में रेलवे स्टेशन की कुल संख्या करीब 8000 है। सभी स्टेशनों के नाम शायद आप जानते भी नहीं होंगे। भारतीय रेलवे काफी एडवांस है और देश की ट्रेनें, स्टेशन काफी हाइटेक हो चुके हैं।

वर्तमान समय में भारतीय रेलवे कई हाई स्पीड ट्रेनें चला रहा है। भारतीय रेलवे से करीब 2.50 करोड़ लोग हर दिन यात्रा करते हैं, जबकि 33 लाख टन माल की भी ढुलाई होती है। 8 मई, 1845 को भारतीय रेलवे की स्थापना की गई थी। भारतीय रेलवे का मुख्यालय राजधानी दिल्ली में है। 178 साल पुराना भारतीय रेल आज भी सबसे सस्ता और पसंदीदा परिवहन है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत में एक रेलवे स्टेशन हैं, जहां पर जाने के लिए पासपोर्ट और वीजा की जरूरत होती है। दरअसल, इस स्टेशन पर पहुंचने के लिए भारतीयों को पाकिस्तानी वीजा की आवश्यकता होती है। यहां पर आप बिना वीजा के नहीं जा सकते हैं। इस रेलवे स्टेशन का नाम अटारी है। यह देश का इकलौता रेलवे स्टेशन हैं, जहां पर वीजा की जरूरत होती है। यह रेलवे स्टेशन पंजाब के अमृतसर जिले में स्थित है और उत्तर रेलवे के फिरोजपुर रेलवे के अधिकार क्षेत्र में है। अब आपके मन में सवाल खड़ा रहा होगा कि जब यह स्टेशन भारत में है, तो यहां जाने के लिए देश के लोगों को वीजा की जरूरत क्यों पड़ती है? अटारी रेलवे स्टेशन भारत का हिस्सा है, लेकिन यहां पर जाने के लिए पकिस्तान से इजाजत लेनी पड़ती है। अगर यहां पर आप घूमते हुए मिलते हैं, तो आपको जेल भी जाना पड़ सकता है। इसके साथ ही जुर्माना भी देना पड़ेगा। इस स्टेशन पर जबरदस्ती घुसने की कोशिश करने पर फॉरेन एक्ट के सेक्शन 14 के अंतर्गत मामला दर्ज हो सकता है। अगर ऐसा होता है, तो दोषी पाए जाने पर जमानत भी मिलने में बहुत मुश्किल होगी और फौजदारी का मुकदमा चलाया जा सकता है। यहां से चलने वाली समझौता एक्सप्रेस इकलौती अंतरराष्ट्रीय ट्रेन थी। अगर आप इससे यात्रा करना चाहते हैं, तो टिकट खरीदने के लिए पासपोर्ट नंबर देना होता है। समझोता एक्सप्रेस के लिए ही इस रेलवे स्टेशन को खोला जाता है। अगर यह ट्रेन लेट होती है, तो भारत और पाकिस्तान दोनों के रजिस्टर में एंट्री लिखी जाती है। यहां पर दिल्ली-अटारी एक्सप्रेस, अमृतसर-अटारी डीईएमयू, जबलपुर-अटारी स्पेशल ट्रेनें भी दिखेंगी, लेकिन इनमें कोई अटारी-लाहौर लाइन से नहीं जाती है। फिलहाल यह स्टेशन और समझौता एक्सप्रेस दोनों बंद हैं। जम्मू कश्मीर से आर्टिकल 370 को खत्म करने के बाद पाकिस्तान की तरफ से समझौता एक्सप्रेस को भी बंद कर दिया गया था।

रिलायंस इंडस्ट्रीज का मुनाफा पांच फीसदी घटा

जियो का 23 फीसदी बढ़ा

नईदिल्ली, एजेंसी। रिलायंस इंडस्ट्रीज का मुनाफा दूसरी तिमाही में पांच फीसदी गिरकर 16,563 करोड़ रुपये रहा है। एक साल पहले यह 17,394 करोड़ रुपये रहा था। कंपनी ने सोमवार को बताया, उसकी कुल आय मामूली बढ़कर 2.4 लाख करोड़ रही है। कुल कर्ज बढ़कर 3.36 लाख करोड़ हो गया है। कंपनी के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी ने कहा, हमारा प्रदर्शन डिजिटल सेवाओं व अपस्ट्रीम व्यवसाय में मजबूत वृद्धि को दर्शाता है।

जियो प्लेटफॉर्म का शुद्ध मुनाफा 23.4 फीसदी बढ़कर 6,539 करोड़ रुपये रहा है। हर ग्राहक से औसत मासिक कमाई बढ़कर 195 रुपये के पार पहुंच गई है। राजस्व 18 फीसदी तेजी के साथ 31,709 करोड़ रहा।

कंपनी का मुनाफा दूसरी तिमाही में 10.5 फीसदी बढ़कर 4,235 करोड़ रुपये हो गया है। राजस्व 8.21 फीसदी बढ़कर 28,862 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी के नतीजे बाजार की उम्मीदों से बेहतर हैं। भारत की तीसरी सबसे बड़ी आईटी कंपनी का जुलाई-सितंबर 2025 का परिचालन राजस्व बढ़कर 28,862 करोड़ रुपये हो गया, जो एक साल पहले की तुलना में 8.2त्न अधिक है। क्रमिक आधार पर, एचसीएलटेक के दूसरी तिमाही के शुद्ध लाभ में मामूली 0.5त्न की गिरावट आई, जबकि राजस्व में तिमाही आधार पर लगभग 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। एचसीएलटेक ने 12 रुपये प्रति शेयर का एक और अंतरिम लाभांश भी घोषित किया, जिससे वित्तीय वर्ष के लिए अब तक का कुल अंतरिम लाभांश 42 रुपये प्रति शेयर हो गया।

देश में यात्री वाहनों की थोक बिक्री सितंबर, 2024 में एक फीसदी घटकर 3,56,752 इकाई रह गई। एक साल पहले की समान अवधि में 3,61,717 यात्री कारें बिकी थीं। हालांकि, दोपहिया वाहनों की थोक बिक्री में 16 फीसदी की तेजी दर्ज की गई।

सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) के आंकड़ों के मुताबिक, पिछले माह 20,25,993 दोपहिया वाहन बिके। सितंबर, 2023 में यह आंकड़ा 17,49,794 था। कुल तिपहिया वाहनों की थोक बिक्री भी सात फीसदी बढ़कर 79,683 इकाई पहुंच गई। सितंबर, 2023 में 74,671 तिपहिया वाहन बिके थे।

चालू वित्त वर्ष में पांच फीसदी तक बढ़ेगी बिक्री

सियाम के अध्यक्ष शैलेष चंद्र ने कहा, त्योहारी सीजन में मजबूत प्रदर्शन के दम पर चालू वित्त वर्ष के दौरान यात्री वाहनों की थोक बिक्री 3-5 फीसदी बढ़ने की उम्मीद है। चालू वित्त वर्ष की शुरुआत में बिक्री में 5-8 फीसदी तेजी का अनुमान लगाया गया था। चंद्रा ने कहा, मई व जून हमारी उम्मीदों के मुताबिक नहीं रहा। हालांकि, त्योहारी मांग मजबूत दिख रही है। अक्तूबर के पहले 12 दिन में वाहनों की मांग में 25 फीसदी की तेजी रही है।

इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के तीसरे चरण के उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के लिए 38 कंपनियों ने आवेदन किया है। इनमें डाइकिन, वोल्टास व ब्लू स्टार सहित अन्य शामिल हैं। इससे 4,121 करोड़ के निवेश की संभावना है। उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग के संयुक्त सचिव संजीव ने कहा, अगले तीन वर्षों (2028-29 तक) में ये कंपनियां 55,877 करोड़ रुपये का उत्पादन कर सकती हैं।इससे 47,851 लोगों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार पैदा होने की उम्मीद है। आने वाले वर्षों में मूल्य संवर्धन 80 फीसदी तक बढ़ जाएगा।

रियल एस्टेट में इक्विटी निवेश छह साल के शीर्ष पर, 46 फीसदी बढ़ा

रियल एस्टेट में जनवरी से सितंबर के बीच इक्विटी निवेश 46 फीसदी बढ़कर 8.9 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। सीबीआरई के आंकड़ों के मुताबिक, 2018 के बाद यह अब तक का सर्वाधिक निवेश है। आंकड़ों के अनुसार, कैलेंडर साल 2018 में इक्विटी निवेश 5.8 अरब डॉलर, 2019 में 6.5 अरब डॉलर, 2020 में 6 अरब डॉलर, 2021 में 5.9 अरब डॉलर, 2022 में 7.8 अरब डॉलर और 2023 में 7.4 अरब डॉलर रहा था। घरेलू निवेशकों ने इक्विटी निवेश में लगभग 79 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ बढ़त हासिल की।

जुलाई-सितंबर के बीच 25 डील

जुलाई से सितंबर के बीच रियल एस्टेट में 25 सौदे हुए हैं। इनका मूल्य 1.4 अरब डॉलर रहा है। ग्रांट थॉर्नटन की रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2023 की दूसरी तिमाही के बाद यह सर्वोच्च स्तर है।

तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा की बदल दी पूरी कहावत, देखते ही देखते 3 दोस्तों ने ऐसे खड़ी कर दी 1,700 करोड़ की कंपनी

नईदिल्ली, एजेंसी। तीन दोस्तों ने मिलकर एक बड़ी सफलता हासिल की है। इन्होंने तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा की कहावत को गलत साबित किया है। अपनी मेहनत और संगठित प्रयास से इन तीनों ने देखते ही देखते 1,700 करोड़ रुपये की कंपनी खड़ी कर दी है। साल 2016 में विजय अरिसेट्टी, अभिषेक कुमार और श्रेयंस डागा ने मिलकर माईगेट की शुरुआत की थी। यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जो आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करके गेटेड कम्युनिटी में रहने के तरीके को आसान और सुरक्षित बनाता है। आइए, यहां विजय, अभिषेक और श्रेयस की सफलता के सफर के बारे में जानते हैं। विजय अरिसेट्टी, अभिषेक कुमार और श्रेयंस डागा ने 2016 में सिक्योरिटी मैनेजमेंट स्टार्टअप माईगेट की शुरुआत की थी। उन्होंने गेटेड कम्युनिटीज के सिक्योरिटी सिस्टम में एक कमी देखी थी। उन्होंने महसूस किया कि औसतन हर घर में एक दिन में कम से कम दो से तीन लोग आते हैं। एक अकेले सिक्योरिटी गार्ड के लिए सभी लोगों को चेक करना और सही लोगों को अंदर आने देना एक चुनौती हो सकता है। इससे माईगेट का जन्म हुआ। माइगेट ऐप एंड-टू-एंड कम्युनिटी मैनेजमेंट प्लेटफॉर्म ऑटोमेशन का उपयोग करके इस सेक्टर में क्रांति ला रहा है। यह 100 शहरों में 40 लाख से ज्यादा घरों तक पहुंच गया है। कोरोना लॉकडाउन से पहले तक माईगेट हर महीने लगभग 9 करोड़ विजिटर वैलिडेशन कर रहा था। यह ऐप आवासीय समुदायों के प्रबंधन को आसान बनाता है। इसे भारत में विशेष रूप से गेटेड कम्युनिटीज के लिए डिजाइन किया गया है। यह ऐप निवासियों और प्रबंधन समिति दोनों के लिए ही उपयोगी है। ऐप गेट पर आने वाले मेहमानों और कर्मचारियों के प्रवेश को नियंत्रित करने में मदद करता है। आप अपने फोन से ही मेहमानों को अनुमति दे सकते हैं।

कोरोना के बाद तेजी से बढ़े मकानों के दाम, बड़े शहरों में कितनी उछाल

नईदिल्ली, एजेंसी। रियल एस्टेट मार्केट में इन दिनों भारी उछाल दिख रहा है। कोरोना काल से पहले की बात करें तो तब से अब तक स्थिति काफी बदल गई है। बीते पांच साल में ही देश के टॉप 10 शहरों में प्रॉपर्टी की कीमतें काफी बढ़ गई है। इन शहरों में मकान की कीमतों में 88 फीसदी तक का उछाल आया है। इसकी जानकारी रियल एस्टेट डेटा एनालिटिक्स फर्म प्रॉपइक्विटी की एक रिपोर्ट से मिलती है। इस रिपोर्ट के अनुसार इस दौरान गुरुग्राम में सबसे अधिक, 160 फीसदी का उछाल दर्ज किया गया है। साल 2019 में वहां मकान की औसत कीमतें 7,500 रुपये प्रति वर्ग फुट थी। यह साल 2024 में बढ़कर 19,500 रुपये प्रति वर्ग फुट पर पहुंच गई हैं। मतलब कि पांच साल पहले गुड़गांव में 75 लाख रुपये में 1,000 वर्ग फुट का मकान मिल जाता था। अब यह करी दो करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। बीते पांच साल की अवधि के दौरान मकान की कीमतें सबसे कम मुंबई में बढ़ी है। साल 2019 में मुंबई में रेसिडेंशियल रियल एस्टेट की प्रति वर्ग फुट कीमत 25,820 रुपये थी।

लोन का ईएमआई नहीं भरा तो छिन गया था मकान, लुलु ग्रुप ने लोन तो चुकाया ही, लाखों की मदद भी की

नईदिल्ली, एजेंसी। अगाध रुपये-पैसे तो बहुतों के पास होता है। लेकिन वक्त पर किसी के काम आना बहुत कम अमीरों में दिखता है। इनमें से लुलु ग्रुप के अरबपति चेयरमैन एम.ए. युसूफ अली अलग हैं। उन्होंने पिछले दिनों केरल की एक ऐसी महिला की मदद की, जो कर्ज की वजह से अपना घर गंवा चुकी थी। उनका परिवार सड़क पर आ गया था। लुलु ग्रुप ने न सिर्फ उनका लोन चुका कर मकान दिलाया बल्कि 10 लाख रुपये भी दिए ताकि उनकी गृहस्थी चल सके। रिपोर्ट के अनुसार, साल 2019 में संध्या के परिवार ने अपना मकान बनाने के एक वित्तीय संस्थान से 4 लाख रुपये का लोन लिया था। साल 2022 में उनके जीवन ने एक कठिन मोड़ तब लिया जब संध्या के पति चल बसे। पति के जाते ही आमदनी बंद हो गई। ऐसे हालात में परिवार का पालन-पोषण मुश्किल हो गया, फिर लोन का ईएमआई कौन भरता। ईएमआई का पेमेंट रूकते ही फाइनेंस कारपोरेनशन ने फौजदारी कार्यवाही शुरू कर दी। एक दिन कंपनी ने उसके मकान पर भी कब्जा कर लिया। यही नहीं, संध्या को अपना सामान निकालने का भी मौका नहीं मिला।

हुंडई मोटर की भारतीय इकाई का आईपीओ खुला

कंपनी ने एंकर निवेशकों से पहले ही जुटाए 8,315 करोड़

नईदिल्ली, एजेंसी। हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) आज भारतीय बाजार में आ गया। सार्वजनिक निर्गम 17 अक्टूबर 2024 तक खुला रहेगा। इसलिए, हुंडई मोटर इंडिया की आईपीओ सदस्यता इस सप्ताह मंगलवार से गुरुवार तक बोली लगाने के लिए खुली रहेगी।

ऑटो ओईएम कंपनी ने हुंडई मोटर इंडिया आईपीओ का मूल्य बैंड 1865 से 1960 प्रति इक्विटी शेयर तय किया है। यह पूरी तरह से ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) है, जिसका मतलब है कि सार्वजनिक निर्गम की शुद्ध आय कंपनी की बैलेंस शीट में नहीं आएगी। ऑटो कंपनी का लक्ष्य हुंडई मोटर इंडिया आईपीओ से 27,870.16 करोड़ जुटाना है।

दक्षिण कोरिया वाहन विनिर्माता कंपनी हुंडई की भारतीय इकाई हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड (एचएमआईएल) ने अपने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) से एक दिन पहले ही सोमवार को एंकर निवेशकों से 8,315 करोड़ रुपये जुटा लिए।

बीएसई की वेबसाइट पर दी जानकारी के मुताबिक न्यू वर्ल्ड फंड इंक, सिंगापुर सरकार, फिडेलिटी फंड्स, ब्लैकरॉक ग्लोबल फंड्स, जेपी मॉर्गन फंड्स, एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी और एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस जैसी कंपनियां एंकर (बड़े) निवेशकों में शामिल रही, जिन्हें शेयर आवंटित किए गए। दावा किया जा रहा है कि यह भारत का सबसे बड़ा आईपीओ होगा, जो एलआईसी के 21,000 करोड़ रुपये के आईपीओ को पार कर जाएगा।

टाटा समूह पांच वर्षों में विनिर्माण से जुड़ी 5 लाख नौकरियों का सृजन करेगा, बोले एन चंद्रशेखरन

नईदिल्ली, एजेंसी। टाटा समूह के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने मंगलवार को कहा कि उनका समूह अगले पांच वर्षों में सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी और संबंधित उद्योगों से जुड़े विनिर्माण क्षेत्र पांच लाख नौकरियां पैदा करेगा।

इंडियन फाउंडेशन फॉर क्वालिटी मैनेजमेंट की एक संगोष्ठी में बोलते हुए टाटा संस के चेयरमैन ने कहा कि यदि भारत विनिर्माण क्षेत्र में नौकरियां पैदा नहीं कर सकता तो वह विकसित राष्ट्र होने के लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकता।

उन्होंने कहा, ... सेमीकंडक्टर में हमारे (टाटा समूह के) निवेश, प्रीसीजन मैन्यूफैक्चरिंग, असेंबली, इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी और संबंधित उद्योगों में हमारे निवेश के बीच, मुझे लगता है कि हम अगले पांच वर्षों में पांच लाख विनिर्माण नौकरियां पैदा करेंगे।

असम में टाटा समूह के आगामी सेमीकंडक्टर संयंत्र और इलेक्ट्रिक वाहनों और बैटरी के लिए अन्य नई विनिर्माण इकाइयों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा, हम कई संयंत्र स्थापित कर रहे हैं।

हालांकि उन्हें पूरी जानकारी नहीं मिली है, लेकिन चंद्रशेखरन ने कहा कि बुनियादी गणित के आधार पर, इन नौकरियों का कई गुना प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने कहा कि चूंकि पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित किया जाना है, इसलिए कम से कम 5 लाख कंपनियां- छोटी, मध्यम स्तर की कंपनियां भी पारिस्थितिकी तंत्र में आएंगी।

उन्होंने इन पहलों में सरकार के समर्थन की सराहना की और विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, यदि हम विनिर्माण क्षेत्र में नौकरियां पैदा नहीं कर सकते तो हम विकसित भारत के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि हम सभी जानते हैं कि हर महीने 10 लाख लोग कार्यबल में शामिल हो रहे हैं।

चंद्रशेखरन ने आगे कहा, हमें 10 करोड़ नौकरियां पैदा करने की जरूरत है। उन्होंने नए युग के विनिर्माण जैसे सेमीकंडक्टर बनाने के महत्व पर जोर दिया, यह हर एक रोजगार के लिए आठ से दस अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा करता है।

भारतीय बाजार ने पांच साल में लगातार 15त्न दिया रिटर्न; चीन भारत से पिछड़ा, निवेशकों को कईबार हुआ घाटा

नईदिल्ली, एजेंसी। घरेलू शेयर बाजार ने पांच साल में लगातार 15 प्रतिशत रिटर्न दिया है। चीन में यह शून्य रहा है और कई बार तो घाटा भी दिया है। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के पूर्णकालिक सदस्य अनंत नारायण गोपालकृष्णनन ने कहा, हमारा बाजार कम जोखिम पर अधिक रिटर्न दे रहा है। फिर भी, निवेशकों को सावधानी बरतनी चाहिए। जोखिमों के प्रति सचेत रहना चाहिए। नारायण ने सोमवार को एक कार्यक्रम में कहा, पिछले कुछ दिनों से हमारे बाजार का पैसा चीन जा रहा है।इस पर काफी चर्चा हो रही है। इस महीने अब तक भारतीय बाजार से 58,000 करोड़ रुपये विदेशी निवेशकों ने निकाले हैं। लेकिन, पांच साल में फायदा देने में चीन का बाजार हमारे बाजार के आसपास भी नहीं है। 2023-24 में दोनों घरेलू इंडेक्स ने 28 फीसदी का रिटर्न दिया, जबकि उतार-चढ़ाव सिर्फ 10 फीसदी का रहा है।

नारायण ने कहा, आगे चलकर सब कुछ पहले जैसा नहीं रहेगा। निवेशकों को इसे एकतरफा रास्ता नहीं मानना चाहिए। ऐसे शानदार रिटर्न से आत्मसंतुष्टि हो सकती है। उन्होंने कार का उदाहरण देते हुए कहा, हमें जोखिमों के बारे में जागरूक होने और जरूरत पड़ने पर 'ब्रेक' लगाने की भी जरूरत होती है।

लंबे समय तक बने रहें

सेबी सदस्य ने कहा, निवेशकों को देश में आर्थिक वृद्धि की संभावनाओं के अवसरों को भुनाने के लिए सही मध्यस्थों की जरूरत है। उन्हें गैर-पंजीकृत और अत्यधिक मुनाफे का लालच देकर रातों-रात गायब होने वाली इकाइयों के झांसे में नहीं आना चाहिए। अधिक रिटर्न के लिए लंबे समय तक बाजार में बने रहें।

11 जरूरी दवाओं की कीमतों में होगा इजाफा, एनपीपीए ने कहा- उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए दी गई

नईदिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (एनपीपीए) ने आठ दवाओं के ग्यारह अनुसूचित यौगिकों की कीमतों में 50 प्रतिशत इजाफे की मंजूरी दे दी है। एनपीपीए के अनुसार इस कदम का मकसद सार्वजनिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं के लिए दवाओं की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

औषधि (मूल्य नियंत्रण) आदेश, 2013 के आधार पर लिया गया निर्णय

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार, यह निर्णय 8 अक्तूबर को प्राधिकरण की बैठक के दौरान औषधि (मूल्य नियंत्रण) आदेश, 2013 के पैरा 19 के तहत दी गई असाधारण शक्तियों का उपयोग करते हुए किया गया। इस कदम का उद्देश्य सस्ती दवा उपलब्ध कराने के जनादेश से समझौता किए बिना इन दवाओं के निर्माण की वित्तीय व्यवहार्यता को बनाए रखना है। एनपीपीए का पहला उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आवश्यक दवाएं उचित मूल्य पर उपलब्ध हों।

दवाओं के निर्माण की लागत बढ़ने के कारण लिया गया फैसला

हालांकि, दवा निर्माताओं की ओर से सक्रिय फार्मास्युटिकल सामग्री (एपीआई) की बढ़ती लागत, उत्पादन खर्च में वृद्धि और विनिमय दरों में उतार-चढ़ाव के कारण मूल्य संशोधन की मांग की थी। जिन दवाओं की कीमतों में वृद्धि को मंजूरी दी गई है उनमें अस्थमा, ग्लूकोमा, थैलेसीमिया, तपेदिक और मानसिक स्वास्थ्य विकारों जैसी स्थितियों के उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली दवाएं शामिल हैं। इन दवाओं का उपयोग अक्सर सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में प्रथम-पंक्ति उपचार के रूप में किया जाता है, और मूल्य समायोजन का उद्देश्य उत्पादन चुनौतियों के कारण दवाओं की कमी या अनुपलब्धता को रोकना है।

इन दवाओं की कीमतें बढ़ेंगी

देश में प्रभावी स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए इन दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। मूल्य वृद्धि से प्रभावित दवाओं की सूची में बेंजिल पेनिसिलिन 10 लाख आई इंजेक्शन, एट्रोपिन इंजेक्शन 0.6 एमजी/एमएल, इंजेक्शन के लिए स्ट्रेप्टोमाइसिन पाउडर (750 एमजी और 1000 एमजी) साल्बुटामोल टैबलेट (2 एमजी और 4 एमजी) और रेस्पिरेटर सॉल्यूशन (5 एमजी/एमएल), पिलोकार्पाइन 2 प्रतिशत ड्रॉप्स, सेफैड्रोक्सिल टैबलेट 500 एमजी, इंजेक्शन के लिए डेसफेरियोक्सामाइन 500 एमजी और लिथियम टैबलेट 300 एमजी शामिल हैं। 2019 और 2021 ऐसे कदम उठाए गए थे। तब क्रमश 21 और 9 तरह की दवाओं की कीमतों में 50 प्रतिशत की वृद्धि की गई थी।

आठ साल में 2जी से 5जी के दौर में; 6जी में और बेहतर होंगे

आकाश अंबानी बोले– मोदी है तो मुमकिन है

02

नईदिल्ली, एजेंसी। नए भारत में, मोदी जी के भारत में, अब पहले की तरह काम नहीं होता। 1.45 अरब भारतीयों की जरूरतों और अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए विश्व स्तरीय सेवाएं देने के उद्देश्य से सरकार और उद्योग के बीच एक असामान्य तालमेल है। रिलायंस जियो इन्फोकॉम लिमिटेड के चेयरमैन आकाश अंबानी ने ये बातें वर्ल्ड टेलीकम्यूनिकेशन स्टैन्डर्डाइजेशन असेंबली में कही।

आकाश अंबानी ने कहा, युवा भारत के प्रतिनिधि के रूप में, मैं युवाओं के साथ आपके अविश्वसनीय जुड़ाव और असंभव दिखने वाले लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमें प्रेरित करने के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ। आकाश अंबानी ने इस दौरान हिंदी में कहा, मोदी है तो मुमकिन है...। आकाश अंबानी ने विदेशी अतिथियों के लिए यह बात अंग्रेजी में भी दोहराई।

आकाश अंबानी ने कहा, दुनिया उस देश से हैरान है जो आठ साल पहले 2जी की गति से रेंग रहा था और अब 5जी की गति से आगे बढ़ रहा है। मैं प्रधानमंत्री को आश्वस्त करना चाहूंगा कि 6त्न में भारत का रिकॉर्ड और भी बेहतर होगा। आकाश अंबानी ने कहा कि यूपीआई दुनिया की नंबर वन डिजिटल भुगतान प्रणाली बन गई है। आज, भारत दुनिया का एकमात्र बड़ा देश है जहां मोबाइल डेटा की कम कीमतों के बावजूद सबसे तेज़ इंटरनेट है।

रिलायंस जियो इन्फोकॉम के चेयरमैन आकाश एम अंबानी ने मंगलवार को कहा कि भारत को अधिकतम आत्मनिर्भर प्रयासों और पूरी रणनीति के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता को तत्काल अपनाना चाहिए।

आईएमसी और आईटीयूडब्ल्यूटीएसए 2024 के उद्घाटन के अवसर पर बोलते हुए अंबानी ने सरकार से डेटा सेंटर नीति 2020 के मसौदे को आपनाने की प्रक्रिया में तेजी लाने का भी आग्रह किया ताकि भारतीय डेटा भारत के डेटा केंद्रों में ही रहे। उन्होंने कहा, ...भारत में बहुभाषी डेटा उत्पादन का पैमाना और गति, जो एआई क्रांति को आगे बढ़ाएगी, तेजी से बढ़ने वाली है। हम सरकार से अनुरोध करते हैं कि वह डेटा सेंटर नीति के 2020 के मसौदे को अपनाने की प्रक्रिया में तेजी लाए। भारतीय डेटा भारत के डेटा केंद्रों में ही रहना चाहिए। ऐसा सुनिश्चित करने के लिए यह जरूरी है।

मेरा ऋषभ पंत से कोई कंपीटिशन नहीं है: संजू

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत के पास सभी प्रारूपों में विकेटकीपिंग के कई विकल्प मौजूद हैं। विकेटकीपिंग विभाग में ऋषभ पंत नंबर एक पसंद हैं, उनके बाद टेस्ट क्रिकेट में ध्रुव जुरेल हैं। वनडे में केएल राहुल और संजू सैमसन का मुकाबला पंत से है। जितेश शर्मा टी20ई में ऋषभ और सैमसन को टक्कर देते नजर आते हैं। इन स्थानों के लिए क्रिकेटरों में जंग जारी है। इसी बीच संजू सैमसन को बांग्लादेश के खिलाफ तीन मैचों की टी20ई श्रृंखला के लिए प्राथमिकता दी गई। उन्होंने इस मौके को लंबे समय बाद भुनाया और हैदराबाद के मैदान पर खेले गए तीसरे और आखिरी मैच में न सिर्फ शतक लगाया बल्कि टीम में अपनी जगह भी पक्की कर ली। उन्होंने स्वीकार किया कि वह दबाव में थे, क्योंकि टीम के पास उनकी जगह लेने के लिए कई अन्य विकल्प थे।

हमारा काम अपना सर्वश्रेष्ठ देना

संजू सैमसन ने कहा कि हमारा काम मौके का इंतजार करना और प्लेइंग इलेवन में चुने जाने पर अपना सर्वश्रेष्ठ देना है। दबाव हमेशा रहता है, लेकिन जब विकेटकीपिंग स्लॉट की बात आती है तो हम उस तरह से नहीं देखते हैं।

ऋषभ पंत, ध्रुव जुरेल और जितेश शर्मा मुझे लंबे समय से जानते हैं और मैंने उनके साथ काफी क्रिकेट खेला है। हम खुद को प्रतिस्पर्धी के रूप में नहीं देखते हैं और हम हमेशा एक-दूसरे की सफलता का आनंद लेते हैं। आखिरकार, हम अपने देश के लिए खेल रहे हैं, और जब भी हममें से किसी को टीम का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिले तो हमें जीत में योगदान देना चाहिए।

नई गेंद के गेंदबाजों के खिलाफ जमकर अभ्यास किया

सैमसन ने बीते दिनों हैदराबाद टी20 में 40 गेंदों पर शतक लगाया था। वह ऐसे करने वाली दूसरे सबसे तेज भारतीय बन गए हैं। मैच के बाद सैमसन ने अपनी रणनीति पर बात करते हुए कहा था कि लय पाने के लिए वह राजस्थान रॉयल्स अकादमी गए थे। वहां नई गेंद के गेंदबाजों के खिलाफ जमकर अभ्यास किया। इससे उन्हें मदद मिली। सैमसन ने कहा कि मुझे लगता है कि मैं इस श्रृंखला में किसी भी अन्य श्रृंखला की तुलना में 10 प्रतिशत अधिक तैयार होकर आया था। सैमसन ने कहा कि अपनी भूमिका को लेकर स्पष्टता से उन्हें अपने खेल को लेकर अधिक जागरूकता हासिल करने में मदद मिली। उन्होंने कहा कि मैं अपने खेल को अच्छी तरह से समझता हूं कि मैं एक से लेकर छह नंबर तक किसी भी स्थान पर बल्लेबाजी कर सकता हूं। मेरे पास बड़े शॉट लगाने के लिए जरूरी ताकत है और मेरी टाइमिंग भी अच्छी है। इसलिए यह सब मेरी भूमिका के अनुसार तैयारी करने से जुड़ा हुआ है।

रियल मैड्रिड के दिग्गज खिलाड़ी पर रेप का आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी। फुटबॉल फैंस को उस वक्त तगड़ा झटका लगा जब युवा स्टार स्ट्राइकर कीलियन एम्बाप्पे को लेकर एक अखबार ने बड़ा खुलासा किया। उसने रियल मैड्रिड के स्टार खिलाड़ी पर संगीन आरोप लगाते हुए एक रिपोर्ट छापी। रिपोर्ट में दावा किया गया कि फ्रांसीसी फुटबॉलर ने एक महिला का रेप किया। यह पूरा मामला उस वक्त का बताया जा रहा है जब एम्बाप्पे ब्रेक पर थे। दूसरी ओर, फुटबॉलर ने पूरी रिपोर्ट को फेक बताते हुए अखबार के खिलाफ एक्शन की तैयारी कर ली है।

दरअसल, स्वीडन के डेली अखबार की रिपोर्ट की मानें तो कीलियन एम्बाप्पे नेशन कप टूर्नामेंट में अपनी टीम का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे थे। उन्होंने ब्रेक लेने का फैसला किया था। इस दौरान वह अपने कुछ दोस्तों के साथ स्वीडन गए। यहां स्टॉकहोम के सिटी सेंटर में उन्होंने रेस्टोरेंट में खाना खाने के बाद एक महिला का रेप किया। इस महिला ने स्टॉकहोम पुलिस के पास फुटबॉलर के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। 8 कैच छोड़े, 9 बल्लेबाज अंडर-10 आउट, क्या पाकिस्तान ने भारत को महिला टी20 विश्व कप से बाहर करने के लिए रची साजिश?

रियल मैड्रिड के फैंस आ गए हैं सकते में

स्वीडन के अफ्टोंब्लाडेट की रिपोर्ट पब्लिक में आते ही सोशल मीडिया पर कोहराम मच गया। कीलियन एम्बाप्पे पर रेप का आरोप लगने से रियल मैड्रिड के फैंस सकते में आ गए। हर कोई इस पर सवाल उठा रहा था कि एम्बाप्पे को सोशल मीडिया पर रिएक्शन देने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्होंने इस संगीन आरोप का सिरे से खारिज किया। उन्होंने कहा कि यह खबर पूरी तरह से फेक है।

मुश्ताक अली ट्रॉफी से इम्पैक्ट प्लेयर नियम हटाया: 2 बाउंसर रूल को बरकरार रखा

मुंबई, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2024 से इम्पैक्ट प्लेयर नियम हटा दिया है। इतना ही नहीं, एक ओवर में 2 बाउंसर के नियम को जारी रखा है। बीसीसीआई ने सोमवार को स्टेट यूनिट्स को इसकी जानकारी दी है। ये दोनों नियम आईपीएल और सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में लागू थे। 2 बाउंसर का नियम पिछले साल लाया गया था, जबकि इम्पैक्ट प्लेयर नियम की शुरुआत 2023 से हुई थी। हालांकि, इंटरनेशनल क्रिकेट में दोनों ही नियमों का इस्तेमाल नहीं हो रहा है। मुश्ताक अली ट्रॉफी का आगामी सीजन 23 नवंबर से शुरू हो रहा है, जो 15 दिसंबर तक चलेगा।

लीजेंड्स लीग क्रिकेट 2024

रैना की टीम को 1 रन से हरा पठान ब्रिगेड फाइनल में, आखिरी ओवर में इरफान ने डिफेंड किए 12 रन

नईदिल्ली, एजेंसी। लीजेंड्स लीग क्रिकेट 2024 के क्वालिफायर-2 में इरफान पठान की अगुआई वाली कोर्णाक सूर्य ओडिशा ने सुरेश रैना की अगुआई वाली टोयम हैदराबाद को 1 रन से हराकर फाइनल में जगह बनाई। फाइनल में 16 अक्टूबर को कोर्णाक सूर्य ओडिशा का दिनेश कार्तिक की अगुआई वाली सदर्न सुपर स्टार्स से मुकाबला होगा। क्वालिफायर -2 की बात करें तो टोयम हैदराबाद के कप्तान सुरेश रैना यह मैच नहीं खेले। गुरकीरत सिंह मान ने टीम की कमान संभाली।

कोर्णाक सूर्य ओडिशा ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 5 विकेट पर 156 रन बनाए। जवाब में टोयम हैदराबाद की टीम 6 विकेट पर 155 रन ही बना पाई। आखिरी ओवर में हैदराबाद को 12 रन चाहिए थे। गुरकीरत सिंह मान और समीउल्लाह शिनवारी क्रीज पर थे। इरफान पठान गेंदबाजी करने आए। पहली 3 गेंदों पर 9 रन बने। चौथी गेंद पर शिनवारी आउट हो गए। इसके बाद स्टुअर्ट बिन्नी क्रीज पर आए। 2 गेंद पर 3 रन चाहिए। बिन्नी ने अगली गेंद पर सिंगल लिया। गुरकीरत आखिरी गेंद पर कोई रन नहीं बना पाए।

कोर्णाक सूर्य ओडिशा की बल्लेबाजी

कोर्णाक सूर्य ओडिशा के लिए आयरलैंड के केविन ओ ब्रायन ने अर्धशतक जड़ा। कप्तान इरफान पठान ने नाबाद 49 रन बनाए। इसके अलावा श्रीलंका के दिलशान मुनवीरा ने 18 रन बनाए। यूसुफ पठान ने केवल 4 गेंद पर 12 रन बनाए। विनय कुमार 3 गेंद पर 7 रन बनाकर नाबाद रहे। टोयम हैदराबाद के लिए स्टुअर्ट बिन्नी ने 2, श्रीलंका के नुवान प्रदीप, इसरु उडाना और मोंटी पनेसर ने 1-1 विकेट लिए।

टोयम हैदराबाद की ओर से रिक्की क्लार्क ने 44 गेंद पर 67 रन बनाए। इसके अलावा गुरकीरत मान ने नाबाद 27 रन बनाए। पीटर ट्रिगो ने 15 और समीउल्लाह शिनवारी ने 11 रन बनाए। कोर्णाक सूर्य ओडिशा के लिए दिवेश पठानिया, विनय कुमार, ऑस्ट्रेलिया के बेन लाफलिन, शाहबाज नदीम, केपी अपन्ना और इरफान पठान ने 1-1 विकेट लिए।

पाकिस्तान टीम से दामाद के बाहर होने पर काफी खुश हैं शाहिद अफरीदी

सिलेक्टर्स की जमकर की तारीफ

लाहौर, एजेंसी। पाकिस्तान क्रिकेट टीम में एक बड़ा बदलाव देखने को मिला है. टीम के लगातार खराब प्रदर्शन को देखते हुए सेलेक्टर्स ने सीनियर खिलाड़ियों को बाहर का रास्ता दिखाया है. जिसमें पाकिस्तानी टीम के स्टार बल्लेबाज बाबर आजम के अलावा तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी भी शामिल हैं. हालांकि, टीम के असिस्टेंट कोच अजहर महमूद का कहना है कि इस खिलाड़ियों को आराम दिया गया है. इस मुद्दे पर पाकिस्तान के कई पूर्व क्रिकेटर्स ने अपनी राय रखी है और बोर्ड और सिलेक्टर्स के इस फैसले की आलोचना की है. लेकिन पाकिस्तान के पूर्व कप्तान शाहिद अफरीदी ने इस फैसला का समर्थन किया है. शाहिद अफरीदी का मानना है कि सेलेक्टर्स का ये फैसला इन खिलाड़ियों के करियर के लिए काफी सही है. इसके अलावा उनका मानना है कि इस खिलाड़ियों को आराम देने से बेंच स्ट्रेंथ को मजबूत बनाने का मौका मिलेगा. शाहिद अफरीदी ने एक्स पर लिखा, 'बाबर, शाहीन और नसीम को इंटरनेशनल क्रिकेट से छुट्टी देने के सिलेक्टर्स के फैसले को मैं समर्थन करता हूं. यह कदम न केवल इन चैंपियन खिलाड़ियों के करियर की रक्षा और विस्तार करने में मदद करेगा, बल्कि उभरती प्रतिभाओं को परखने और तैयार करने का भी मौका देगा. इससे भविष्य के लिए मजबूत बेंच स्ट्रेंथ बनाने का एक बड़ा अवसर भी होगा.

मुल्तान टेस्ट में पूरी तरह फ्लॉप रहे शाहीन अफरीदी

शाहीन अफरीदी का हालिया प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा है. वह बड़े टूर्नामेंट्स के साथ-साथ घरेलू सीरीज में भी टीम के लिए मैच विनर साबित नहीं हो रहे हैं. इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज के पहले मैच में भी वह कुछ खास नहीं कर सके थे. उन्होंने 26 ओवर में 120 रन देकर सिर्फ 1 विकेट हासिल किया था. इसके अलावा पिछले एक साल में 11 टेस्ट पारियों में वो सिर्फ 17 विकेट ही ले सके हैं.

दूसरे टेस्ट के लिए इन खिलाड़ियों को मिला मौका

दूसरे टेस्ट के लिए पाकिस्तान की प्लेइंग इलेवन का ऐलान हो गया है. इस मैच में बाबर की जगह कामरान गुलाम को प्लेइंग 11 में शामिल किया गया है. वहीं, गेंदबाजी में शाहीन शाह अफरीदी की जगह नोमान अली को मौका मिला है. इसके अलावा साजिद खान और जाहिद मेहमूद भी इस मैच में खेलते हुए नजर आएंगे.

भारत विमेंस टी-20 वर्ल्डकप से बाहर, पाकिस्तान हारा

न्यूजीलैंड ने पाक को 56 रन पर ऑलआउट किया, 12वें ओवर में 3 विकेट गिरे

दुबई, एजेंसी। न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को 54 रन के बड़े अंतर से हराया और ग्रुप ए के पॉइंट्स टेबल में दूसरे स्थान पर रहते हुए टॉप-4 में जगह बनाई। न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को 54 रन से हराकर विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। टूर्नामेंट के ग्रुप ए के आखिरी लीग मुकाबले पाकिस्तान को मिली इस हार के साथ भारतीय महिला टीम का सफर भी समाप्त हो गया। दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर बैटिंग चुनी। टीम ने 20 ओवर में 6 विकेट पर 110 रन बनाए और पाकिस्तान को जीत के लिए 111 रन का टारगेट दिया। जवाब में पाकिस्तानी टीम 11.4 ओवर में 56 रन पर ऑलआउट हो गई। ईडन कार्सन प्लेयर ऑफ द मैच चुनी गईं। उन्होंने 3 ओवर में 7 रन देकर 2 विकेट झटके। ओपनर सूजी बेट्स ने सबसे ज्यादा 28 रन बनाए, जबकि ब्रूक हॉलिडे ने 22 रन का योगदान दिया। पाकिस्तान की नसरा संधू ने 3 विकेट झटके।

भारत का ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर 2034 तक 60 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत का ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर का वर्तमान मूल्य 3.1 बिलियन डॉलर है। रेगुलेशन और टैक्सेशन से जुड़ी चुनौतियों के बीच 2034 तक ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर 60 बिलियन डॉलर तक बढ़ने की क्षमता रखता है। सोमवार को आई एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। भारत के गेमिंग सेक्टर में अमेरिका का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। रिपोर्ट के अनुसार, कुल 2.5 बिलियन डॉलर के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में से 1.7 बिलियन डॉलर अकेले अमेरिका से आया है। यूनाइटेड स्टेट्स इंडिया स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप फोरम (यूएसआईएसपीएफ) के अध्यक्ष और सीईओ डॉ. मुकेश अघी के अनुसार, यह भारत के तेजी से बढ़ते गेमिंग बाजार में वैश्विक निवेशकों के विश्वास को दिखाता है, जिसके 2034 तक 60 बिलियन डॉलर

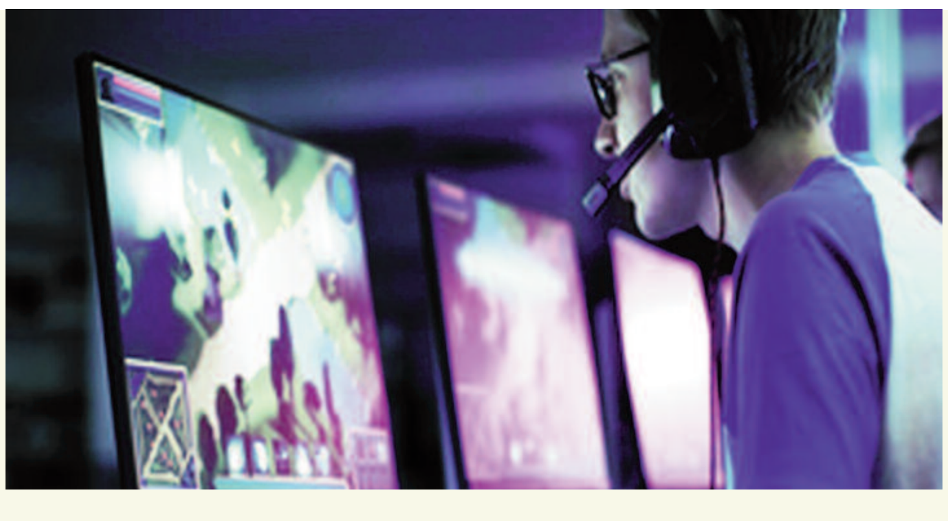

तक पहुंचने का अनुमान है। इस एफडीआई का 90 प्रतिशत हिस्सा पे-टू-प्ले सेगमेंट में है, जो कि इस सेक्टर के समग्र मूल्यांकन का 85 प्रतिशत है। हालांकि, रेगुलेशन और टैक्सेशन से जुड़ी चुनौतियां बनी हुई हैं। यूएसआईएसपीएफ और टीएमटी लॉ प्रैक्टिस की रिपोर्ट के अनुसार, भारत अपने हाई टैक्स रेट के लिए जाना जाता है। ऑनलाइन गेमिंग के लिए प्लेयर्स को अपनी कुल जमा पर सभी फॉर्मेट के लिए 28 प्रतिशत की दर से जीएसटी चुकाना होता है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि संयुक्त राष्ट्र केंद्रीय उत्पाद वर्गीकरण (यूएन सीपीसी) गेमिंग को ऑनलाइन जुए से अलग परिभाषित करता है। अघी ने कहा, 600 मिलियन से ज्यादा गेमर्स के साथ इस सेक्टर का तेजी से मुद्रीकरण किया जा रहा है। यह निर्यात के लिए अवसर पेश करता है।

हालांकि, भारतीय कंपनियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए, हमें प्रगतिशील टैक्स और रेगुलेटरी नीतियों के साथ समान अवसर की आवश्यकता है, जो अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो। रिपोर्ट में 12 प्रमुख गेमिंग बाजारों में रेगुलेटरी फ्रेमवर्क और टैक्सेशन पॉलिसी पर नजर डाली गई। इसमें पता चला कि सभी 12 देशों में गेम्स ऑफ चांस को लेकर अलग कानूनी परिभाषा है। इस परिभाषा के साथ स्किल गेमिंग फॉर्मेट को लेकर अंतर स्पष्ट होता है। टीएमटी लॉ प्रैक्टिस के पार्टनर अभिषेक मल्होत्रा ने कहा, वैश्विक बाजारों में अपनाई गई व्यवस्थाओं के समान अधिक सूक्ष्म रेगुलेशन और टैक्सेशन व्यवस्था न केवल स्पष्टता प्रदान करेगी, बल्कि ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर में विकास को भी बढ़ावा देगी।

लैक्मे फैशन वीक में मिस वर्ल्ड मानुषी छिल्लर ने बटोरीं सुर्खियां

मिस वर्ल्ड मानुषी छिल्लर ने फैशन उद्योग में धूम मचा दी है, हाल ही में एक्ट्रेस ने प्रतिष्ठित लैक्मे फैशन शो में रैंप वॉक किया। वह डिजाइनर ऋषि और विभूति के लिए एक आकर्षक प्रेरणा बनी। मानुषी छिल्लर ऑलिव ग्रीन फुल लेंथ स्कर्ट के साथ मैचिंग ब्लाउज में बेहद खूबसूरत लग रही थीं। स्कर्ट में एक प्रभावशाली थाई स्लिट और हरे और गुलाबी रंगों में ध्यान देने योग्य फूलों डिजाइन थे। उसकी कलाइयों पर फूलों की सजावट ने नाटकीयता का स्पर्श जोड़ दिया! मानुषी छिल्लर ने अपने आत्मविश्वास भरे कदम और आकर्षण से दर्शकों को चकित कर दिया, और फैशन की दुनिया में एक मिसाल साबित हुई। जैसे ही वह रैंप पर उतरीं, उनकी अविस्मरणीय उपस्थिति ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। फैशन क्षेत्र से परे, ब्यूटी क्वीन अपनी आगामी थिएट्रीकल रिलीज के साथ दिल चुराने के लिए पूरी तरह तैयार है। मानुषी तेहरान के लिए तैयारी कर रही हैं, जिसमें वह जॉन अब्राहम के साथ स्क्रीन स्पेस साझा करती नजर आएंगी। हाल ही में, उन्होंने शहर में एक प्रतिष्ठित कार्यक्रम में ट्रेलब्लेज़िंग स्टार ऑफ द ईयर पुरस्कार का सम्मान प्राप्त करके अपनी उपलब्धियों में एक और उपलब्धि जोड़ ली। इस बीच, वह दिलचस्प परियोजनाओं की एक श्रृंखला के साथ दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए भी उत्सुक हैं, जिनकी घोषणा जल्द ही की जाएगी।

गजनी 2 का एलान करेंगे आमिर खान!

भारतीय सिनेमा के सबसे प्रतिष्ठित अभिनेताओं में से एक आमिर खान बॉक्स ऑफिस पर लगातार हिट फिल्में देने के लिए जाने जाते हैं। फिलहाल अभिनेता 2025 में रिलीज होने वाली अपनी आगामी फिल्म सितारे जमीन पर की तैयारी कर रहे हैं। इसके अलावा वह अपनी भविष्य की परियोजनाओं को मजबूत करने के लिए कई फिल्म निर्माताओं के साथ भी

बातचीत कर रहे हैं। इन चर्चाओं के बीच उनकी सबसे सफल फिल्मों में से एक गजनी की सीक्वल गजनी 2 को लेकर बड़ी जानकारी सामने आई है। रिपोर्ट जानकर मिस्टर परफेक्शनिस्ट के प्रशंसकों का खुश होना लाजमी है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, आमिर खान फिलहाल निर्माता अल्लू अरविंद के साथ गजनी को फ्रेंचाइजी में बदलने के बारे में चर्चा कर रहे हैं। जानकारी के अनुसार, उन्होंने अल्लू अरविंद, मधु मंटेना और पूरी टीम को गजनी 2 के लिए एक योग्य विषय के साथ आने के लिए कहा है। अगर यह तय हो जाता है तो वह भारतीय सिनेमा की पहली 100 करोड़ रुपये की फिल्म की सीक्वल बनाकर इतिहास रच सकते हैं।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है, टीम सक्रिय रूप से विचारों पर मंथन कर रही है और आमिर पहले ड्राफ्ट का इंतजार कर रहे हैं। आमिर खान वर्तमान में अपनी अगली फिल्म सितारे जमीन पर में व्यस्त हैं और 2025 में अपनी अगली फिल्म की घोषणा कर सकते हैं। कथित तौर पर सुपरस्टार एक सुपरहीरो फिल्म के लिए निर्देशक लोकेश कनगराज के साथ बातचीत कर रहे हैं।

मराठी एक्टर अतुल परचुरे का 57 साल की उम्र में निधन

दिग्गज अभिनेता अतुल परचुरे का 57 साल की उम्र में निधन हो गया। उन्होंने सोमवार को अंतिम सांस ली। वह लंबे समय से कैंसर की बीमारी से पीड़ित थे। अतुल एक मशहूर मराठी अभिनेता थे,

जिन्होंने कई हिंदी टीवी शो और फिल्मों में काम किया। वह कपिल शर्मा के कॉमेडी शो में भी नजर आ चुके हैं। अतुल ने एक टॉक शो में अपनी कैंसर की बीमारी का खुलासा किया था। उन्होंने बताया था कि डॉक्टरों को उनके लीवर में पांच सेमी का ट्यूमर मिला है। उन्होंने अपनी स्थिति की गंभीरता को व्यक्त करते हुए कहा था, मुझे बताया गया कि मेरे लीवर में लगभग पांच सेंटीमीटर लंबा ट्यूमर है और यह कैंसर है। हालांकि, कैंसर से पीड़ित होने के बाद अतुल परचुरे की सेहत काफी खराब हुई थी। उन्होंने बताया था, कैंसर के बाद मेरा पहला डायग्नोसिस गलत हो गया है, जिससे मेरा अग्न्याशय प्रभावित हुआ और कई मुश्किलें पैदा हो गईं। गलत उपचार ने वास्तव में मेरी स्थिति को और बिगाड़ दिया।

आराध्या मेरी दुनिया हैंः ऐश्वर्या राय

के लिए ऐसा सोचती हैं ऐश्वर्या राय, बोलीं- वो अभिनेत्री ऐश्वर्या राय बच्चन को अक्सर उनकी बेटी आराध्या बच्चन के साथ स्पॉट किया जाता है। ऐश्वर्या अपनी बेटी के बेहद करीब हैं। ऐश्वर्या इन सभी जगहों पर लगभग हमेशा अपनी बेटी के साथ दिखाई पड़ती हैं। दोनों एक साथ एक दूसरे का हाथ पकड़े चलती नजर आती हैं। ऐश्वर्या अपनी बेटी को अपनी दुनिया मानती हैं। अपनी बेटी आराध्या को लेकर ऐश्वर्या ने कहा कि वह अपनी बेटी को लेकर काफी ज्यादा सोचती हैं। ऐश्वर्या ने कहा, आराध्या ही मेरे लिए सब कुछ हैं। वो ठीक हैं, तो मैं ठीक हूं। ये दुनिया खुशियों से भरी है। वह मेरी दुनिया है और मैं इससे काफी खुश रहती हूं। खुश होते हुए ऐश्वर्या ने कहा, आराध्या, आराध्या, आराध्या। हाल ही में ऐश्वर्या राय बच्चन और आराध्या दुबई के अवॉर्ड शो 2024 में नजर आईं थीं। ऐश्वर्या राय बच्चन ने इस अवॉर्ड शो में मणिरत्नम की फिल्म पोन्नियिन सेलवन में अपनी भूमिका के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार जीता। अवॉर्ड फंक्शन के दौरान भी आराध्या काफी चर्चा में रही थीं। उन्होंने शिव राज कुमार के पैर छूकर आशीर्वाद लिया था, ये वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इसके बाद प्रशंसकों ने आराध्या के संस्कारों और परवरिश की तारीफ की। एक बातचीत के दौरान मीडिया से बातचीत के दौरान ऐश्वर्या से जब कहा गया कि वह सबसे अच्छी बातें सीख रही हैं, क्योंकि वो हमेशा आपके साथ रहती हैं। ऐश्वर्या ने इस सवाल का जवाब देते हुए कहा, वो मेरी बेटी है, मेरे साथ ही रहेगी। बता दें कि ऐश्वर्या इस अवॉर्ड शो में अपनी बेटी के साथ पहुंची थीं।

रितेश देशमुख हैं 2024 के सबसे खूबसूरत शाकाहारी सेलिब्रिटी, पेटा इंडिया द्वारा पुरस्कार

उनकी दयालु जीवनशैली और टिकाऊ जीवनशैली को बढ़ावा देने के प्रयासों के लिए, बॉलीवुड अभिनेता रितेश देशमुख को पीपुल्स फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स (पेटा) इंडिया द्वारा 2024 का सबसे खूबसूरत शाकाहारी सेलिब्रिटी नामित किया गया है। स्क्रीन पर अपनी करिश्माई उपस्थिति के लिए जाने जाने वाले, रितेश ने जानवरों और नैतिक विकल्पों के लिए अपनी वकालत के माध्यम से ऑफ-स्क्रीन भी उतनी ही धूम मचाई है।

पौधों पर आधारित जीवन शैली का पालन करने वाले देशमुख, जो पौधों पर आधारित जीवन शैली के एक उत्साही समर्थक हैं, ने अपनी पत्नी और अभिनेत्री जेनेलिया देशमुख के साथ इमेजिन मीट्स की सह-स्थापना की। कंपनी ने अपने स्वादिष्ट पौधों पर आधारित विकल्पों के लिए व्यापक ध्यान आकर्षित किया है, जो क्रूरता-मुक्त भोजन को बढ़ावा देने के विकल्प प्रदान करता है। ब्रांड के शाकाहारी चिकन नगेट्स को पहले पेटा इंडिया के सर्वश्रेष्ठ शाकाहारी मांस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, जिससे दयालु भोजन की दुनिया में इसकी प्रतिष्ठा मजबूत हुई। पशु कल्याण और पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के बारे में बोलते हुए, देशमुख ने कहा, क्रूरता मुक्त जीवनशैली जीना न केवल जानवरों की मदद करने के बारे में है, बल्कि हमारे ग्रह की रक्षा करने के बारे में भी है। प्रत्येक पौधे-आधारित भोजन के साथ, हम एक सकारात्मक प्रभाव डालते हैं, और यह कुछ ऐसा है जिसमें हम सभी योगदान कर सकते हैं।

मैं पेटा द्वारा न केवल हमारे पर्यावरण के लिए क्रूरता-मुक्त जीवन के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए बल्कि एक बेहतर इंसान बनने के लिए हमारे मन में करुणा पैदा करने के प्रयास की सराहना करने के लिए भी समय निकाल रहा हूं। अपने पाककला उद्यमों के अलावा, रितेश स्थायी जीवन और जानवरों के प्रति करुणा के लाभों को बढ़ावा देने के लिए अपने मंच का उपयोग करते हैं। अपने सोशल मीडिया और साक्षात्कारों के माध्यम से, वह लाखों लोगों को शाकाहारी विकल्प अपनाने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। देशमुख के प्रयास सिर्फ आहार के बारे में नहीं हैं; वे पशु कल्याण पर दृष्टिकोण को नया आकार देने और पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कम करने के बारे में भी हैं। पेटा इंडिया में सेलिब्रिटी और जनसंपर्क के उपाध्यक्ष सचिन बंगेरा ने कहा, फिल्मों में अपने काम से लेकर पशु अधिकारों की वकालत तक, रितेश देशमुख ने लगातार खुद को एक दयालु सुपरस्टार साबित किया है।

परम सुंदरी में नजर आएगी सिद्धार्थ-जान्हवी कपूर की जोड़ी

मैडॉक फिल्म्स के निर्माता दिनेश विजन ने कथित तौर पर एक फिल्म के लिए सिद्धार्थ मल्होत्रा और जान्हवी कपूर को अपने साथ जोड़ा है। उनका इरादा फिल्म निर्माता तुषार जलोटा को फिल्म के निर्देशक के रूप में लेकर एक गंभीर थ्रिलर बनाने का था। नवीनतम विकास यह है कि विजान ने स्पष्ट रूप से नए बदलाव किए हैं और एक नई फिल्म की स्थापना की है। उसी निर्देशक और स्टारकास्ट के साथ एक नई रोमांटिक कॉमेडी फिल्म बनाई जाएगी। सिद्धार्थ और जान्हवी की फिल्म का अस्थायी नाम परम सुंदरी रखा गया है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, तुषार जलोटा मैडॉक फिल्म्स के तहत सिद्धार्थ और जान्हवी की फिल्म का निर्देशन करेंगे। विजान द्वारा एक नई फिल्म के साथ आगे बढ़ने का मुख्य कारण यह था कि उन्हें और सिद्धार्थ को एहसास हुआ कि स्क्रिप्ट में बॉक्स ऑफिस पर सीमित संभावनाएं थीं। उनका मानना है कि दर्शक अब सिनेमाघरों के बजाय ओटीटी पर थ्रिलर कंटेंट देखना पसंद करते हैं। जानकारी के अनुसार, उन्होंने पारस्परिक रूप से फिल्म के पहले विचार को रद्द करने का फैसला किया और तुषार के साथ अन्य कहानी के विचारों की खोज शुरू कर दी।

कई योजनाओं पर विचार करने के बाद, उन्होंने एक रोमांटिक कॉमेडी पर विचार किया, जो जान्हवी को भी पसंद आई और वे तुरंत इसमें शामिल हो गईं। यह एक नई स्क्रिप्ट के साथ वही टीम है। हालांकि, इन रिपोर्ट्स की अभी तक आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है। परम सुंदरी के बारे में अभी तक ज्यादा जानकारी नहीं है। हालांकि, फिल्म पारिवारिक-केंद्रित रोमांटिक-कॉमेडी के दायरे में आ सकती है। इसमें सिद्धार्थ और जान्हवी शानदार केमिस्ट्री दिखाएंगे। जबकि फिल्म अभी प्री-प्रोडक्शन में है, यह नवंबर या दिसंबर में फ्लोर पर जाएगी। इस बीच, काम के मोर्चे पर, सिद्धार्थ को आखिरी बार दिशा पाटनी और राशि खन्ना के साथ योद्धा में देखा गया था। अभिनेता की फिल्म इस साल की शुरुआत में सिल्वर स्क्रीन पर आई थी। उन्होंने रोहित शेट्टी की वेब सीरीज इंडियन पुलिस फोर्स में भी अभिनय किया। दूसरी ओर, जान्हवी कपूर ने हाल ही में जूनियर एनटीआर के साथ देवरा पार्ट वन में अभिनय किया।

अब मुझे लग रहा है कि मैं सच में अपनी हैसियत से बाहर आ गया: भुवन बाम

सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म और यूट्यूबर पर अपने अलग-अलग किरदारों के दम पर युवाओं के बीच पहचान बनाने वाले भुवन बाम इन दिनों अपनी वेब सीरीज़ ताजा खबर को लेकर चर्चा में हैं। पिछले दिनों हमारे पाठकों से मिलने आए भुवन बाम ने हमसे बातचीत की-

● आप बीबी की वाइंस में सारे किरदार और बाकी काम खुद ही करते थे। लेकिन जब आपने ओटीटी पर ऐक्टिंग शुरू की तो आपको डायरेक्ट किसी और ने किया। वह अनुभव कैसा था?

वह मेरे लिए बहुत नया और अच्छा अनुभव था क्योंकि अभी तक तो मैं चारदीवारी में ही शूट करता था। मगर सेट पर तो 200 लोगों का क्रू मौजूद था। ऐसे में हाथ-पांव कांपने लगते हैं। शुरू के 10 दिन तो बिल्कुल मैं डर-डर कर ही उठता था कि आज किसके साथ शूट करना है। एक दिन मैं उठा तो मैंने पूछा कि आज रात का शूट है तो किसके साथ है! तो मुझे बताया गया कि महेश मांजरेकर सर के साथ है। तब मैंने कहा कि कौन-सा डायलॉग बोलना है, बता दो पहले ही।

इतने लंबे-लंबे डायलॉग थे। मैंने सोचा कैसे होगा ये। लेकिन जब आपके पास सपोर्टिव लोग हों तो मुश्किल से मुश्किल चीज आसानी से हो जाती है। और सबसे मजे की बात ये है जो मैं गर्व से कहता हूं कि पूरे सेट पर उम्र में सबसे छोटा और काम में सबसे कम तजुर्बे वाला मैं ही था। इस बात पर मुझे गर्व है और सबसे ज्यादा मुझे सीखने को मिला।

● दिल्ली में आपने काफी वक्त बिताया है। यहां रहने का अनुभव कैसा रहा?

दिल्ली में तो हर दिन एक एक्सपीरियंस ही है। मेरे साथ एक बहुत ही अच्छा और प्यारा किस्सा यहां हुआ है। एक इवेंट था, लोगों को पता नहीं था कि मैं वहां हूं लेकिन मेरा वहां परफॉर्मेंस था। वहां मेरा लास्ट एक्ट था। तो जब ऐक्ट खत्म हुआ तो सब मेरे साथ फोटो लेने लगे। एक अंकल जी भी मेरे साथ फोटो ले रहे थे। मैंने उनसे पूछा, आपको पता है कि मैं क्या करता हूं। तो वह कहने लगे कि नहीं, लेकिन आपके साथ फोटो खींचकर फेसबुक पर डालूंगा तो कोई ना कोई बता ही देगा कि आप क्या करते हो और कौन हो।

तब मैंने कहा वाह जीनियस हो आप। उन्होंने बड़े स्मार्ट तरीके से जवाब दिया। मैं उस टाइम खूब हंसा। ऐसे बहुत से किस्से दिल्ली में होते रहते हैं।

● आप ओटीटी के बाद क्या बड़े पर्दे की तरफ भी देख रहे हैं? क्या फिल्मों में भी आने का आपका प्लान है?

(हंसते हुए) आपने बोल दिया है तो अब हो ही जाएगा। ये वरदान है मेरे लिए। पर सपना है, जैसे हर एक बच्चे को जिसे सिनेमा और ऐक्टिंग से प्यार है, उसका ये सपना होता है कि मैं भी खुद को एक बड़े पर्दे पर देखूं। वह मेरा भी सपना है और रहेगा। उसी की तरफ सारी एनर्जी लगी हुई है। ऐसा नहीं है कि मुझे बहुत जल्दबाजी है कि मुझे ये चाहिए ही चाहिए। मुझे चाहिए जरूर लेकिन सब्र से चाहिए।

मैं ऐसा नहीं सोच रहा कि ये अभी चाहिए। मैं झपट्टा मारने की नहीं सोच रहा। मैं धीरे-धीरे एक रास्ता बना रहा हूं। उस रास्ते पर मुझे सिखाने वाले जावेद जाफरी सर हैं, मनोज मांजरेकर सर हैं, श्रिया पिलगांवकर हैं। धीरे-धीरे अपने दोस्तों और परिवार वालों, सबसे सीखकर मैं कभी ना कभी तो बड़े पर्दे पर आ ही जाऊंगा।

● आप अपनी इस वेब सीरीज़ के दूसरे पार्ट के प्रड्यूसर भी हैं। इसके बारे में हमें बताएं।

हमने एक कोशिश की है। जिस तरह लोगों का प्यार मिला, उससे हमने कोशिश की है कि सीजन 2 उससे भी बेहतर बनाएं। शो में एक टैग लाइन है कि किधर जा रहे हैं हम लोग। औकात के बाहर।

मेरे लिए तो हैसियत के बाहर जाने का मतलब ये है कि मैं सीजन 2 बना पाया। दूसरी बात, जिस इंसान (जावेद जाफरी) को मैं देख-देख कर बड़ा हुआ हूं, जो मेरा सबसे बड़ा आइकन है, वह आज मेरे साथ तो है ही, साथ ही उन्होंने सीजन 2 में काम करने के लिए भी हां कर दिया, वह मेरे लिए बड़ी बात है। अब मुझे लग रहा है कि मैं सच में अपनी हैसियत से बाहर आ गया हूं।

-साभार एजेंसी